# हिरोशिमा

अणु बम से नष्ट हिरोशिमा के अवशिष्ट
नागरिकों की करुण गाथा

लेखक
जान हरसी

विक्रेता प्रकाशन संघ
दरीबा कलाँ, दिल्ली–६

प्रकाशक
सुधीर प्रकाशन, दिल्ली-६

★

अनुवादक
अशोक मिश्र

★

प्रथमावृत्ति
११००

★

२)५०
ढाई रुपया

★

मुद्रक
सुरेश प्रिन्टिंग एजेन्सी द्वारा
श्री देशभूषण प्रेस,
दिल्ली-६

# हिरोशिमा

★★★

सवेरे ठीक सवा आठ बजे थे जिस समय एक टीन कंपनी की क्लर्क कुमारी टोशिको ससकी एक लड़की से बात कर रही थी। लड़की ने अभी अपना काम शुरू ही किया था। उसी समय डाक्टर मस्काज़ू फ़ूजी अपने पोर्च में बैठे ओसाका का असाई अखबार पढ़ रहे थे। उनका अस्पताल हिरोशिमा में बहने वाली सात नदियों में से एक पर था। एक दर्जी की पत्नी श्रीमती हसुयो नकामुरा अपनी खिड़की में खड़ी सामने वाले पड़ौसी को अपने मकान का एक हिस्सा गिराते हुए देख रही थी जो हवाई हमलों से बचाव के लिए पानी लाने वाली पाइप लाइन के रास्ते में बाधा बनता था। एक जर्मन पादरी अपने मिशन की तिमंजिली इमारत के एक कमरे में एक धार्मिक पत्रिका का अध्ययन कर रहे थे। रैड-क्रास अस्पताल के एक सदस्य डाक्टर तेरुफ़ूमी ससकी अपने हाथ में खून का नमूना लिये जा रहे थे। हिरोशिमा के रेव-रैंड कियोशी एक उन अमीर सज्जन के घर के आगे खड़े थे जो बी—२९ विमानों के डर से शहर छोड़ने की तैयारी कर रहे थे।

यह थे कुछ लोग जो हिरोशिमा पर एटम-बम के प्रहार के बावजूद बच पाए। इन लोगों के जीवन बचने के नाटक में एक-एक क्षण का महत्त्व था। वक्त पर एक कदम उठाना

बजाय बाहर के भीतर जाना, दूसरी मोटर की बजाय पहली ही मोटर से चले जाना, ये चीजें थीं जो जीवनदायक सिद्ध हुईं।

इन लोगों को अभी भी आश्चर्य है कि उस विस्फोट में, जिसमें लगभग एक लाख व्यक्ति मारे गये, ये लोग किस प्रकार बच गए जबकि उनके सामने इतने लोग मर गये, जिसकी उन्होंने कभी कल्पना तक भी न की थी। ऐसे लगता था कि इस समय उन्होंने दर्जनों बार जीवन पाया और इतनी अधिक मौतें देखीं, जिनका ख्याल कभी आ ही नहीं सकता था। उस समय उनको कुछ भी पता नहीं था।

उस दिन रेवरैंड टानीमोटो सुबह पांच बजे उठ गये थे। वे घर में अकेले ही थे क्योंकि उनकी पत्नी व पुत्री उपनगर में एक रिश्तेदार के यहां गई हुई थीं। इस उपनगर का नाम यूशिदा था और यह हिरोशिमा के उत्तर में स्थित था। समस्त जापान में केवल क्योटो और हिरोशिमा ही शेष बचे थे जिन पर अमरीकी बी—२६ विमानों ने आक्रमण नहीं किया था। जापानी इन बम-वर्षकों को बी-सान या मिस्टर-बी के नाम से पुकारते थे और अन्य लोगों के समान श्री टानीमोटो भी इनसे चिन्तित रहा करते थे। उन्होंने क्रूर, इवाकुनी, टोकुयामा और अन्य नगरों पर इन बमवर्षकों के भीषण हमलों के बारे में सुन रखा था और यह साफ था कि हिरोशिमा की बारी भी शीघ्र ही आने वाली है। उस दिन वह ठीक तरह सो भी न पाए थे क्योंकि रात को कई बार हवाई

हमलों की चेतावनी देने वाला भोंपू बजा था।

वैसे तो कई सप्ताह से रात को हवाई हमले का भोंपू बजा करता था, क्योंकि उन दिनों हिरोशिमा से कुछ दूर उत्तर पूर्व में बी–२९ बमवर्षक लेक बोवा को लक्ष्य बनाकर आक्रमण कर रहे थे और शहर पर किसी भी क्षण हमला होने की सम्भावना थी। नित्य की चेतावनी और मिस्टर-बी (बी–२९ बमवर्षक विमान) की अनुपस्थिति से लोगों में यह अफवाह फैली हुई थी कि अमरीकन हिरोशिमा के लिये कोई खास वस्तु रख रहे हैं।

श्री टानीमोटो एक ठिगने कद के आदमी थे। वे बातें करने, हँसने या चिल्लाने में काफी जल्दी किया करते थे। लेकिन इस सबके बावजूद वे एक विचारशील व्यक्ति थे। उनके चेहरे पर बचपना होते हुए भी प्रौढ़ता और कमज़ोर होने पर भी शक्ति झलकती थी। यद्यपि उनकी पत्नी बाहर थीं, फिर भी वे दूसरी जगह जाने की तैयारी कर रहे थे, जो नगर के केन्द्र से दो मील दूर थी। जिस मकान में वे जा रहे थे वह एक सिल्क-निर्माता का था और उसने उनको सामान बंधवाने में मदद दी थी। इस कार्य में मतुसो नामक एक और सज्जन ने भी उनको मदद दी थी। श्री टानीमोटो ने इसके बदले में उनकी लड़की को सामान बांधने में मदद देने का वायदा किया था। यही कारण था कि वे इतनी जल्दी उठ गये थे।

उन्होंने अपना नाश्ता बनाया। सामान बांधने, निद्रा-

विहीन रात्रि, अनियमित भोजन और सप्ताहों की चिन्ता से वे काफी थक गए थे। आज का काम उन्हें भारी लग रहा था। इसके अतिरिक्त एक बात और थी। उन्होंने अमरीका के जार्जिया प्रान्त के अटलांटा नगर के इमोरी कालेज से ग्रेजुएट किया था। वे अच्छी अंग्रेजी बोलते, अमरीकनों जैसे वस्त्र पहनते और अपने कई अमरीकन मित्रों से पत्र-व्यवहार किया करते थे। इन सबसे वे सन्देहास्पद व्यक्तियों की श्रेणी में थे और उन पर गुप्तचर लगे थे। इस सबसे वे काफी परेशान रहा करते थे। पुलिस ने भी कई बार उनसे पूछ-ताछ की थी। इसके अतिरिक्त उन्होंने यह भी सुना था कि एक जहाजी कम्पनी के रिटायर्ड अधिकारी श्री टनाका यह कहते फिरते थे कि श्री टानीमोटो पर विश्वास नहीं किया जाना चाहिये। इस खबर से उनको बड़ा दुःख हुआ, पर अपने को एक अच्छा जापानी सिद्ध करने के लिए पड़ौसी संघ के प्रधान का पद ले लिया था और उस समय वे लग-भग २० परिवारों को हवाई हमले से बचाने की व्यवस्था कर रहे थे।

प्रातः ६ बजे से पहले ही वह श्री मतुसो के घर को रवाना हो गये। वहां उन्होंने जापानी ढंग का बड़ा-सा बक्सा पाया जिसमें कपड़े इत्यादि भरने थे। जाते ही वह और श्री मतुसो काम पर जुट गए।

आकाश साफ और प्रातः सुहाना था और ऐसा लगता था कि आज का दिन आराम से बीतेगा। काम करते २०

अभी कुछ ही देर हुई थी कि खतरे का भोंपू बज उठा। लगभग एक मिनट तक भोंपू बजा और उसने विमानों के आने की सूचना दी। परन्तु यह छोटा खतरा था क्योंकि प्राय: रोज ही इस समय मौसम की जानकारी लेने वाला एक अमरीकन विमान आया करता था। दोनों व्यक्तियों ने सामान ठेले में रखा और उसे खींचते हुये चले।

हिरोशिमा एक पंखेनुमा शहर है। यह अधिकतर ६ द्वीपों पर बसा हुआ है जो ओटा नदी के समुद्र में मिलने के पास डेल्टा के रूप में फूट निकली है। नगर का मध्य भाग लगभग चार वर्गमील लम्बा चौड़ा था और इसमें नगर की तीन-चौथाई आबादी रहती थी। निवास-गृह और व्यापारिक संस्थान भी यहां थे। युद्धकाल में यहां के तीन लाख अस्सी हजार व्यक्तियों में से एक लाख पैंतीस हजार लोग इस नगर से जा चुके थे। इस प्रकार लगभग दो लाख पैंतालीस हजार लोग इस स्थल में शेष थे।

फैक्टरियां व उपनगर इत्यादि नगर के किनारों पर थे। दक्षिण की ओर बन्दरगाह व हवाई अड्डा था। डेल्टा के तीन तरफ पहाड़ियों की कतार थी। श्री टानीमोटो और मतुसो ने बाजार का रास्ता पकड़ा जो दो नदियों को पार करता हुआ सीधा 'कोइ' को उतरता चला जाता था। जब वे नीचे घाटी की ओर जा रहे थे तब उन्हें "सब" साफ की सूचना मिली।

ठेले को सिल्क वाले के घर तक खींचते-खींचते वह बहुत

थक गये थे । वहां उन्होंने सामान को सीढ़ियों और गलियारे में रख दिया और फिर सुस्ताने लगे । उनके सामने मकान का एक कोना था और उसके पीछे शहर था । जापान के अन्य मकानों की तरह यह मकान भी लकड़ियों और गत्तों की दीवारों का बना हुआ था जिस पर हल्की छत थी । मुख्य द्वार के दाईं ओर एक सुन्दर बाग था । उस समय हवाई जहाजों की कोई आवाज नहीं आ रही थी । मौसम साफ ठण्डा और सुहावना था ।

तभी एक भीषण प्रकाश आकाश में कौंध गया । श्री टानीमोटो को इतनी ही-सी क्षीण स्मृति है कि प्रकाश पूर्व से पश्चिम और नगर से पहाड़ियों की ओर गया । इस पर वह और श्री मतुसो एक दम से कांप उठे और भागे । श्री मतुसो तेजी से मकान के भीतर भागे और बिस्तर में घुस गये । श्री टानीमोटो तीन-चार कदम भाग कर बाग में पड़े दो बड़े-बड़े पत्थरों के बीच में घुस गये और उनमें से एक के साथ चिपक-से गये । चूंकि उनका चेहरा पत्थर की ओर था अतः वे यह न देख सके कि ऊपर क्या हो रहा है । अचानक उन्होंने ऊपर दबाव महसूस किया और उसके साथ ही मकान का मलवा उन पर गिरा । उन्होंने किसी प्रकार का शोर नहीं सुना ।

लगभग सारे हिरोशिमा में किसी ने आवाज सुनने की बात नहीं बतलाई । लेकिन इनलैंड सी के पास त्सुजू के एक मछुए ने, जिसके साथ श्री टानीमोटो की सास व साली थी,

बताया कि उसने चमक देखी और भयंकर विस्फोट की ध्वनि सुना। यद्यपि वह हिरोशिमा से बीस मील दूर था फिर भी उसका कहना है कि विस्फोट की ध्वनि वहां से ५ मील दूर पर हुये बी-२९ विमानों के भीषणतम हमले से भी तीव्र थी।

आखिरकार किसी प्रकार साहस करके श्री टानीमोटो ने अपना सिर ऊपर उठाया तो देखा कि सिल्क वाले का मकान गिर चुका था। उन्होंने सोचा कि शायद कोई बम सीधा यहीं पर गिर गया है। वहां धूल का एक बादल-सा छाया हुआ था और चारों ओर धुंधलापन था। बगैर एक मिनट की देर किये वे सड़क की ओर भागे। उस समय उन्होंने इस बात को भी नहीं सोचा कि श्री मतुसो मलबे में दबे पड़े होंगे। भागते समय उन्होंने देखा कि मकान की चहारदीवारी भी भूमिसात हो चुकी थी। वह गिरी भी मकान की ही तरफ थी।

सड़क पर आते ही उन्होंने सामने की पहाड़ी से सैनिकों के एक दल को आते देखा। यह लोग पहाड़ी पर खाइयां खोद रहे थे जिससे शत्रु का मुकाबला किया जा सके। वे लोग उन खाइयों से आ रहे थे जिनमें कभी वे सुरक्षित रहते पर इस समय उनके सर, सीने और बांहों से खून बह रहा था। वे चुप और स्तम्भित थे।

धीरे-धीरे दिन काला होता गया। लगता था जैसे आकाश में बहुत सारी धूल भर गई हो।

× × ×

जिस दिन बम गिरा उसके एक दिन पहले शहर के रेडियो ने घोषणा की थी कि लगभग २०० विमान दक्षिणी होनशू पहुँच रहे हैं। इसके साथ ही जनता को सलाह दी गई थी कि वह निर्देशित सुरक्षित स्थानों में चली जाय। एक विधवा दर्जिन श्रीमती हतसुयो नकामुरा की यह आदत थी कि उन्हें जो कुछ बताया जाता, वे करती थीं। वे नोबीरो-चो में रहती थीं। उन्होंने अपने तीनों बच्चों को उठाया और उनको साथ लेकर नगर के उत्तर-पूर्वी किनारे पर चली गईं। यह सैनिक क्षेत्र था और ईस्ट परेड ग्राऊंड के नाम से मशहूर था। तीनों बच्चों में सबसे बड़ा लड़का तोशिको था, जो दस वर्ष का था। उससे छोटी दो बहनें याइको और मयेको थीं जिनकी आयु क्रमशः आठ व पांच वर्ष थी।

ग्राउंड में पहुंचकर उन्होंने चटाई बिछाई और सब सो गये। लगभग दो बजे रात को हवाई जहाजों के शोर से उनकी नींद खुल गई। उस समय वे ऊपर से जा रहे थे। हवाई जहाजों के जाते ही वह अपने बच्चों सहित घर की ओर रवाना हो गईं और जिस समय वे घर पहुँचीं तब रात के ढाई बज रहे थे। लेकिन जब उन्होंने रेडियो खोला तो उनकी निराशा की सीमा न रही क्योंकि वह फिर से आक्रमण की चेतावनी दे रहा था।

उन्होंने अपने बच्चों के उदास चेहरों की ओर देखा जो थकान से चूर थे। इसके साथ ही उन्हें पिछले सप्ताहों को

याद आई कि पिछले कई सप्ताहों से वे रात को जरा-सी चेतावनी मिलने पर भी सुरक्षित स्थानों को जाती रहीं। पर वे सब व्यर्थ हुए और एक बार भी आक्रमण नहीं हुआ। आखिर रेडियो की चेतावनी के बाद भी उन्होंने घर में ही रहने का निश्चय किया, इस समय उनमें दोबारा ईस्ट परेड ग्राउंड जाने की शक्ति न थी। उन्होंने बच्चों को बिस्तरों पर लिटा दिया और खुद भी तीन बजे के करीब लेट गई। लेटने के बाद तुरन्त ही उनको इतनी गहरी नींद आ गई कि जब कुछ देर बाद विमान शहर पर से गुजरे, तब भी उनकी नींद नहीं टूटी।

सबेरे सात बजे के करीब वे भोंपू की आवाज से जाग गई। उठते ही उन्होंने कपड़े पहने और पड़ोसी संघ के प्रधान श्री नकामोटो के पास यह पूछने गई कि उन्हें क्या करना चाहिये। उन्होंने सलाह दी कि जब तक भोंपू कोई गम्भीर सूचना न दे, अर्थात् रुक-रुक कर बजे, तब तक उन्हें घर में ही रहना चाहिये।

घर लौटकर उन्होंने स्टोव चलाया और चावल चढ़ा दिये। फिर वे सुबह का अखबार पढ़ने लगीं। आठ बजे के करीब भोंपू ने "सब ठीक" की सूचना दी। भोंपू की सूचना से उन्होंने कुछ शान्ति-सी महसूस की। इस समय तक बच्चों के कुनमुनाने की आवाज भी आने लगी थी। रात को चलने के कारण वे बहुत थक गये थे, पर इस समय उन्हें भूख लग आई थी। उन्होंने उन्हें मिठाई दी और अपने बिस्तरों में

ही पड़े रहने को कहा। उन्होंने सोचा था कि बच्चे फिर से सो जाएंगे पर तभी दायें हाथ को सामने बने मकान वाले के घर से शोर आना शुरू हो गया। वह अपने मकान के हिस्से को तोड़ रहा था, इसी से खोदने, चोटें मारने और ठोकने की आवाजें आ रही थीं।

सरकार ने लोगों को इस बात का विश्वास दिला दिया था कि हिरोशिमा पर शीघ्र ही आक्रमण किया जाएगा। इसके साथ ही वह इस बात पर जोर दे रही थी कि आग बुझाने की लाइनों को चौड़ा किया जाए। इससे उनका सम्बन्ध नदियों से जुड़ जाता और हमले के समय लग गई आग को बुझाने में सुविधा होती। सामने वाले पड़ौसी ने इस कार्य में सुविधा देने के लिये अपने मकान का एक भाग तोड़ना शुरू कर दिया था, क्योंकि उससे फायर लाइन में बाधा आती थी। एक दिन पहले सरकार ने सेकेंडरी स्कूलों की कुछ लड़कियों को इस कार्य में सहायता देने के लिये कहा था और यही कारण था कि "सब ठीक" की घोषणा के बाद काम शुरू हो गया था।

श्रीमती नकामुरा ने चौके में जाकर चावलों को देखा और फिर वे उस पड़ौसी की ओर देखने लगीं। पहले तो उन्हें उस व्यक्ति पर कुछ खीझ-सी हुई थी कि वह इतना शोर मचा रहा है पर बाद में वे उसके प्रति द्रवीभूत हो उठीं। जो लोक-कल्याण के लिये अपने मकान को स्वयं ही तोड़ रहा था। जिन तख्तों को एक-एक करके किसी समय

उसने लगाया था, उन्हीं को अपने हाथों से उखाड़ रहा था। न जाने क्यों वे काफी बेचैनी महसूस करने लगीं।

उनके पति मयेको के जन्म के कुछ समय बाद सेना में चले गये और काफो दिनों तक उनकी कोई सूचना नहीं मिली। आखिर ५ मार्च १९४२ को उन्हें एक तार मिला जिसमें केवल इतना लिखा था, "इसावा सिंगापुर में वीरता-पूर्ण मृत्यु को प्राप्त हुये।" बाद में उन्हें पता चला कि इसावा १५ फरवरी को मारे गये जिस दिन सिंगापुर का पतन हुआ था। जब वे मरे तब कारपोरल थे। इसावा कोई अच्छी स्थिति का दर्जी नहीं था और सम्पत्ति के नाम पर उसके पास केवल एक कपड़े सीने की मशीन थी। उसकी मृत्यु के बाद श्रीमती नकामुरा ने स्वयं सीने का काम प्रारम्भ कर दिया और तभी से वह घर का खर्चा चला रही थीं।

जब वह सामने खड़े व्यक्ति की ओर देख रही थीं कि एकाएक हरेक वस्तु बहुत तेजी से चमक उठी। सब चीजें इतनी अधिक सफेद दिखाई दीं कि कहना मुश्किल है। उनको पता नहीं कि सामने खड़े व्यक्ति का क्या हुआ, पर वे एक दम घबराकर अपने बच्चों की ओर भागीं। अभी उन्होंने कदम उठाया ही था कि किसी चीज ने उन्हें उठा लिया और वे उड़ती हुई दूसरे कमरे में पहुँच गईं और सोने के ऊँचे स्थान के ऊपर मंडराने लगीं। पीछे-पीछे मकान के हिस्से भी उड़ते आये। उनका घर विस्फोट स्थल से लगभग १३५० गज (पौन मील) दूर था।

उनके नीचे गिरते ही, मलवा भी साथ-साथ गिरा, और वे उसमें दब गईं और चारों ओर मलवा फैल गया। उनको प्रत्येक वस्तु काली नजर आने लगी। मलवे से वे पूरी तरह से नहीं दबी थीं, इसलिये किसी प्रकार वे उससे निकलीं। तभी उन्होंने एक बच्चे को "मां बचाओ-मां बचाओ !" कहते चीखते हुए सुना और उन्हें अपनी सबसे छोटी लड़की पांचवर्षीय मयेको दिखाई दी जो छाती तक मलवे में दब गई थी। वह बिलकुल भी हिल-डुल न सकती थी। पागलों के समान जब वह अपने बच्चे को पकड़ने लपकीं, वह अपने दूसरे बच्चों के बारे में कुछ भी देख या सुन नहीं सकती थीं।

× × ×

बम गिरने के पहले के दिनों में डाक्टर मसाकजू फूजी बेफिकर आराम से सोते थे। चूंकि वह अच्छे खाते-पीते आदमी थे और काम भी विशेष नहीं था, इसलिये वह प्रायः नौ-साढ़े नौ बजे तक सोया करते थे। लेकिन बम गिरने वाले दिन सौभाग्यवश वह जल्दी उठ गये थे, क्योंकि उन्हें अपने एक मेहमान को गाड़ी पर छोड़ने जाना था। वे प्रातः छः बजे उठे और आधा घण्टा बाद अपने मित्र के साथ स्टेशन रवाना हो गये जो दो नदियों के पार था। सात बजे के लगभग जब वे घर वापस पहुँचे तो भोंपू खतरा न होने की सूचना दे रहा था।

घर पहुँचकर उन्होंने नाश्ता किया और फिर अपने पोर्च

में अखबार पढ़ने चले गये। दिन काफी गर्म था इसलिए उन्होंने उस समय केवल एक जांघिया पहन रखा था। न केवल यह पोर्च ही बल्कि उनकी सारी इमारत ही विशेष ढंग से बनी हुई थी। वह एक छोटे से अस्पताल के कर्ता-धर्ता थे। उनकी इमारत क्यो नदी के किनारे इसी नाम के पुल के पास थी। इसमें रोगियों और उनके सम्बन्धियों के रहने के लिये तीस कमरे थे। जापानी प्रथा के अनुसार रोगी के साथ उसकी सेवा-सुश्रूषा के लिये उनका कोई सम्बन्धी भी रहता है। वह उसके लिये खाना पकाता, उसे नहलाता, मालिश करता और खाली वक्त में अखबार इत्यादि पढ़कर सुनाता है। इससे रोगी का साहस बना रहता है और वह अपने को असहाय या एकाकी अनुभव नहीं करता।

डाक्टर फूजी के अस्पताल में रोगियों के लिये पलंग नहीं, चटाइयाँ थीं। उनके पास एक्स-रे मशीन, साज-सामान और शानदार प्रयोगशाला थी। इमारत का दो तिहाई भाग भूमि पर और शेष भाग लहराती क्यो नदी के ऊपर था। यह भाग नदी में लगाये गए मजबूत आधारों पर टिका था। इस भाग में ही डाक्टर फूजी रहते थे और वह अनूठा नजर आता था। यहां से सीधा नगर-केन्द्र का दृश्य दिखलाई पड़ता था। सामने ही नदी के विस्तीर्ण वक्ष पर नौकाएँ आती-जाती दिखलाई पड़तीं। गर्मियों में यह स्थान काफी शीतल रहता था। कभी-कभी जब बाढ़ आ जाती तो डाक्टर फूजी को चिन्ता हो जाती, पर मकान के आधार काफी

मजबूत थे।

डाक्टर फूजी पिछले एक माह से बेकार-से ही थे। इसका कारण यह था कि ज्यों-ज्यों जापान के एक के बाद एक नगरों पर बमवर्षा हो रही थी, यह बात निश्चित हो चली थी कि हिरोशिमा भी इससे नहीं बच सकेगा। इसलिये उन्होंने इस कारण से, कि अगर बमवर्षा से इमारत में आग लग गई तो वह रोगियों को नहीं निकाल पाएंगे, अपने रोगियों की संख्या धीरे-धीरे कम करना शुरू कर दी थी। इस समय उनके पास केवल दो रोगी ही थे। इनमें एक तो औरत थी जिसके बाजू में घाव था और दूसरा एक पच्चीस वर्षीय नवयुवक था। यह नवयुवक हिरोशिमा के पास इस्पात कारखाने में काम करता था। जिस समय वहां बमवर्षा हुई तो आग लग जाने से वह जल गया था। वह धीरे-धीरे ठीक हो रहा था। इसके अतिरिक्त छः नर्सें भी थीं।

उनकी पत्नी व बच्चे सुरक्षित स्थान पर थे। पत्नी व एक लड़का ओसाका के बाहर रह रहे थे और दूसरा लड़का व दो लड़कियां क्यूशू में गांव में थे। उनके साथ उस समय उनकी एक भतीजी, एक नौकरानी व एक नौकर था। काम की वैसे भी उन्हें चिन्ता नहीं थी क्योंकि उन्होंने काफी धन बचा रखा था। पचास वर्ष के होने पर भी वह इस समय तक काफी स्वस्थ थे। अक्सर शाम को दोस्तों के साथ गपशप करते हुए शराब की चुस्कियां लिया करते थे।

वे पोर्च में आकर बैठ गये और चश्मा लगाकर 'ओसाका

असाई' अखबार पढ़ने लगे। वे अभी ओसाका की खबरें देख ही रहे थे कि एक भीषण चमक दमक उठी। यद्यपि उस समय वे अखबार पढ़ रहे थे, पर उनको ऐसे लगा कि मानो एक अत्यन्त तीव्र प्रकाश पिलाई-सी लिये कौंध गया। उनका मकान विस्फोट स्थल से १५५० गज की दूरी पर था। इसी के साथ ही साथ क्षण भर में उनके उठते ही मकान भड़भड़ा कर नदी में गिर पड़ा। डाक्टर अभी उठ भी न पाए थे कि किसी चीज ने आगे-पीछे इधर-उधर फेंका। यह इतनी तीव्र गति से हुआ कि उन्हें किसी भी चीज का ध्यान न रहा। आखिरकार थोड़ी देर बाद उन्हें लगा कि वे पानी में हैं।

उन्होंने अभी सोचा भी नहीं था कि क्या वे मर रहे हैं, तभी उन्होंने अपने को दो लकड़ियों के बीच में भिचे हुए पाया। दोनों लकड़ियों ने अंग्रेजी अक्षर 'वी' के आकार में उनको इस प्रकार लटका कर कस सा लिया था कि वे हिल भी न सकते थे। लेकिन यह बात अत्यन्त आश्चर्यजनक थी कि उनका सिर पानी के बाहर था और बाकी शरीर पानी में। उनके चारों ओर अस्पताल के अवशेष फैले हुए थे। ऐसे लगता था जैसे किसी ने उन्हें तोड़-फोड़ कर बिखेर दिया हो। उनका चश्मा भी गायब हो गया था।

× × ×

जिस दिन बम गिरा उस दिन फादर विल्हम क्लीनसोर्ग को, जो सोसाइटी आफ जीसुस के सदस्य थे, तबियत ठीक

न थी। युद्धकाल का भोजन उनको माफिक नहीं आया था। इसके अतिरिक्त एक मानसिक बोझ भी वह अपने ऊपर अनुभव करते थे। वे एक जर्मन थे और जब से जर्मनी की पराजय हुई थी, कोई भी जर्मन सम्मान से न देखा जाता था। वे एक छोटे चेहरे और लम्बे कद वाले व्यक्ति थे और आयु लगभग अड़तीस वर्ष थी। पिछले दो दिन से उनकी तबियत ठीक नहीं थी और इसका दोष वे राशन की खराबी को देते थे। उनको दस्त लग रहे थे। उनके दो साथी, जो नोबोरी-चो मिशन में उनके साथ ही रह रहे थे, इससे बच गये थे।

बम गिरने वाले दिन वे सवेरे छः बजे ही उठ गये थे। बीमारी के कारण वह सुस्त थे। थोड़ी देर बाद वह गिरजे में प्रार्थना करने लगे। यह गिरजा भी अन्य जापानी गिरजों के समान लकड़ी का बना हुआ था जहां जापानी फर्श पर से ही प्रार्थना करते थे। इस दिन यानी सोमवार को केवल तीन-चार आदमी ही प्रार्थना करने आए। इनमें एक छात्र टाकेमोटो, पादरियों के निवास स्थान के सेक्रेटरी श्री फुकाई, मिशन की देखभाल करने वाली श्रीमती मुराटा और उनके साथी सन्त थे। जब वे प्रार्थना का धन्यवाद अंश पढ़ रहे थे, तभी खतरे का भोंपू बजा। उन्होंने प्रार्थना रोक दी और बाकी लोग सहन में से बड़ी इमारत में चले गये। फादर क्लीनसोर्ग दरवाजे के दाईं ओर जमीन के नीचे बने कमरे में चले गये और वहां उन्होंने फौजी वर्दी पहन ली। यह वर्दी उन्हें तब मिली थी जब वह कोबे में शिक्षक थे। अब वे उसे हवाई आक्रमणों के समय पहन लिया करते थे।

जब खतरे का भोंपू बजता था, तब वे हमेशा बाहर जाते थे और आकाश की ओर देखा करते थे। आज जब उन्होंने बाहर कदम रखकर आकाश की ओर देखा तो उन्हें यह देखकर प्रसन्नता हुई कि ऊपर केवल एक अमरीकी मौसम की जानकारी लेने वाला विमान था। यह विमान रोज इसी समय हिरोशिमा के ऊपर उड़ा करता था। उन्हें विश्वास हो गया कि कोई विशेष बात नहीं होगी अतः वह भीतर चले गये और बाकी लोगों के साथ नाश्ता किया। इसके बाद फादर शिफर अपने कमरे में जाकर कुछ लिखने लगे। फादर सीसलिक अपने कमरे में एक सीधी कुर्सी पर बैठकर अखबार पढ़ने लगे, फादर सुपीरियर ला-सैले अपने कमरे की खिड़की के पास खड़े होकर बाहर का दृश्य देखने लगे। फादर क्लीनसोर्ग तिमंजिले पर चले गये। वहां उन्होंने जांघिया छोड़कर शेष सब कपड़े उतार दिये और कुछ पढ़ने लगे।

फादर क्लीनसोर्ग को याद है कि जिस समय वह भयंकर प्रकाश हुआ उस समय वे पुस्तक में एक बच्चे के समान उत्सुकता से यह पढ़ रहे थे कि एक भयंकर उल्कापिंड भूमि से टकराया। उस समय वे विस्फोट-स्थल से १४४० गज की दूरी पर थे। उनके मन में एक ही विचार आया कि कोई बम सीधा ही हम पर गिरा है। फिर कुछ क्षणों के पश्चात् उनकी चेतना लुप्त हो गई।

उनको आज तक यह नहीं पता कि वे उस मकान से

किस प्रकार निकले। लेकिन उनको इतना अवश्य याद है कि जब उन्हें होश आया तब वे मिशन के सब्जी के बाग में भटक रहे थे। उन्होंने उस समय भी केवल एक जांघिया ही पहन रखा था। उनके बामांग पर थोड़ी-सी खरोंचें लग गई थीं जहां से खून टपक रहा था। मिशन को छोड़कर चारों ओर की इमारतें धराशायी हो चुकी थीं। इस इमारत को कुछ समय पूर्व एक साधु ने विशेष रूप से मजबूत कराया था। इसके बाद एक बार और मजबूत कराया था क्योंकि वह भूकम्पों से बहुत डरा करते थे। दिन काला पड़ गया था और उन्होंने मुराटा सान की आवाज सुनी जो जोर-जोर से चिल्लाकर कहती जा रही थी, "हे भगवान् हम पर दया करो!"

× ×

डाक्टर तेरुफमी सिसकी जिस दिन बम गिरा, उसी दिन प्रातः हिरोशिमा लौटे थे। वह रैड्क्रास अस्पताल में काम करते थे और मुकेइहारा से आये थे जो हिरोशिमा से तीस मील दूर था। वहां उनकी मां रहा करती थीं। अस्पताल पहुँचने में उन्हें दो घण्टे लग गये थे। यद्यपि रात को उन्हें अच्छी तरह नींद नहीं आई थी और वह अस्पताल न जाने की सोच रहे थे पर कर्तव्य भावना के आगे यह विचार टिके न रह सके और वह काफी सवेरे वाली गाड़ी से हिरोशिमा रवाना हो गये। रात्रि को उन्हें एक भयानक स्वप्न आया था और उसका विचार आते ही वह खिन्न हो जाते थे।

उनकी आयु इस समय केवल पच्चीस वर्ष की थी और कुछ दिन पहले ही उन्होंने चीन में सिंगहाओ की ईस्टर्न मैडिकल यूनिवर्सिटी में अपनी ट्रेनिंग पूरी की थी। वह कुछ आदर्शवादी थे और उस स्थान में, जहां उनकी मां रहा करती थीं, डाक्टरी सुविधाओं के अभाव के कारण खिन्न रहा करते थे। धीरे-धीरे उन्होंने वहां रोगियों को देखना शुरू कर दिया था। अभी कुछ ही दिन पहले एक साथी डाक्टर ने उन्हें बताया था कि आज्ञा लिए बगैर प्रैक्टिस करना निषिद्ध है, पर इसके बावजूद भी वे प्रैक्टिस करते रहे। उस रात सपने में उन्होंने देखा कि वह एक रोगी के सिरहाने बैठे थे कि तभी द्वार खुला और वह डाक्टर, जिससे उन्होंने रोगी के बारे में सलाह ली थी, और पुलिस भीतर आ गई। उसने उन्हें पकड़ लिया और अत्यन्त निर्दयता से पीटा। इस सपने का उन पर इतना प्रभाव पड़ा कि गाड़ी में उन्होंने निश्चय कर लिया कि मुकेइहारा में वह अपनी प्रैक्टिस बन्द कर देंगे। इसका कारण यह था कि रैडक्रास में नौकर होने के कारण उनको आज्ञा नहीं मिल सकती थी, क्योंकि इससे रैडक्रास के कार्य में शिथिलता आ जाती।

टर्मिनस पर पहुँचकर उन्होंने तुरन्त ही स्ट्रीट-कार पकड़ ली। बाद में उन्होंने इस बात का हिसाब लगाया था कि अगर नित्य की भांति उन्हें उस दिन भी स्ट्रीट-कार के लिये कुछ मिनट प्रतीक्षा करनी पड़ती तो वह विस्फोट केन्द्र के बिल्कुल पास होते और उस दशा में उनका बचना असम्भव

था। वह सात बजकर चालीस मिनट पर अस्पताल पहुँचे और चीफ सर्जन को अपनी उपस्थिति की सूचना दी। कुछ मिनट बाद वह पहली मंजिल में गए। वहां उन्होंने रोगी की बांह से परीक्षण के लिये रक्त लिया और परीक्षणशाला की ओर चले। परीक्षणशाला तीसरी मंजिल पर थी।

एक शीशे की ट्यूब में खून का नमूना हाथ में पकड़े हुए वह बोझिल-से कदमों से मुख्य गलियारे से सीढ़ियों की ओर चले। वह एक खुली खिड़की से कदम भर पीछे ही थे कि बम की रोशनी चमक उठी। ऐसे लगा जैसे गलियारे में फोटो खींचते समय जलाने वाली अत्यन्त तीव्र रोशनियाँ कर दी गई हों। वे झटके से अपने एक घुटने पर गिर गये और उन्होंने मन ही मन अपने से कहा, 'ससकी डरो मत!' उस समय वे विस्फोट के केन्द्र स्थल से १६५० गज की दूरी पर थे। विस्फोट ने सारी इमारत को जड़मूल से कंपा दिया। उनकी आंखों से चश्मा उड़ गया और हाथ की शीशी सामने दीवार से टकराकर चकनाचूर हो गई। उनका जापानी किस्म का पाजामा तेजी से पैरों से फिसल गया पर इन सबके बावजूद वह जरा भी आहत नहीं हुए।

डाक्टर ससकी ने जोर से मुख्य सर्जन को पुकारा और उनके कमरे की ओर भागे। वहां उन्होंने पाया कि चीफ-सर्जन शीशों से बुरी तरह जख्मी हो गये थे। सारा अस्पताल भीषण अस्त-व्यस्तता में था। भारी छतें और पार्टीशन टूट-कर रोगियों पर गिर पड़े थे। रोगियों के पलंग उलट गए

थे और दरवाजे-खिड़कियों के शीशों ने उन्हें बुरी तरह से जख्मी कर डाला था। फर्श पर और दीवारों पर खून ही खून छितरा हुआ था। बहुत से रोगी आर्तनाद करते हुए इधर-उधर भाग रहे थे और बहुत से मर गये थे। जिस परीक्षण-शाला में वह जा रहे थे, वहां उस समय उनका जो एक साथी काम कर रहा था, वह मर चुका था। जिस रोगी का रक्त उन्होंने लिया था, वह भी घबराहट के कारण मर गया था। इस प्रकार उन्होंने पाया कि सारे अस्पताल में केवल वे ही एक व्यक्ति थे, जिसे चोट नहीं आई थी।

उन्होंने सोचा कि शायद कोई बम सीधा अस्पताल पर गिरा है, इसलिये उन्होंने शीघ्रता से जो लोग अस्पताल के भीतर घायल हुए थे, उनकी मरहम-पट्टी शुरू कर दी। इधर बाहर सारे हिरोशिमा से घायल और मौत के मुँह में जा रहे लोग किसी तरह अपने डूबते कदमों से रैडक्रास अस्पताल की ओर जा रहे थे। वे इतनी बड़ी संख्या में थे कि ऐसा लगता था मानों वे अस्पताल पर आक्रमण करने जा रहे थे और यह एक ऐसा दृश्य था जो डाक्टर ससकी के प्राइवेट प्रैक्टिस करने के विचार को बहुत लम्बे समय तक के लिए खत्म कर डालने वाला था।

× × ×

ईस्ट एशिया टीन वर्क्स की क्लर्क कुमारी टोशिको ससकी बम गिरने वाले दिन प्रातः तीन बजे ही उठ गई थीं। स्मरण

रहे कि इनका डाक्टर ससकी से कोई सम्बन्ध नहीं है। उनको घर में काफी काम करना था और एक दिन पहले उनकी मां उनके ग्यारह महीने के भाई अकियो को लेकर आई थीं, जिसके पेट में गम्भीर गड़बड़ हो गई थी। अकियो को तमूरा पेड्रिएटिक अस्पताल में भर्ती कर दिया गया था और उनकी मां भी उसी के पास अस्पताल में थीं। कुमारी ससकी की उमर इस समय बीस वर्ष थी। उनके पिता एक फैक्टरी में काम किया करते थे। उनको इस समय अपने पिता व भाई-बहन के लिए भोजन बनाना था। इसके अतिरिक्त अस्पताल में अपनी मां व छोटे भाई के लिए भी कुछ बनाना था क्योंकि युद्ध के कारण उन दिनों अस्पताल की ओर से भोजन नहीं दिया जाता था।

सात बजे तक उन्होंने अपना काम समाप्त कर लिया था। वह 'कोइ' में रहती थीं और कानोन-माची तक, जहां कि वह कार्य करती थीं, जाने में ४५ मिनट लगते थे। सात बजे वह दफ्तर रवाना हो गईं। वह फैक्टरी में व्यक्तिगत रिकार्डों की इन्चार्ज थीं। दफ्तर पहुँचते ही वह अन्य कुछ लड़कियों के साथ दफ्तर के आडीटोरियम में चली गईं। एक दिन पहले एक सम्भ्रांत नाविक ने, जो फैक्टरी का भूतपूर्व कर्मचारी था, रेल के आगे कूदकर आत्म-हत्या कर ली थी, इसलिये आज प्रातः १० बजे उसकी आत्मा की शांति के लिये प्रार्थना होने वाली थी। हाल में पहुँचकर कुमारी ससकी दूसरों के साथ प्रार्थना की व्यवस्था करने लगीं। इस कार्य में

लगभग बीस मिनट लग गये।

इसके बाद ये अपने कमरे में अपनी डैस्क पर बैठ गईं। वह खिड़कियों से काफी दूर थीं। खिड़कियां उनके बाईं तरफ को थीं। उनके पीछे किताबों से भरी बड़ी-बड़ी अलमारियां थीं, जिनमें फैक्टरी की लायब्रेरी की किताबें थीं। काम शुरू करने के पहले उन्होंने सोचा कि दाईं तरफ बैठी लड़की से थोड़ी-सी गपशप कर ली जाय और इस अभिप्राय से अपना मुख उसकी ओर फेरा। अभी उन्होंने अपना मुख मोड़ा ही था कि सारा कमरा आंखों को अंधा कर देने वाले प्रकाश से भर गया। यह स्थान विस्फोट केन्द्र से १६०० गज के अन्तर पर था।

उस भीषण प्रकाश से कुमारी ससकी की दशा ऐसी हो गई मानों उन्हें लकवा मार गया हो। हर वस्तु भड़भड़ा कर गिरने लगी और कुमारी ससकी की चेतना लुप्त हो गई। अचानक ही छत गिर पड़ी और ऊपर का लकड़ी का फर्श टुकड़े-टुकड़े होकर गिरने लगा। फर्श टूटने से ऊपर के लोग भी नीचे गिर गये। लेकिन इन सब चीजों के पहले, जैसा कि सिद्धान्त रूप से होना भी चाहिए था, किताबों के केस झटके खाकर आगे को गिरे और उसमें से तेजी से गिरती किताबों ने कुमारी ससकी को कुर्सी से उठाकर नीचे फेंक दिया। उनका पैर मरोड़ा-सा खाकर केस के नीचे दबकर टूटा-सा जा रहा था और किताबों का ढेर उन पर लद गया था।

और इस प्रकार संसार के इतिहास में, पहली बार, अणु युग के प्रथम क्षण में एक मानव पुस्तकों द्वारा कुचल दिया गया था।

२

★★★

विस्फोट के बाद ही रेवरैंड टानीमोटो श्री मतुसो के घर से तेजी से सड़क पर भागते आए। सड़क पर आकर उन्होंने आश्चर्य से उन खून से रंगे सैनिकों को देखा, जो खाइयां खोद रहे थे। एक बुढ़िया ने एक तीन-चार वर्षीय बच्चे को अपनी गोद में रखा था और जोर-जोर से "हाय मरी हाय मरी!" चीखती जा रही थी। यह सब देखकर श्री टानीमोटो का हृदय द्रवीभूत हो उठा। उन्होंने बच्चे को अपनी गोद में ले लिया और बुढ़िया का हाथ पकड़कर नीचे की ओर चले। इस समय तक सड़क बिलकुल अंधेरा हो गई थी और प्रतीत होता था जैसे सारे वातावरण में धूल भर गई हो।

वह उस बुढ़िया को पास के स्कूल में ले गये जो संकट-कालीन स्थिति होने के कारण अस्पताल में परिवर्तित कर दिया गया था। परन्तु स्कूल में उन्होंने पाया कि सारे फर्श

पर कांच ही कांच बिखरा पड़ा था और लगभग पचास-साठ खून से रंगे व्यक्ति पहले ही उपचार की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनको ख्याल आया कि यद्यपि भोंपू ने कोई खतरा न होने की सूचना दी थी, और न ही उन्होंने विमानों की आवाज सुनी, फिर भी शहर में काफी बम गिरे हैं। उन्हें सिल्क वाले के मकान के पास ही एक ऊँचे टीले की याद आई जहां से सारे शहर का दृश्य देखा जा सकता था। वे उस तरफ को भागे जिससे सारे शहर को देखा जा सके।

शिखर पर से उन्होंने एक दिल हिला देने वाला दृश्य देखा। उन्होंने सोचा था कि कोइ का हो एक हिस्सा ध्वस्त हुआ होगा, परन्तु जहां तक उनकी नजर जाती थी, लगभग सारा ही हिरोशिमा, धूल से ढका एक अत्यन्त भीषण दृश्य उपस्थित कर रहा था। वातावरण में भारीपन और धूल के कारण अधिक दूर तक देखना भी सम्भव न था। चारों ओर से धुएं के बादल उड़ रहे थे और वे शहर पर छाई धूल में मिलते जा रहे थे।

उन्हें इस बात पर आश्चर्य हुआ कि जब आकाश बिल्कुल साफ था, इतना विस्तृत और भयंकर विनाश किस प्रकार हुआ। अगर विमान कुछ दूर पर होते तो भी आवाज तो सुनाई पड़ती। आस-पास के मकान जल रहे थे और जब रोड़ी के बराबर पानी की बड़ी-बड़ी बूँदें टपकने लगीं तो उन्होंने सोचा कि ये आग बुझाने वाले पाइपों की बूँदें होंगी। परन्तु वास्तव में बात यह थी कि अणु-विखण्डन के कारण

धूल और गर्मी का अशांत बुखार हिरोशिमा के ऊपर मीलों तक आकाश में उठ गया था और वे वास्तव में जल की बूंदें नहीं थीं अपितु उस गुबार का घनीभूत वातावरण था जो बूँदों के रूप में परिवर्तित होकर टपक रहा था।

तभी उनको श्री मतुसो की आवाज सुनाई दी। वह उनकी कुशलता के बारे में पूछ रहे थे। श्री मतुसो सबसे अगले कमरे में पलंग के नीचे घुस गये थे और उसने उनकी रक्षा की थी। जब मकान की छत गिरी तब उनको विशेष चोट नहीं आई और कोशिश करके वे बाहर निकल आए। श्री टानीमोटो कोई उत्तर न दे सके। उनके दिमाग में एक के बाद एक अपनी पत्नी, बच्चा, चर्च, घर और साथियों के बारे में विचार आ रहे थे। क्या सबकी यही दुर्दशा हुई होगी? और फिर वे तेजी से शहर की ओर भागे।

× × ×

विस्फोट के बाद श्रीमती हतसुयो नकामुरा अपने मकान के मलबे में दब गई थीं। अपने को मुक्त करने के बाद वह अपनी सबसे छोटी बच्ची मयेका की ओर बढ़ीं, जो उनसे कुछ ही दूर पर थी। किसी तरह गिरती-पड़ती वह बच्ची के पास पहुँचीं और जल्दी-जल्दी उसे निकालने की चेष्टा करने लगीं। तभी उन्होंने मलबे की एक दरार में से धीमी आवाजें सुनीं जो 'बचाओ-बचाओ' कह रही थीं।

उन्होंने अपने दस वर्षीय लड़के टोशिको और आठ वर्षीय याएको का नाम लेकर जोर से उन्हें पुकारा। उत्तर

में उन्हें उनको धीमी आवाजें सुनाई पड़ीं। उन्होंने मयेको को छोड़ दिया और उस ओर लपकीं जहां से आवाजें आ रही थीं। छोटी लड़की की हालत इस समय ऐसी थी कि वह कम से कम आराम से सांस ले सकती थी। उन्होंने तेजी से उस स्थान से कबाड़ उठाना शुरू कर दिया जहां से चिल्लाने की आवाजें आ रही थीं। यद्यपि दोनों बच्चे एक-दूसरे से कम से कम दस फुट की दूरी पर सोये थे, पर उनकी आवाजें एक ही स्थान से आ रही मालूम होती थीं। ऐसा मालूम पड़ा कि तोशियो कुछ हिल-डुल सकता था क्योंकि जब वे ऊपर से मलवा और लकड़ियां उठाकर फेंक रही थीं, तब उन्हें नीचे से उसकी हरकत सुनाई दे रही थी।

आखिरकार उन्हें उसका सर दिखाई दिया। जल्दी से उन्होंने थोड़ा सामान और फेंका और उसे खींच लिया। उसने बताया कि उसे किसी ने सीधा उठाकर फेंक दिया और वह बहन के ऊपर गिरा और तभी ऊपर से छत भी गिर पड़ी। याएको अभी भी नीचे दबी पड़ी थी। याएको ने नीचे से कहा कि वह हिल-डुल नहीं सकता, क्योंकि कोई भारी चीज उसके पैरों पर पड़ी हुई थी। थोड़ा और खोदने के बाद श्रीमती नकामुरा ने एक छेद-सा किया और लड़की की बांह पकड़कर खींचना शुरू किया। याएको चीखी, "नहीं नहीं दर्द करता है।" पर श्रीमती नकामुरा जोर से चिल्लाईं "यह कहने के लिए कोई समय नहीं है कि दुखता है या नहीं।" और चीखती लड़की को ऊपर खींच लिया। बाद में

उन्होंने मयेको को भी निकाल लिया। बच्चे यद्यपि गन्दे हो गये थे और उन्हें कुछ रगड़ आ गई थी, नहीं तो किसी को एक खरौंच तक न आई थी।

बच्चों को लेकर वह सड़क पर आई। उन्होंने उनको कपड़े पहना दिये क्योंकि सोते समय उन लोगों ने केवल भीतर के वस्त्र ही पहन रखे थे। श्रीमती नकामुरा ने आघात स्थिति का मुकाबला करने के लिए पहले ही कुछ आवश्यक वस्त्रों की एक पोटली बांध ली थी, और वही इस मौके पर काम आई। मलबे में वह उनको जल्दी मिल गई थी। उन्होंने बच्चों को हवाई हमलों से बचाने वाला टोप पहना दिया जिसे वहां बोकु-जुकी कहा जाता है। बाकी दोनों बच्चे तो चुप थे परन्तु पांच वर्षीय मयेको बार-बार अपनी मां से प्रश्न पूछ रही थी। जैसे, "अभी से रात क्यों हो गई ?, हमारा मकान क्यों गिर गया ? यह क्या हुआ ?" आदि-आदि।

श्रीमती नकामुरा को स्वयं ही पता नहीं था क्या हुआ, क्योंकि उस समय तक खतरा न होने का भोंपू नहीं बजा था। अंधेरे में ही उन्होंने देखा कि पास-पड़ौस के सारे मकान गिर गये थे। सामने का मकान, जिसे फायर लाइनों की सुविधा के लिए उसका मालिक तुड़वा रहा था, ध्वस्त हो चुका था और उसका मालिक मरा पड़ा था। सड़क पर उन्हें पड़ौसी संघ के प्रधान श्री नकामोटो की पत्नी मिलीं। उनका सारा सिर खून से भीगा हुआ था। श्रीमती नकामुरा

को उन्होंने बताया कि उनका बच्चा शीशों से बुरी तरह घायल हो गया है अगर उनके पास कोई पट्टी हो तो, दे दें।

यद्यपि श्रीमती नकामुरा के पास कोई पट्टी नहीं थी, फिर भी वह किसी तरह अपने मकान में गईं और मलबे में से कुछ सफेद कपड़ा निकाल लाईं। यह कपड़ा किसी का था जिसे वह सीने को लाई थीं। उसको पट्टियां फाड़कर उन्होंने वह श्रीमती नकामोटो को दे दिया। जब वे कपड़ा लेकर आ रही थीं तभी उन्होंने अपनी कपड़े सीने की मशीन को देखा। वह फिर से वापस गईं और मशीन को बाहर घसीटा, पर वे उसे ले न जा सकीं। अपनी जीविका के एक-मात्र साधन के बारे में उनके हृदय में तरह-तरह के विचार आये। सालों से यही मशीन थी, जिसके सहारे वह जीविका चला रही थीं। आखिरकार उन्होंने उसे घर के सामने बने सीमेंट के छोटे से तालाब में डाल दिया जिसे सम्भावित अग्नि का मुकाबला करने के लिए बनाया गया था।

फिर उन्हें श्रीमती हताया मिलीं। वह बहुत घबराई हुई थीं। उन्होंने श्रीमती नकामुरा को अपने साथ असानो पार्क में भाग चलने की सलाह दी। यह पार्क क्यो नदी से थोड़ी दूर था। इस बाग को सुरक्षा की दृष्टि से इस प्रकार बनाया गया था कि संकट के समय लोग वहां आश्रय ले सकें। पास के मकान में इस समय आग लग गई थी। जब श्रीमती हताया ने भाग चलने को कहा तब श्रीमती नकामुरा ने आग बुझाने में सहायता देने के अपने विचार को प्रकट

किया।

वास्तव में हिरोशिमा में अधिकतर आग ज्वलन-शील तत्वों के कारण लगी। केवल विस्फोट के केन्द्र-स्थल को छोड़कर, जहां उसके कारण ही आग लगी, शेष स्थानों में दूसरे प्रकार से आग लगी। जैसे पैट्रोल जैसी कोई वस्तु गिर पड़ी, खाना पकाने के स्टोव, जलते चूल्हे या बिजली के कारण आग लग गई।

श्रीमती हताया ने श्रीमती नकामुरा की बात को सुनकर कहा, "मूर्ख न बनो। क्या पता और जहाज आएं और बम बरसा दें।" श्रीमती नकामुरा के पास इसका कोई उत्तर न था अतः वह बच्चों समेत श्रीमती हताया के साथ चल पड़ीं। श्रीमती हताया ने अपने साथ सूटकेस में कुछ आवश्यक कपड़े, एक कम्बल और एक छाता ले रखा था, जो उन्होंने हवाई सुरक्षा-स्थल में रखा हुआ था और जिसे वे भागते समय उठा लाई थीं। रास्ते में उन्होंने मलवे के नीचे से कई आवाजें सुनीं। असानो पार्क जाते समय उन्होंने जिस इमारत को खड़ा देखा वह केवल जीसट मिशन हाउस था जिसके बगल में कैथोलिक किंडर गार्टन था। इसी में श्रीमती नकामुरा ने एक बार मयेको को भरती किया था। जब वे लोग वहां से गुजरे तब उन्होंने फादर क्लीनसोर्ग को देखा जो केवल एक खून से सना जांघिया पहने हाथ में एक छोटा-सा सूटकेस लिए मकान के बाहर भागे आ रहे थे।

× × ×

विस्फोट के बाद जब फादर विल्हम क्लीनसोर्ग सब्जी के बाग में भटक रहे थे, तब ही अंधेरे में फादर सुपीरियर ला-सैले मकान के कोने पर आए। उनका सारा शरीर, विशेषकर पीठ खून से रंगा हुआ था। जब बम की भीषण चमक हुई तो वे खिड़की से भागे और पीछे से आ रहे शीशों के छोटे-छोटे टुकड़ों से घायल हो गये थे। फादर क्लीनसोर्ग ने, जो अभी तक चकित थे, केवल यही पूछा, "बाकी कहां हैं ?" अभी उन्होंने वाक्य खत्म भी न किया था कि उसी मकान में रहने वाले दो पादरी और वहां आए। उनमें एक फादर सीसलिक थे जो फादर शिफर को सहारा दिये ला रहे थे। फादर सीसलिक बिल्कुल साफ बच गये थे जब कि फादर शिफर के बाएँ कान के ऊपर का हिस्सा शीशे से बुरी तरह कट गया था और वे खून से रंगे हुए थे।

फादर सीसलिक एक प्रकार से अपने ऊपर प्रसन्न थे क्योंकि वह चमक के होते ही एक जीने में कूद गये थे जिसको उन्होंने पहले ही इमारत के सर्वाधिक सुरक्षित स्थान के रूप में चुन रखा था। इसका परिणाम यह हुआ कि जब धमाका आया तब उन्हें जरा भी चोट नहीं आई। फादर ला-सैले ने फादर सीसलिक से फादर शिफर को शीघ्र ही डाक्टर के पास ले जाने को कहा। उन्होंने कहा कि कहीं ऐसा न हो कि अधिक खून निकल जाने से फादर शिफर की मृत्यु हो जाए। इसके लिए उन्होंने दूसरे कोने पर डाक्टर कंडा या डाक्टर फूजी का नाम बताया जो वहां से छ: ब्लाक करने के

बाद थे । वे दोनों सहन में से निकलकर सड़क पर चले गए ।

इसी समय मिशन की रखवालन श्रीमती होशिजिमा की लड़की ने वेग से आकर फादर क्लीनसोर्ग को कहा कि उसकी माँ और बहन मलबे के नीचे दब गये हैं । इसका मकान जीसट कम्पाउंड के पीछे था । उधर जाते हुए इन इन लोगों ने देखा कि कैथोलिक किंडर गार्टन की मास्टरनी का घर भी उसके ऊपर ढह गया है, फादर ला-सैले और मिशन की हाउसकीपर श्रीमती मुराटा शिक्षिका को निकालने में लग गई और फादर क्लीनसोर्ग रखवालन के मकान के ढेर के पास पहुँचकर ऊपर से चीजों को उठा-उठाकर फेंकने लगे । नीचे से कोई आवाज नहीं सुनाई दे रही थी और उनको विश्वास हो गया था कि श्रीमती होशिजिमा मर चुकी होंगी । आखिरकार उन्हें श्रीमती होशिजिमा का सिर दिखाई दिया । मरा हुआ समझकर उन्होंने उनके बाल पकड़कर खींचना शुरू किया, पर अचानक ही वह चीख उठीं "बाल न खींचो···बाल न खींचो ।" फादर क्लीनसोर्ग ने और मलवा खोदकर उन्हें बाहर निकाला । इसके बाद लड़की को भी ढूंढ़ निकाला । दोनों में से किसी को अधिक चोट नहीं आई थी ।

मिशन हाउस के बाहर ही एक सार्वजनिक हमाम था और बिस्फोट के कुछ देर बाद ही उसमें आग लग गई । परन्तु दक्षिणी वायु के कारण पादरियों ने सोचा कि इमारत बच जायगी । लेकिन फिर भी सावधानी के तौर पर

फादर क्लीनसोर्ग अपने कमरे में गये जिससे कुछ आवश्यक चीजें निकाल लाएँ। वहां उन्होंने सारे कमरे को अस्त-व्यस्त और चीजों को छितरा हुआ पाया। फर्स्ट एड का थैला खूंटी पर सुरक्षित लटका हुआ था, परन्तु कपड़ों का कहीं भी पता न था, जो उसी के पास ही खूंटियों पर लटके हुए थे। उनकी मेज टूटी पड़ी थी लेकिन कागज की लुगदी का सूटकेस, दरवाजे के पास साबुत पड़ा था। फादर क्लीनसोर्ग ने इसे देवी प्रताप ही माना क्योंकि इस सूटकेस में उनकी प्रार्थना-पुस्तिका, पादरियों के हिसाब के अतिरिक्त कुछ नोट भी थे, जिनके लिये वह उत्तरदायी थे। इस सूटकेस को लेकर वह भागे और मिशन के हवाई सुरक्षा गृह में रख दिया।

इस समय तक फादर सीसलिक और फादर शिफर वापस आ गये थे। फादर शिफर के अब भी खून जारी था। फादर सीसलिक ने बताया कि डाक्टर कंडा का मकान पूर्ण-रूप से ध्वस्त हो चुका था। इसके अतिरिक्त आग लग जाने से वे क्यो नदी के किनारे डाक्टर फूजी के अस्पताल की ओर भी न जा सके। आग में से जाना बिल्कुल असम्भव था।

× ×

लेकिन डाक्टर फूजी का अस्पताल अब नदी के किनारे नहीं, उसके भीतर था। इस प्रलय-बेला में डाक्टर फूजी अपनी बुद्धि खो बैठे थे। लकड़ियां छाती पर इस तरह पड़ी थीं कि हिल-डुल भी न सकते थे। लगभग बीस मिनट बाद

होश आने पर बड़ी कठिनाई से उन्होंने अपने आपको मुक्त किया। डाक्टर की बाईं बांह, कन्धे में दर्द होने से बेकार-सी हो गई थी। लकड़ी के एक टुकड़े का सहारा लेकर वह किसी तरह नदी के किनारे आ लगे। उनका सारा शरीर दर्द से टूटा जा रहा था।

नदी से बाहर आने पर उन्होंने देखा तब भी वह केवल जांघिया और बनियान पहने हुए हैं। बनियान फट गई है और जहां चोटें लगी हैं वहां से खून जारी है। क्यो नदी का पुल जिसकी बगल में उनका अस्पताल था, साबुत था। चश्मा खो जाने से उन्हें धुंधला दिखाई दे रहा था। फिर भी वह यह देखकर चकित रह गये कि आस-पास के सारे मकान गिर गए थे। पुल पर चलते हुए उन्हें अपने एक दोस्त डाक्टर माछी मिले। अचम्भित स्वर में उन्होंने पूछा, "तुम्हारा क्या ख्याल है कि यह क्या चीज थी ?"

"यह एक 'मोलोतोफानो हनाकानो' होगा।" डाक्टर माछी ने जवाब दिया। मोलोतोफानो हनाकागो को जापान में रोटी की टोकरी के लिए प्रयुक्त किया जाता था। इसका अर्थ मोलोतोव फूलों की टोकरी या बमों का अपने आप फैल कर फट जाना भी होता था।

पहले डाक्टर फूजी ने केवल दो स्थानों पर आग देखी। एक तो उनके अस्पताल की ओर ही लगी थी और दूसरी दक्षिण दिशा में काफी दूर दिखाई देती थी। परन्तु वह यह देखकर दुविधा में पड़ गये कि भारी संख्या में घायल लोग

पुल के पार जा रहे थे। यद्यपि आग बहुत कम जगह लगी थी, पर जाने वालों में अधिकांश बुरी तरह झुलसे हुए थे। डा० फ़ूजी ने डा० माछी से पूछा, "इसे तुम क्या कहोगे ?" उनके प्रश्न से लगता था जैसे उस दिन सारी थ्योरियां धरी की धरी रह गई हों। वह केवल इतना ही कह सके, "शायद यह मोलोटोव फ्लावर बास्केट (मोलोतोव फूलों की टोकरी) के कारण है।"

प्रभात में जब डा० फ़ूजी अपने मित्र को विदा करने स्टेशन गये थे, उस समय हवा शान्त थी लेकिन अब प्रभंजन चल रहा था। नये-नये स्थानों पर आग फैल रही थी, और वायु इतनी गर्म हो गई कि कुछ क्षणों बाद ताप के मारे पुल पर खड़े रहना भी मुश्किल हो गया। डा० माछी नदी के दूसरी ओर जहां अभी तक आग नहीं लगी थी, चले गए और डा० फ़ूजी भी असह्य ताप के कारण नीचे पानी में उतर गए। पानी में अनेकों व्यक्ति खड़े थे। डा० ने देखा उनका नौकर खण्डहर मकान की कड़ियों में बुरी तरह जकड़ा हुआ है और कुछ दूर पर उनके अस्पताल की एक नर्स टांगों के सहारे कड़ी पर उलटी लटकी है और एक दूसरी कड़ी ने उसके वक्ष को दबा रखा था। किसी प्रकार कुछ लोगों की सहायता से उन लोगों को वहां से निकाला। उनका ख्याल है कि क्षण भर के लिये उन्होंने अपनी भतीजी की चीख सुनी, पर वे उसको न ढूंढ़ सके। इसके बाद उन्होंने न तो उसे देखा और न उसकी आवाज सुनी। उनके दोनों

रोगी व चार नर्सें भी मर चुकी थीं। इसके बाद फिर वे लौटकर पानी में चले गये और आग बुझने की प्रतीक्षा करने लगे।

विस्फोट के बाद ही हिरोशिमा के अधिकतर डाक्टर मर गए थे। डाक्टर फूजी, कंडा व माछी कुछ विशेष प्रकार के डाक्टर थे, अन्यथा अधिकांश अस्पतालों के कमरों में या अपने निजी अस्पतालों में दब कर मर गये। उनके भांति-भांति से पड़े मृत शव यह कहानी कह रहे थे कि क्यों इतने कम घायल लोग भी मर गए जिनमें से काफी बच भी सकते थे।

शहर भर के १५० डाक्टरों और १७८० नर्सों में से अधिकांश मर चुके थे और जो शेष थे वे इतने घायल थे कि स्वयं उनके लिये ही डाक्टर और नर्सों की आवश्यकता थी। शहर का सबसे बड़ा अस्पताल रैड क्रास का था। इसके तीस डाक्टरों में से छः ऐसे थे जो कुछ कर सकते थे। दो सौ से अधिक नर्सों में से केवल दस ऐसी थीं जो कुछ कर सकती थीं। इनमें भी केवल डाक्टर ससकी ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें बिल्कुल भी चोट नहीं आई थी।

× × ×

विस्फोट के तुरन्त बाद ही डाक्टर ससकी खण्डहर स्टोर रूम में से मरहम-पट्टी का सामान लेने गये और उन्होंने जल्दी-जल्दी कुछ पट्टियां और एक साबुत मरहम की शीशी लाकर झटपट चीफ-सर्जन के घावों की मरहम पट्टी की और

गलियारे में आकर साथी डाक्टरों और नर्सों की मरहम-पट्टी करनी शुरू कर दी। और फिर जो भी सामने आया उसी की पट्टी करनी शुरू कर दी वह इतनी फुर्ती से काम कर रहे थे कि जैसे भी होता, पट्टी कर देते, डाक्टरी नियमों का कोई ध्यान उस समय नहीं रहा। गलियारा भरता जा रहा था। अभी तक वे कटाव व खरोंचें ही पा रहे थे पर थोड़ी सी देर में नये घायलों पर भयंकर रूप से जलने के घाव पाए। बाहर से लोग आए जा रहे थे और वह अकेले थे इसलिये घायल छोड़कर उन्होंने बड़े घायलों की मरहम-पट्टी करनी शुरू की जिससे लोगों को ज्यादा खून निकलने सेमरने से बचाया जाय। इस बीच में घायल चारों ओर जमा हो गए थे। इतनों को सम्भालना अकेले डाक्टर के बस में न था। अधिकांश लाचारी में मर रहे थे।

हिरोशिमा की आबादी दो लाख पैंतालीस हजार थी। बम विस्फोट के समय ही लगभग एक लाख लोग नष्ट हो गये। लगभग एक लाख लोग घायल हुए और उनमें से दस हजार के करीब रैड क्रास अस्पताल पहुँचे। लेकिन इतने लोगों के लिये यह अस्पताल अपर्याप्त था क्योंकि उसमें केवल ६०० बिस्तर थे और घायलों से अब सारे वार्डों के कमरों के फर्श, गलियारा, सीढ़ियां बरामदे, और तो और अस्पताल के सहन और सड़क तक भर गयी थीं। वातावरण में घुटन भर गई थी और चारों ओर से लोग चिल्ला रहे थे। डाक्टर ससकी को चारों ओर से आवाजें पड़तीं, "डाक्टर"'डाक्टर"'

दया करो, दया करो ।" कभी कोई कम घायल आकर डा० की बांह पकड़कर किसी अधिक घायल को देखने की प्रार्थना करता । केवल मोजे पहने डाक्टर ससकी यहां वहां इतने घायलों को देखकर एक दम यंत्रवत् से हो गये । डाक्टरी सहानुभूति का अवसर न था । वह एक मशीन की भांति लोगों के घावों को साफ करने, दवा लगाने, पट्टी बांधने का काम कर रहे थ ।

× × ×

जिस समय ईस्ट एशिया टीन वर्क्स की कुमारी ससकी पर किताबों का अम्बार गिरा, वह बेहोश हो गई । किताबों के ऊपर अलमारियाँ, पलस्तर और भी न जाने क्या-क्या गिर गया । उनकी मूर्च्छा तीन घन्टे बाद कम हुई । किताबों और मलबे के नीचे घोर अंधेरा था । ऐसी हालत में उन्हें अर्ध-चेतनावस्था ही अच्छी प्रतीत हुई । कभी लगता कि दर्द खतम हो गया तो कभी लगता फिर उठ आया । जब दर्द बहुत तेज हो जाता तब ऐसे लगता था जैसे किसी ने घुटने से नीचे पैर काट दिया हो । थोड़े समय बाद उन्होंने किसी को ऊपर चलते सुना और इसके साथ ही आसपास से आवाजें गूंज उठीं, "बचाओ—बचाओ हमें यहां से निकालो ।"

× × ×

फादर क्लीनसोर्ग ने फादर शिफर को कुछ पट्टियां बांध दीं और फिर वह जल्दी से मिशन-गृह में से अपनी मिलिटरी

जैकट और कत्थई रंग के पायजामों का पुराना जोड़ा खोज-कर उसे पहना और बाहर आये। तभी एक औरत ने उन्हें बताया कि उसके जल कर गिरे मकान में उसका पति दबा पड़ा है आप उसे बचायें।

लेकिन तभी किंडर गार्टन की अध्यापिका ने उनका ध्यान मिशन के सेक्रेटरी श्री फुकाई की ओर आकर्षित किया जो दूसरी मंजिल पर अपनी खिड़की में खड़े रो रहे थे और उस ओर देख रहे थे जहां विस्फोट हुआ था। फादर क्लीन-सोर्ग किसी तरह मलबे और दूसरी चीजों से भरे जीने से ऊपर पहुंचे। वहां दरवाजे पर खड़े होकर उन्होंने श्री फुकाई को पुकारा।

श्री फुकाई ने धीरे-से अपना सिर घुमाकर एक विलक्षण दृष्टि से फादर क्लीनसोर्ग की ओर देखा और बोले, "मुझे यहीं रहने दो।" फादर ने उनका कालर पकड़ते हुए कहा, "मेरे साथ चलो, नहीं तो मर जाओगे।"

"मुझे यहीं मरने के लिए छोड़ दो!" श्री फुकाई ने रुंधे गले से उत्तर दिया। बहुत मनाने पर भी जब श्री फुकाई न माने तो फादर क्लीनसोर्ग एक और आदमी की मदद से उनके हाथ-पांव पकड़कर ले गये। श्री फुकाई जोर-जोर से चीख रहे थे, "मैं नहीं चलूंगा…छोड़ दो मुझे…।" फादर क्लीनसोर्ग ने श्री फुकाई को पीठ पर लाद लिया, अपना नोटों व दूसरी चीजों का सूटकेस उठाया और फिर वह सुरक्षित स्थान ईस्ट परेड ग्राउंड की ओर रवाना हुए।

चलते हुए फादर क्लीनसोर्ग ने फादर ला-सैले से कहा, "यद्यपि हमने अपना सब कुछ खो दिया फिर भी मजाक की भावना नहीं गई।"

सारी सड़कों पर मकानों का मलवा और टेलीफोन व बिजली के खम्भे टूटे पड़े थे। यत्र तत्र गिरे मकानों के नीचे से लोगों को बचाने की करुण आवाजें आ रही थीं। पर उस फैली आग में उनको बचाना असम्भव था। श्री फुकाई बराबर, "छोड़ दो···मुझे यहीं रहने दो।" आदि बड़बड़ा रहे थे।

थोड़ी दूर जाने पर इन लोगों को रुक जाना पड़ा क्यों कि एक मकान बीच सड़क पर गिर गया था और अब वह जल रहा था। ससकी पुल के उस पार, जहां से उन्हें ईस्ट परेड ग्राउंड जाना था, उन्होंने देखा कि भीषण रूप से आग लगी हुई थी। ऐसे लगता था कि नदी के दूसरे किनारे पर आग का एक बहुत लम्बा टुकड़ा फैला दिया गया हो। उस आग में से जाना सम्भव न देख उन्होंने असानो पार्क जाने का निश्चय किया। कई दिनों से अच्छा भोजन न मिलने और दस्तों के कारण वह काफी दुर्बल हो गए थे। श्री फुकाई छूटने की कोशिश कर रहे थे। उन्हें लादे हुए जब फादर किसी मलवे के ढेर पर चढ़ते तो उनके पांव लड़खड़ा जाते। आखिरकार उन्होंने श्री फुकाई को मलवे के एक बड़े ढेर के आगे उतार दिया और वे ढेर पर होते हुए बगल में नदी किनारे पर कूद गये। जब उन्होंने पीछे देखा तो फुकाई भागे चले जा रहे थे। फादर क्लीनसोर्ग ने वहीं से पुल पर

खड़े कुछ सैनिकों से श्री फुकाई को रोकने के लिए कहा और वह स्वयं भी मुड़कर वापस जा रहे थे तभी फादर ला-सैले ने चिल्लाते हुए कहा, 'जल्दी करो, समय व्यर्थ नष्ट करने के लिए नहीं है।" इस पर फादर क्लोनसोर्ग ने एक बार फिर चिल्लाकर सैनिकों से श्री फुकाई का ध्यान रखने को कहा। सैनिकों ने कहा कि वे करेंगे पर इस बीच भग्न-हृदय छोटे-से श्री फुकाई उनमें से निकलकर आग की ओर भाग गये थे।

× × ×

अपने बाल-बच्चों व परिवार का ख्याल आते ही श्री टानीमोटो सबसे छोटे रास्ते से घर की ओर भागे। केवल वही एकमात्र व्यक्ति था जो शहर की ओर भागा जा रहा था। रास्ते में उन्हें हजारों व्यक्ति मिले जो शहर से भाग रहे थे। उनमें से एक भी ऐसा नहीं दिखाई देता था जिसे घाव न आए हों। किसी की बरौनियां जल गई थीं और कइयों के चेहरे व हाथों के जल जाने से वहाँ की खाल उधड़ गई थी और मांस लटक रहा था। कइयों ने दर्द के कारण अपने हाथों को इस प्रकार उठा रखा था मानो कोई चीज उठाये लिए जा रहे हों, कई लोग वमन करते जा रहे थे। जो लोग कुछ कम घायल थे वे अपने से अधिक घायलों को सहारा दिए ले जा रहे थे। कइयों के शरीर पर कपड़ों के नाम पर कुछ चीथड़े से अटके हुये थे और कइयों के शरीर पर तो एक भी कपड़ा न था। उनके शरीरों पर कपड़ों के

जलने के कारण कुछ आकार से बन गये थे। कई स्त्रियों और पुरुषों के शरीर पर तो अन्तर्वस्त्रों के आकार चिन्हित हो गये थे। इसका कारण यह था कि सफेद वस्त्रों ने गर्मी का साथ दिया जबकि काले वस्त्रों ने गर्मी को जज्ब करके भीतर जाने दिया। कई स्त्रियों के शरीरों पर उनके पेटी-कोटों और चोलियों पर बने फूल उनके शरीर पर बन गये थे, क्योंकि जिस-जिस स्थान पर ऐसे फूल इत्यादि बने थे, वहां दूसरे स्थानों की अपेक्षा गर्मी का कम प्रभाव हुआ। उन लोगों के सिर झुके हुये थे और वे सामने को ओर देखते जा रहे थे। मृत्यु की-सी स्तब्धता उनके चेहरों पर छाई हुई थी और वे भाव विहीन थे।

श्री टानीमोटो भागते ही चले गये। कोइ-पुल और केनन पुल पार करने के बाद जब वह नगर के केन्द्र में पहुँचे तो उन्होंने देखा कि वहां सारे मकान ध्वस्त हो गये थ और उनमें से बहुतों में आग लगी हुई थी। वृक्ष जलकर कोयला हो गये थे और पत्तों का कहीं पता नहीं था। उन्होंने कई स्थानों पर लोगों को बचाने के लिए मलवा हटाने की कोशिश की पर आग के कारण वह ऐसा न कर सके। कई मकानों के मलबे के नीचे से सहायता की करुण पुकारें आ रही थीं पर कोई उनकी ओर ध्यान नहीं दे रहा था। वास्तव में उस दिन बचने वालों ने सबसे पहले अपने परि-वार जनों को निकाला। इसके बाद या तो उन्होंने अपने रिश्तेदारों को निकाला या निकटतम पड़ौसियों की मदद की,

क्योंकि न तो इतने व्यक्ति थे जो सबकी सहायता करते और न ही वे अपने दुर्दैव की सीमाओं को और अधिक बढ़ाना चाहते थे। सहायता के लिये हृदय फाड़ देने वाली आवाजें आती रहीं, पर श्री टानीमोटो भागते रहे। एक सच्चा ईसाई होने के कारण उनका हृदय उन लोगों के लिए करुणा से भर गया था जो फँस गये थे, पर एक जापानी होने के कारण उनको अपने ऊपर इसलिये ग्लानि हो रही थी कि वह अछूते बच गये। वह भागते जाते थे और प्रार्थना करते जाते थे, "हे भगवान अग्नि से इन सबकी रक्षा कर, प्रभु रक्षा कर।"

उन्होंने सोचा कि वह बाईं तरफ से आग को बचाते हुए किनारे-किनारे चले जायेंगे। इसलिए वह वापस केनन पुल की ओर भागे और काफी दूर तक नदी के किनारे-किनारे चलते रहे। उन्होंने कई जगह सड़क पार करने की कोशिश की पर हर जगह रास्ता रुका हुआ था, इसलिये वह योगोकोवा रेलवे स्टेशन की ओर भागे। योगोकोवा स्टेशन की रेलवे लाइन सारे शहर को अर्ध-वृत्त में लेती थी। आखिर वह एक जलती गाड़ी के पास पहुँचे। स्टेशन पर हुए विनाश को देखकर उन पर इतना असर हुआ कि वह उत्तर में गिओन की तरफ भागे। जो वहां से दो मील दूर पहाड़ियों की तराई में एक उपनगर था।

रास्ते भर उन्हें भीषण रूप से घायल और जले हुये व्यक्ति मिलते रहे। उन्हें अपने ऊपर ग्लानि अनुभव हो रही थी इसलिये वह जल्दी-जल्दी दायें-बायें घूमते और किसी से

कहते, "मुझ पर आप जैसी कोई विपत्ति नहीं इसलिये क्षमा करें।" गिओन के पास पहुँचकर उन्होंने गांव वालों को देखा जो मदद के लिए शहर की ओर जा रहे थे। उन्हें देखते ही कई लोग बोल उठे, "देखो! इस आदमी को जरा भी चोट नहीं लगी।" गिओन पहुँचकर वह बड़ी नदी ओटा के दाहिने किनारे पर नीचे की ओर भागते रहे और अन्त में वह फिर आग के पास आ पहुँचे। नदी के दूसरी ओर आग नहीं थी इसलिये उन्होंने अपनी कमीज-जूते उतारे और नदी में कूद पड़े। जब वह मंझधार में पहुंचे तो भय और थकावट के कारण उनकी शक्ति जवाब-सा देने लगी। इसके अतिरिक्त वहां बहाव भी काफी तेज था। वह अब तक लगभग सात मील चल चुके थे। होते-होते वह पानी में डूबने उतराने लगे, लेकिन फिर भी वह कोशिश करते रहे। वे मन ही मन प्रार्थना कर रहे थे कि 'हे भगवान नदी पार करने में मेरी मदद करो। मेरे लिये इससे बड़ा अभिशाप नहीं हो सकता कि मैं डूब कर मर जाऊँ जबकि मैं ही एक ऐसा आदमी बचा हूँ जो बिलकुल भी घायल नहीं हुआ।' किसी प्रकार सारी शक्ति लगाकर उन्होंने दो-चार हाथ मारे और कुछ दूर बहने के बाद वह किनारे लग गये।

किनारे पर आते ही वह फिर आगे शिनटो खण्डहर के पास तक भागते चले गये। मार्ग में आश्चर्यजनक रूप से उनकी मुलाकात अपनी पत्नी से हो गई। जो गोद में अपने दुध-मुँहे बच्चे को लिए हुए थीं। श्री टानीमोटो ने अब तक

के हृदय-द्रावक दृश्यों को देखकर केवल इतना ही कह सके, "ओह तुम सुरक्षित हो !" और श्रीमती टानीमोटो ने यूशिदा में रात बिताने के बाद से सुबह घर आकर बम फटने, मकान गिरने और उसमें बच्चे को गोद में लिये हुए दबने और आखिर ऊपर जरा-सा सूराख देखकर उसे बड़ा करने की कोशिश करके उसमें से बच्चे और बाद में स्वयं के बाहर निकलने की कहानी श्री टानीमोटो को बताई। श्री टानी-मोटो ने कहा कि वह अपने चर्च को देखना और पड़ोसी संघ के सदस्यों की मदद करना चाहते हैं, अत: वह अपने पितृ-गृह चली जायें। और वे लोग जिस प्रकार अचानक मिले थे, स्तम्भित-से वैसे ही अलग हो गए।

श्री टानीमोटो चलते-चलते ईस्ट परेड ग्राउंड पहुँच गये। जो आपातकालीन स्थिति के समय निष्कासन के हेतु नियत स्थल था और इस समय वह हृदय-विदारक दृश्य का स्थल बना हुआ था। जले हुए, शीशों से कटे हुए, जख्मों से खून बहते और उलटियां करते लोगों की कतारें की कतारें लगी थीं। दग्ध लोग कराह-कराह कर पानी-पानी चिल्ला रहे थे। उन्होंने किसी प्रकार एक बर्तन ढूंढ़ लिया और एक नल से पानी लाकर लोगों को पिलाना शुरू कर दिया, यह नल सौभाग्यवश अभी तक काम कर रहा था। जब वह तीस आदमियों को पानी पिला चुके तब उन्हें अनुभव हुआ कि वह काफी समय लगा रहे हैं। बहुत सारे लोग अपने हाथों को बढ़ाये "पानी-पानी" चिल्ला रहे थे। श्री टानीमोटो ने

एक बार उन लोगों को देखा और ज़ोर से बोले, "क्षमा कीजिये, मुझे बहुत सारे आदमियों की खबर लेनी है।" और वह हाथ में बर्तन लिये फिर नदी की ओर भागे। वहां वह एक रेत के गड्ढे में कूद पड़े जहां उन्होंने सैकड़ों सख्त घायल देखे जो जलते शहर से और अधिक दूर न जा सकते थे। एक भले-चंगे आदमी को देखते ही चारों ओर से पानी-पानी की आवाजें आने लगीं। टानीमोटो नदी से पानी ला-लाकर इन लोगों को पानी पिलाने लगे। यह एक गलती थी क्योंकि पानी गंदला और ज्वारभाटे का था। नदी में दो-तीन छोटी-छोटी नावें असानो पार्क से घायलों को ला रही थीं। टानीमोटो ने एक बार फिर लोगों से क्षमा मांगी और वापसी नाव पर चढ़ कर वह असानो पार्क पहुंचे। वहां पर उन्होंने पड़ौसी-संघ से सम्बन्धित चीजों को एक झाड़ी के नीचे पा लिया जो उनके निर्देशानुसार पहले ही वहां ले आई गई थीं। वहां उनके फादर क्लीनसोर्ग और दूसरे कैथोलिक मित्र भी मिले। परन्तु जब उन्होंने अपने परम मित्र फुकाई को न देखा तो उन्होंने पूछा, "फुकाई कहां है?"

"वह हमारे साथ नहीं आना चाहता था और वापस भाग गया।" फादर क्लीनसोर्ग ने उत्तर दिया।

× × ×

जब कुमारी ससकी ने अपने साथ दबी लड़कियों की आवाजें सुनीं तब उन्होंने उनसे बातें करनी शुरू कर दीं।

उनके सबसे पास एक स्कूल की लड़की दबी थी, जिसने कहा कि उसकी पीठ टूट गई है। कुमारी ससकी ने जवाब दिया कि मैं यहां से हिल भी नहीं सकती और मेरा बायां पैर कट गया है। कुछ देर बाद उन्होंने ऊपर लोगों को मलवा हटाते सुना। खोदने वालों ने कई लोगों को निकाल लिया। जब उसने हाई स्कूल की लड़की पर से मलवा हटाया तो उसे पता चला कि उसकी पीठ टूटी नहीं थी और वह किसी तरह रेंग कर बाहर निकल गई। जब कुमारी ससकी ने आवाज दी तब उसने कई किताबें हटाकर उनके लिये सुरंग-सी बना दी जिससे वह बाहर आ सकें। कुमारी ससकी उसका पसीने से लथपथ चेहरा देख सकती थीं। उसने कहा, "अब बाहर आ जाइए देवी जी !" कुमारी ससकी ने कोशिश की, फिर वह बोलीं, "मैं हिल भी नहीं सकती।" उस आदमी ने थोड़ा सामान और हटाया और इनसे पूरी ताकत लगाने को कहा। लेकिन कुमारी ससकी के नितम्बों पर पुस्तकों का बहुत भार था और अन्त में उसने देखा कि पुस्तकों पर एक किताबों की अलमारी पड़ी थी और उस अलमारी को एक भारी शहतीर ने दबा रखा है।

"ठहरो ! मैं सरिया लाता हूं।" उस आदमी ने कहा और वह चला गया। काफी देर बाद जब वह वापस आया तो गुस्से में था, जैसे इस प्रकार दबने में कुमारी ससकी का ही दोष था। उस सुरंग-सी के पास मुंह लगाकर वह जोर से बोला, "हमारे पास तुम्हारी मदद के लिये आदमी नहीं

हैं। तुमको अपने आप ही बाहर आना होगा।"

"यह असम्भव है। मेरा बायां पैर···।" कुमारी ससकी ने कहा पर पूरा वाक्य सुने बिना ही वह आदमी चला गया।

काफी देर बाद कई आदमी आए और उन्होंने कुमारी ससकी को बाहर निकाला। यद्यपि उनका पैर बिलकुल कट कर अलग तो नहीं हो गया था फिर भी वह बुरी तरह टूट और जगह-जगह से कट गया था और घुटने के नीचे का हिस्सा लटक-सा रहा था। जब लोगों ने उन्हें फैक्टरी के आंगन में बिठाया तब पानी बरस रहा था। जब पानी ज्यादा जोर से बरसने लगा तो किसी ने लोगों को फैक्टरी के हवाई सुरक्षा-स्थल में जाने को कहा। एक बुरी तरह घायल स्त्री ने उनसे कहा, "तुम भी आ जाओ।" परन्तु कुमारी ससकी हिलडुल भी न सकती थीं अतः वह वहीं वर्षा में पड़ी रहीं। अन्त में एक आदमी ने एक मुड़े हुए टीन को एक सरिये के साथ इस तरह टिकाया जिससे पानी से रक्षा हो सके और कुमारी ससकी को गोद में उठाकर उसके नीचे बैठा दिया। वह उसकी कृतज्ञ हुई कि तब तक वह दो और भीषण रूप से आहत व्यक्तियों को ले आया। इनमें से एक तो औरत थी जिसका एक स्तन ऐसे लगता था जैसे कैंची से काट दिया गया हो और दूसरा एक आदमी था जिसका सारा चेहरा जल गया था। इसके बाद कोई वापस नहीं आया। कुछ देर बाद वर्षा समाप्त हो गई और यद्यपि घटाएं छाई रहीं पर दोपहर के बाद का मौसम साफ था और रात्रि के पहले तीनों

अभागे व्यक्तियों को, जो एक गंदे टोन के टुकड़े के नीचे पड़े थे, बड़ी बुरी दुर्गन्ध महसूस होने लगी।

× ×

नोबीरो-चो पड़ौसी संघ के भूतपूर्व प्रधान श्री योशिदा एक शक्तिशाली पुरुष थे। वह कैथोलिक सन्तों के सम्प्रदाय के थे। जब वह जिले के हवाई आक्रमण निरोध के इन्चार्ज थे, तब उन्होंने इस बात की डींग मारी थी कि आग भले ही सारे हिरोशिमा को निगल जाय, पर वह कभी नोबोरो-चो तक नहीं आएगी। बम ने उनके घर को गिरा दिया था और उनके पैर एक भारी लोहे के जोड़ के नीचे दब गये थे। वह मिशन हाउस के सामने सड़क की दूसरी ओर पड़े थे और वहां से मिशन हाउस साफ दिखाई पड़ रहा था। सड़क पर सैकड़ों लोग भागे जा रहे थे और इसीलिये जब हड़बड़ी में श्रीमती नकामुरा अपने बच्चों के साथ और फादर क्लीन-सोर्ग श्री फुकाई को अपनी पीठ पर लादे हुये वहां से गुज़रे तो उनको न देख पाए। उस समय वह एक प्रकार से सामू-हिक दुर्दैव का ही एक अंग थे, उनकी सहायता की चीखों पर किसी ने ध्यान नहीं दिया क्योंकि चारों ओर लोग इसी प्रकार चीख पुकार मचा रहे थे। सब लोग अपने रास्तों पर चलते गये।

सारा नोबीरो-चो ध्वस्त हो गया था और उसमें आग भी लगना शुरू हो गयी। श्री योशिदा ने देखा कि मिशन हाउस की लकड़ी की इमारत, जो कि एकमात्र साबुत मकान

था, भी धीरे-धीरे आग की लपेट में आती जा रही थी। गर्मी बढ़ती जा रही थी और अब वह अनुभव भी होने लगी थी। इसके बाद लपटों ने उनके मकान को भी लेना शुरू कर दिया। दुराशा की अन्तिम दशा में उन्होंने अन्तिम बार जोर लगाया और भाग्यवश वह निकल आए। इसके बाद वह उस नोबोरी-चो से भागे जिसके बारे में उन्होंने कहा था कि वहां आग कभी भी न लगेगी और जो इस समय आग का शोला बन चुका था। उसी समय से उनका व्यवहार वृद्धों जैसा हो गया और दो महीने बाद तो उनके बाल तक सफेद हो गये थे।

× × ×

गर्मी से बचने के लिए डाक्टर फ़ूजी गर्दन तक पानी में खड़े थे, लेकिन तेज हवा के कारण वहां खड़े रहना मुश्किल हो गया क्योंकि पानी कम होने पर भी लहरें इतनी तीव्र गति से आ रही थीं कि पुल के नीचे खड़े लोगों का पानी में पैर टिकना मुश्किल था। अतः डाक्टर फ़ूजी किसी तरह किनारे पर गये और दो बची हुई नर्सों के साथ-साथ नदी के किनारे-किनारे ऊपर की ओर चलने लगे। लगभग दो सौ गज जाने के बाद असानो पार्क के पास वह एक रेत के गड्ढे में आ पहुँचे। वहां बहुत सारे घायल रेत में पड़े हुए थे। डाक्टर माछी भी वहीं अपने परिवार के साथ पड़े थे। उनकी लड़की के, जो विस्फोट के समय घर से बाहर थी, हाथ-पैर जल गये थे पर सौभाग्यवश उसका चेहरा बच गया था।

यद्यपि डाक्टर फूजी की बांह बुरी तरह दुख रही थी, फिर भी उन्होंने लड़की के घावों का सूक्ष्म निरीक्षण किया। इसके बाद वह वहीं पर लेट गये। इतनी विपदाओं के बाद भी उनको लज्जा अनुभव हो रही थी और जब उन्होंने डा० माछी को केवल एक फटा और खून से रंगा जांघिया पहने देखा तब वह भिखारी जैसे लग रहे थे।

दोपहर के बाद जब आग घटने लगी तब उन्होंने अपने खानदानी मकान में जाने का निश्चय किया जो नगत्सुका में था। उन्होंने डाक्टर माछी को भी अपने साथ चलने को कहा पर उन्होंने कहा कि चूँकि उनकी लड़की की हालत खराब है अतः वह रात यहीं गुजारेंगे। वहां से डाक्टर फूजी यूशिदा गये। वहां उन्होंने अपने कुछ रिश्तेदारों के खंडित मकानों से कुछ फर्स्ट-एड (प्राथमिक चिकित्सा) का सामान ढूँढ़ लिया जो कि वह वहां पहले ही रख गये थे। इसके बाद उन्होंने नर्सों की मरहम-पट्टी की और नर्सों ने उनकी। अब यद्यपि सड़क पर उतनी भीड़ नहीं थी फिर भी हर जगह सीढ़ियों पर लोग बैठे या लेटे थे। कुछ उल्टी कर रहे थे, कई पीड़ाओं से कराहते मानो मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे थे और बहुत सारे मर चुके थे। ज्यों-ज्यों वह नगत्सुका की ओर बढ़ते जाते लाशों की संख्या भी बढ़ती जाती थी। डाक्टर को आश्चर्य हुआ—क्या एक मोलोतोव फूलों की टोकरी यह सब कर सकती थी ?

जब वह अपने पुराने घर पहुँचे तो शाम हो चुकी थी।

यद्यपि यह मकान विस्फोट केन्द्र से पांच मील दूर था, फिर भी उसका छत गिर गयी थी और सारी की सारी खिड़कियां टूट गई थीं।

× × ×

सारा दिन लोग असानो पार्क में आते रहे। यह स्थान विस्फोट-स्थल से काफी दूर था इसलिए इसके बांस, देवदार और दूसरे पेड़ों पर अभी भी हरियाली थी। इसी हरियाली को देखकर लोग चले आ रहे थे क्योंकि उनका ख्याल था कि अगर अमेरिकन दुबारा आए तो वे मकानों पर ही हमला करेंगे। वह स्थान लोगों को ठंडक और जीवन का केन्द्र नजर आता था। वहां का शानदार पत्थरों में बना बाग, छोटे-छोटे तालाब और धनुषाकार पुल ज्यों-के-त्यों थे। कई लोगों का ख्याल था कि लोग अधिकतर वहां इसलिये भागे क्योंकि उनका विचार था कि वहां पत्तों के नीचे छुपने की गुंजायश थी।

श्रीमती नकामुरा और उनके बच्चे काफी पहले पहुँचने वाले लोगों में से थे। वहां उन्होंने नदी के पास एक बांसों के झुरमुट में अपना स्थान बना लिया। उनको बहुत जोर से प्यास लगी हुई थी इसलिये उन्होंने नदी का पानी पिया। परन्तु पानी पीते ही उनका जी मिचलाने लगा और कै होने लगी, और इसके बाद सारा दिन उबकाई आती रही। दूसरों का भी, जिन्होंने पानी पिया, यही हाल हुआ। उन लोगों ने सोचा कि अमेरिकनों ने शायद कोई गैस फेंकी है और यह

उसी का असर है परन्तु शायद इसका कारण अणु-विखंडन से उत्पन्न विद्युत गंध थी।

जिस समय फादर क्लीनसोर्ग अपने मित्रों की ओर सिर हिलाते आ रहे थे, उस समय नकामुरा परिवार और भी बुरी दशा में था। श्रीमती नकामुरा के पास इवासाकी नाम की एक महिला और बैठी थी। वह मिशन हाउस के पास रहती थी। जब वे लोग उनके पास आये तो उन्होंने कहा कि या तो उन लोगों को भी उनके साथ बैठना होगा नहीं तो वह भी उनके साथ-साथ जाएँगी। इस पर फादर क्लीन-सोर्ग ने कहा, "मैं मुश्किल से ही जानता हूँ कि इस समय सुरक्षित स्थान कौन-सा है?" और वे लोग आगे चले गये। वह वहीं पर ठहरी रहीं और दिन ढलने के करीब, जबकि उसको कोई जख्म या जलने का घाव नजर नहीं आ रहा था वह मर गयी।

फादर क्लीनसोर्ग वगैरह कुछ और आगे गये और एक जगह नदी के किनारे झाड़ियों के नीचे रुक गये। फादर ला-सैले तुरन्त जमीन पर लेट गए और सोने की तैयारी करने लगे। पुरातन-विज्ञान का छात्र, जो इस समय स्लीपर पहने था, अपने साथ दो जोड़ी जूते लाया था। यहां पहुँचकर जब उसने बण्डल खोला तो देखा एक जोड़ा गिर गया। वह थोड़ी दूर लौटकर गया पर उसे केवल दाहिने पैर का ही जूता मिला। जब वह वापस लौटकर आया तो उसने कहा, "यह सचमुच बड़ा भारी मजाक है कि अब चीजों की कोई

कीमत नहीं रही। कल तक मेरे जूते मेरे लिए एक बड़ी चीज थे, पर आज मुझे उनकी कोई चिन्ता नहीं। एक जोड़ा ही काफी है।"

फादर सीसलिक बोले, "ठीक है! जब मैं चलने लगा तो सोचा कि पुस्तकें ले लूँ लेकिन बाद में यह विचार ही सही पाया कि यह समय पुस्तकों का नहीं है।"

× × ×

जब श्री टानीमोटो हाथ में बर्तन लिये पार्क में पहुँचे तब वह पूरी तरह भर चुका था। वहां पर जीवित या मृत का पता लगाना बड़ा कठिन था क्योंकि अधिकांश लोग निश्चेष्ट पड़े थे, पर उनकी आंखें खुली की खुली थीं। फादर क्लीन-सोर्ग के लिये, जो कि एक पाश्चात्य व्यक्ति थे, नदी किनारे झुरमुटों में फैली शान्ति, जहां कि सैकड़ों भीषण रूप से घायल साथ-साथ पड़े थे, अपने जीवन का शायद सबसे मर्मान्तक अनुभव था। घायल शान्त पड़े थे, शायद ही कोई रो या चीख-पुकार मचा रहा था, कराहों की ध्वनि भी बहुत कम सुनाई देती थी। कोई भी जोर-जोर से चीखकर नहीं मरा यहां तक कि बच्चे तक भी नहीं चीख रहे थे और बहुत कम लोग बोलते थे। फादर क्लीनसोर्ग जब उन लोगों को पानी देते, जिनके चेहरे जलने से काले पड़ चुके थे, तो वे जरा उठते और पानी पीने के बाद जरा झुककर उनको धन्यवाद देते।

श्री टानीमोटो ने संतों का स्वागत किया और दूसरे मित्रों की खोज में चारों ओर नजर दौड़ाई। उन्होंने मैथो-डिस्ट स्कूल के डायरैक्टर की पत्नी श्रीमती मत्सुमोटो को देखा और उनसे पानी के लिये पूछा। जब उन्होंने पानी के लिये हाँ कहा तो वह पार्क में बने छोटे-छोटे तालाबों में से एक में से पानी ले आये। इसके बाद उन्होंने चर्च वापस जाने का निश्चय किया। वह उसी मार्ग से रवाना हुए जहां से आए थ, लेकिन कुछ दूर सड़क पर इतनी भीषण आग लगी थी कि उनको लौटना पड़ा। वह नदी के किनारे चलने लगे। वह किसी नाव की खोज में थे जिससे भीषण रूप से घायल लोगों को असानो पार्क में फैलती आग से दूर ले जाया जाए। थोड़ी देर बाद उनको एक चपटी पेंदी की नाव मिली पर उसके अन्दर और पास जो नारकीय दृश्य था उससे वह दहल गये। पांच आदमी, जो लगभग पूर्ण नग्न थे, बुरी तरह जलकर मरे पड़े थे। वे जिस स्थिति में थे उसी में मर गये थे क्योंकि उनकी लाशों को देखकर यह पता चला कि जिस समय विस्फोट हुआ, वे नाव को नदी में ढकेलने की कोशिश कर रहे थे।

श्री टानीमोटो ने उनको नाव पर से हटाया, पर जब वह उन लाशों को हटा रहे थे, तब मुर्दों को छेड़ने की एक भयावह भावना से वह भर उठे। इसलिये उन्होंने जोर से चिल्लाकर कहा, "अपनी नाव लेने के लिए कृपया मुझे क्षमा करें। मुझे जो जीवित हैं उनके लिए इसका उपयोग करना

चाहिये।" नाव में कोई पतवार नहीं थी इसलिये उन्होंने एक लम्बे से बांस को ले लिया और उसे पार्क में उस स्थान की ओर ले गए जहां ज्यादा भीड़ थी। इसके बाद उन्होंने घायलों को दूसरी पार ले जाना शुरू किया। एक बार में वह केवल बारह आदमी ले जा सकते थे और नदी बीच में काफी गहरी थी, इसलिए फेरा करने में काफी समय लगता था। उस दिन कई घंटों तक वह यह काम करते रहे।

दोपहर के करीब आग असानो पार्क में भी लगनी शुरू हो गयी। श्री टानीमोटो ने उस आग को तब देखा जब वह दूसरी ओर से लौट रहे थे। बहुत सारे लोग नदी के पास आ गये थे। किनारे उतरते ही वह ऊपर गए और जोर से चिल्लाए, "जितने भी जवान आदमी हैं और जो अधिक घायल नहीं हुए हैं, मेरे पास आ जाएँ।" फादर क्लीनसोर्ग, फादर शिफर और फादर ला-सैले को नदी के किनारे के पास ले गए। इसके बाद वह श्री टानीमोटो के वालंटियरों में सम्मिलित हो गए। श्री टानीमोटो ने आसपास जो भी बर्तन मिले उसे लाने को कहा और दूसरे लोगों से जलती झाड़ियों को कपड़े से पीटकर बुझाने के लिये कहा। जब बर्तन आ गए तो उन्होंने एक जोहड़ से बाग तक आदमियों को खड़ा करके लाइन लगा ली। वे लगभग दो घण्टे तक आग से संघर्ष करते रहे और अन्त में उसे बुझा दिया। लेकिन जिस समय श्री टानीमोटो व दूसरे लोग आग से लड़ रहे थे, घबराये लोग नदी के किनारे पर इकट्ठे होते जा रहे

थे। आग की तेजी के साथ भीड़ का भी जोर नदी की ओर पड़ा और इसका परिणाम यह हुआ कि जो लोग नदी किनारे सबसे आगे थे, उनमें से कुछ नदी में गिर गए। इस तरह डूबने वालों में मैथोडिस्ट स्कूल की श्रीमती मत्सुमोटो व उनकी पुत्री भी थीं।

आग बुझाकर जब फादर क्लीनसोर्ग वापस आए तब उन्होंने पाया कि फादर शिफर का खून अभी भी जारी था और वह पीले पड़ गए थे। कुछ लोग चारों ओर खड़े देख रहे थे। तभी फादर शिफर बुड़बुड़ाये, "ऐसे लगता है कि मैं मर चुका हूँ।"

"अभी नहीं।" फादर क्लीनसोर्ग ने कहा। वह अपने साथ डाक्टर फूजा का फर्स्ट-एड का थैला ले आए थे। कुछ दूर पर उन्होंने डाक्टर कण्डा को देखा। वह उनके पास गए और उनसे फादर शिफर की मरहम-पट्टी कर देने की प्रार्थना की। डाक्टर कंडा इस समय सर को हाथों में दबाए बैठे थे। उनकी आंखों के सामने ही उनकी पत्नी व पुत्री दबकर मर गयी थीं। "मैं कुछ नहीं कर सकता।" डाक्टर कंडा ने टूटे स्वर में जवाब दिया। फादर क्लीनसोर्ग यह सुनकर वापस चले आये। उन्होंने फादर शिफर के सिर पर और पट्टियां बांध दीं और एक ढलान पर इस तरह लिटा दिया कि उनका सिर ऊपर रहे। इसका परिणाम यह हुआ कि खून शीघ्र ही रुक गया।

इसी समय विमानों के आने की आवाज सुनायी दी।

जिस जगह श्रीमती नकामुरा वगैरह थीं वहां पर कोई आदमी जोर से चीखा, "वे फिर आ रहे हैं।" इसके साथ ही एक डबलरोटी वाले ने जोर से कहा, "जो कोई भी सफेद कपड़े पहने हो, उतार दे।" श्रीमती नकामुरा ने अपने बच्चों के कपड़े उतार दिए। इसके बाद उन्होंने छाता खोला और सब उसके नीचे बैठ गये। बहुत सारे लोग, जिनमें कुछ भयं-कर रूप से घायल और जले हुए थे, झाड़ियों के नीचे घुस गये और तभी बाहर आये जब आकाश में भनभनाहट बिल्कुल समाप्त हो गयी।

थोड़ी देर में पानी बरसने लगा। श्रीमती नकामुरा ने अपने बच्चों को और भी छाते में समेट लिया। बूँदें आश्-चर्यजनक रूप से बड़ी थीं और कोई चिल्लाया, "अमेरिकन हमारे ऊपर गैसोलीन (ज्वलनशील गैस) डाल रहे हैं। वे फिर से आग लगा देंगे।" यह सिद्धांत क्षण भर ही में पार्क के इस कोने से उस कोने तक फैल गया कि हिरोशिमा के इतने अधिक जलने का कारण यह था कि एक जहाज ने हिरोशिमा पर गैस फैला दी और इसके बाद किसी तरह क्षण भर में उसे आग लगा दी गयी। परन्तु ये बूँदें शायद पानी की थीं। और ज्यों-ज्यों बूँदें गिरती थीं, हवा तीव्र से तीव्रतर होती जा रही थी और तभी अचानक एक जोर का बवंडर आया। इसका कारण शायद जलते नगर से अत्यन्त उष्णता का एक स्थान से दूसरे पर जाना था। बवंडर इतना तेज था कि बड़े-बड़े पेड़ गिर गये और छोटे पेड़ जड़ से

उखड़कर हवा में उड़ गये। ऊपर आसमान में चौड़ी-चपटी चीजों का एक बगूला उड़ा जा रहा था। बगूले में छतों की टीन के टुकड़े, कागज, दरवाजे और चटाइयों के टुकड़े आकाश में उड़े चले जा रहे थे। फादर क्लीनसोर्ग ने फादर शिफर की आंखों पर कपड़ा रख दिया जिससे वह कहीं उन्मत्त न हो जाएँ। आंधी से श्रीमती मुराटा, जो नदी के पास बैठी थीं, लुढ़क गईं और एक पथरीली जगह पर गिरीं। गिरने से उनके पैर खून से लथपथ हो गये थे। बगूले ने एक झरने के पानी को सोख लिया और अन्ततः वह नदी की ओर चला गया।

बवण्डर के बाद श्री टानीमोटो घायलों को दूसरे किनारे पर ले जाने लगे। इधर फादर क्लीनसोर्ग ने पुरातन विज्ञान के छात्र से नगर-केन्द्र से तीन मील दूर नगत्सुका में जोसट नोविशियेट जाने को कहा जिससे वहां के सन्त फादर शिफर और फादर ला-सैले की सहायता को आ सकें। छात्र यह सुनकर श्री टानीमोटो की नाव से नदी पार गया और वहां से नगत्सुका रवाना हो गया। फादर क्लीनसोर्ग ने श्रीमती नकामुरा से कहा कि अगर वह चाहें तो भक्तों के साथ नोविशियेट जा सकती हैं। उन्होंने कहा कि उनके साथ सामान है और बच्चे भी बीमार हैं, बार-बार वमन कर रहे हैं, इसलिये वह नहीं जा सकतीं। इस पर फादर क्लीनसोर्ग ने कहा कि नोविशियेट के फादर दूसरे दिन एक ठेला लाकर उनको ले जा सकते हैं।

शाम होने के कुछ देर पहले श्री टानीमोटो जब किनारे पर आए तो उन्होंने लोगों को खाने के लिए मांगते सुना। श्री टानीमोटो ने इस विषय में फादर क्लीनसोर्ग से सलाह करके निश्चय किया कि श्री टानीमोटो के पड़ौसी संघ और मिशन के हवाई सुरक्षा गृहों में से कुछ चावल ले आए जाएँ। फादर सीसलिक और दो-तीन आदमी उनके साथ गये।

× ×

जब वे लोग ध्वस्त हुए मकानों में पहुँचे तो उनको यह भी पता नहीं था कि वे कहां हैं। ढ़ाई लाख के नगर में प्रभात से तीसरे पहर तक के परिवर्तनिक दृश्य चौंका देने वाले थे। सड़कें गर्म गारे से भरी थीं। पूरे रास्ते में उन्हें केवल एक जीवित स्त्री मिली।

मिशन पर श्री टानीमोटो ने बाकी लोगों को छोड़ दिया और आप आगे चले गए। मिशन की बिल्डिंग नष्ट हो चुकी थी। उन्होंने बाग में एक कद्दू को देखा जो बेल में लगा-लगा ही भुन गया था। उन्होंने और फादर सीसलिक ने जब उसे चखा तो वह अच्छा लगा। उनको अपनी भूख पर अचरज हुआ और उन्होंने उसे काफी खाया। इसके बाद उन्होंने थोड़े-से चावल और कद्दू लिए। उन लोगों ने जमीन में से खोदकर काफी आलू निकाले, जो बहुत अच्छी तरह भुन गए थे। इसके बाद वे वापस रवाना हुए।

रास्ते में श्री टानीमोटो भी उनके साथ मिल गए। एक

आदमी कहीं से कुछ बर्तन ले आया। पार्क में पहुँचकर श्री टानीमोटो ने कुछ कम घायल स्त्रियों को खाना पकाने के काम पर लगा दिया। फादर क्लोनसार्ग ने नकामुरा परिवार को कुछ कद्दू खाने को दिए, पर वे अधिक देर तक उनके पेट में ठहर नहीं सके। सब मिलाकर लगभग सौ व्यक्तियों के लायक खाना हो गया।

अन्धेरा होने के पहले श्री टानीमोटो को अपने पड़ौस की एक बीस वर्षीया लड़की श्रीमती कमाई मिली। वह झुकी हुई जमीन पर बैठी थी और उसका छोटा-सा शिशु उसकी बांहों में था। शायद शिशु दिन भर से ही मरा हुआ था। ज्योंही उसने श्री टानीमोटो को देखा, वह उछलकर खड़ी हो गई और बोली, "क्या आप कृपया मेरे पति को खोज देंगे।"

श्री टानीमोटो को पता था कि कल ही उसका पति फौज में जबरन भर्ती कर लिया गया था। वह और उसकी पत्नी दोपहर को उसका मन बहलाव करते रहे थे जिससे वह अपने पति को भूल जाय। कमाई को शहर के केन्द्र में पुराने किले के निकट चुगोकु क्षेत्रीय सेना मुख्यालय में ले जाया गया था जहां लगभग चार हजार फौज थी। दिन भर श्री टानीमोटो ने जिस प्रकार क्षत-विक्षत सैनिकों को देखा, उससे वह इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि जिस किसी भी चीज से हिरोशिमा पर प्रहार हुआ है उससे बैरकें निश्चित ही भयंकर रूप से ध्वस्त हो गई होंगी। उनको पता था कि

अगर खोज भी की जाए तो भी श्रीमती कमाई के पति के मिलने की आशा नहीं थी। लेकिन फिर भी उन्होंने कहा, "मैं कोशिश करूँगा।"

"आपको उन्हें ढूँढ़ना ही होगा।" वह बोली, "वह हमारे बच्चे को बहुत प्यार किया करते थे। मैं उनको फिर से देखना चाहती हूँ।" श्री टानीमोटो की आंखों में आंसू भर आए थे।

३

★★★

शाम को हिरोशिमा की सात नदियों में जापानी नौसेना की एक मोटर किश्ती ऊपर-नीचे आ जा रही थी। यह मोटर किश्ती जिन स्थानों पर अधिक भीड़ होती, रुकती। नदी किनारे, रेत के गड्ढों में जहां सैकड़ों घायल पड़े थे, पेड़ों के पास और दूसरी जगहों पर यह किश्ती रुकती और एक घोषणा करती। असानो पार्क के सामने जब यह आई तो एक छोटा अफसर मेगाफोन से घोषणा कर रहा था, "धैर्य रखिए। एक जहाजी अस्पताल आपकी मदद करने आ रहा है।" किश्ती, पर साफ वर्दी में एक अफसर और सबसे ऊपर डाक्टरी सहायता की बात जब सुनी तो असानो

पार्क के लोगों में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। बारह नारकीय घण्टों के बाद यह पहला बार था जब लोगों ने सहायता की बात सुनी थी।

श्रीमती नकामुरा ने रात पार्क में ही बिताने का निश्चय किया। उनको विश्वास हो गया था कि एक डाक्टर आएगा और उनकी उल्टियां रोक देगा। श्री टानीमोटो ने फिर से घायलों को उस पार ले जाना शुरू कर दिया। फादर क्लीनसोर्ग ने प्रार्थना की और जमीन पर ही लेट कर सो गए। वह अभी सोए ही थे कि श्रीमती मुराटा ने जान-बूझकर उनको हिलाकर कहा, "फादर क्लीनसोर्ग! क्या आपने सांध्य प्रार्थना कर ली।"

"हां।" उन्होंने कुछ नाराजी से कहा और उन्होंने फिर सोने की कोशिश की, पर वह सो न सके। अप्रत्यक्ष रूप से श्रीमती मुराटा यही चाहती थीं और उन्होंने उनसे बातचीत शुरू कर दी। बातों ही बातों में उन्होंने पूछा कि नोविशियेट के भक्तजन कितनी देर में आ जाएँगे, जिन्हें बुलाने के लिए आपने आदमी भेजा है।

फादर क्लीनसोर्ग ने जिस छात्र को भेजा था, वह शाम को साढ़े चार बजे नोविशियेट पहुँचा। नोविशियेट वहां से तीन मील दूर पहाड़ियों में था। जब छात्र वहां पहुँचा तो वहाँ के १६ भक्त उस समय सहायता कार्यों में लगे हुए थे। यद्यपि उनको अपने शहर के साथियों की चिन्ता तो थी, पर उनको यह पता नहीं था कि वे कहां हैं और उनको कहां

खोजा जाय। जब छात्र ने सारा हाल सुनाया तो उन्होंने बांसों का स्ट्रेचर बनाया और छः आदमी असानो पार्क रवाना हो गए। वे ओटा नदी के किनारे से होते हुए आये और आग की गर्मी के कारण उनको दो बार नदी में उतरना पड़ा। मिसासा पुल पर उन्होंने सैनिकों की एक लम्बी पांत देखी। वे नगर केन्द्र में बने चुगोकू क्षेत्रीय सेना मुख्यालय से विक्षिप्तों की भांति मार्च करते आ रहे थे। वे सब के सब भयंकर रूप से जले हुए थे और एक दूसरे का सहारा लिए चल रहे थे। घायल और जले घोड़े पुल पर सिर झुकाए चले जा रहे थे।

जब ये लोग पार्क में पहुँचे तो अंधेरा हो चुका था। दिन में जो बवण्डर आया था उससे बड़े-बड़े पेड़ रास्ते में पड़े हुए थे और इस कारण चलना अत्यन्त मुश्किल हो रहा था। आखिरकार जिस समय श्रीमती मुराटा ने प्रश्न पूछा ही था, ये लोग पहुँच गए। वहां पहुँचकर उन्होंने अपने मित्रों को शराब और गरम-गरम चाय दी।

इसके बाद इस बात पर विचार हुआ कि फादर शिफर और फादर ला-सैले को किस प्रकार नोविशियेट ले जाया जाए। उनको इस बात का भय था कि लकड़ी के स्ट्रेचरों पर लेकर बाग में टूटे वृक्षों से होते हुए लेकर भटकने से ऐसा न हो कि इनका अधिक खून निकल जाय और वे मर जाएँ। इसी समय फादर क्लीनसोर्ग को श्री टानीमोटो का ख्याल आया और उन्होंने उनको बुलाया। श्री टानीमोटो ने

कहा कि वे जहां तक कहेंगे, वह उन्हें नाव में छोड़ आएँगे। जहां सड़क साफ नजर आयगी वहां वह उन्हें उतार देंगे। इस पर फादर शिफर को स्ट्रेचर पर डाल कर नाव पर ले जाया गया। साथ में दो आदमी और बैठ गए। श्री टानीमोटो बांस से ही नाव को ऊपर की ओर खेकर ले जाने लगे।

लगभग आधा घण्टा बाद श्री टानीमोटो घबराए हुए आए और उन्होंने बाकी साधुओं से दो लड़कियों को बचाने को कहा जो कंधों तक पानी में डूबी हुई थीं। कुछ लोग गए और उनको निकाल लाए। वे बुरी तरह से जल गई थीं। उनके परिवार का पता नहीं था कि कहाँ है? उन लोगों ने उन दोनों को फादर क्लीनसोर्ग के पास लिटा दिया और फिर फादर ला-सैले को ले गए। फादर सीसलिक ने सोचा कि वह पैदल भी नोविशियेट तक जा सकते हैं अत: वह भी दूसरे पार जाने के लिए श्री टानीमोटो की नाव में बैठ गए। फादर क्लोनसोर्ग काफी कमजोर थे इसलिए उन्होंने रात पार्क में ही बिताने का फैसला किया। उन्होंने अपने साथियों से कहा कि जब वे वापस आएँ तो एक ठेला भी लेते आएँ जिससे श्रीमती नकामुरा और उनके बीमार बच्चों को नोवि-शियेट पहुँचाया जा सके।

जब नाव धीरे-धीरे ऊपर को बढ़ी तो उन्होंने लोगों की सहायता के लिये चीखें सुनीं। यह चीखें अत्यन्त धीमी थीं परन्तु फिर भी एक औरत की आवाज कानों में पड़ी। वह कह रही थी, "यहां आदमी डूब रहे हैं, मदद करो—बचाओ,

पानी बढ़ रहा है।" यह आवाजें नदी किनारे एक रेत के गड्ढे में पड़े घायल लोगों की थीं और मकानों के जलते प्रकाश में नाव पर सवार लोगों ने देखा कि नदी की बढ़ती लहर ने उनको लगभग पूरा ढक लिया था। श्री टानीमोटो उनकी सहायता करना चाहते थे, परन्तु भक्तों ने पहले अपने को निर्दिष्ट स्थान पर उतारने को कहा। उनको डर था कि कहीं अधिक देर से फादर शिफर का प्राणान्त न हो जाय। इसलिए श्री टानीमोटो नाव को आगे ले जाते रहे। उन्होंने उनको जल्दी से उतारा और उस स्थान की ओर लौटे जहां उन्होंने आवाजें सुनी थीं।

रात में गर्मी था। गर्मी के बढ़ने का एक कारण नगर में लगी आग भी थी। जिन दो लड़कियों को श्री टानीमोटो निकाल कर लाये थे उनमें से छोटी ने फादर क्लीनसोर्ग से कहा कि उसे ठण्ड लग रही है। इस पर उन्होंने उसे अपनी जैकट उढ़ा दी। वह और उसकी बड़ी बहन बचाये जाने के पहले घण्टों पानी में पड़ी रही थीं। छोटी के शरीर पर जलने के बड़े-बड़े दाग थे और खारे पानी में खड़े रहने से उनको दुर्दयनीय पीड़ा हुई होगी। वह फिर जोर-जोर से कांपने लगी और कहा कि उसे सर्दी लग रही है। फादर क्लीनसोर्ग किसी से कम्बल मांग लाए और उसे उढ़ा दिया पर वह फिर भी कांपती रही। उसने कांपते-कांपते कहा, "ओह! बहुत ठंड लग रही है।" और तभी अचानक उसका कांपना बन्द हो गया। वह मर चुकी थी।

× ×

रेत के गड्ढे में श्री टानीमोटो ने लगभग बीस लोगों को पाया वह नाव को किनारे पर ले गये और उन्हें नाव पर आ जाने को कहा। लेकिन जब उनके कहने पर भी कोई नहीं उठा तो उन्होंने सोचा कि वे लोग उठ नहीं सकते अतः वे उन्हें उठाने गए। वह नीचे उतरे और एक स्त्री का हाथ पकड़ कर उसे उठाया पर अचानक उसका मांस इस तरह खिंच आया जैसे हाथ से दस्ताना खिंच आता है।

इसका उन पर इतना असर हुआ कि अपने को संयत करने के लिये क्षण भर को उन्हें बैठ जाना पड़ा। इसके बाद, यद्यपि वह काफी छोटे व्यक्ति थे, उन्होंने कई आदमियों और औरतों को उठाया। ये स्त्री-पुरुष बिलकुल विवस्त्र थे और उनकी पीठ, चेहरे और छातियों पर जलने के भीषण घाव थे। जलने के इन घावों को देखकर उन्हें अपने दिन भर देखे घावों की याद हो आई। इन घावों की स्थिति इस प्रकार थी—पहले तो ये पीले थे, इसके बाद लाल हुए और सूज गये। फिर मांस झलकने लगा और शाम को इनमें से पीव निकलने और दुर्गन्ध आने लगी। दूसरे किनारे पर एक ऊँची जगह, जहां लहर नहीं पहुँच सकती थी, वह उन जिंदा लाशों को लिटा आए, जो बार-बार उनके हाथों से फिसलने को होती थीं। अपने में साहस बनाये रखने के लिए वह बार-बार अपने को ही कहते थे, 'ये भी मनुष्य हैं।' उन सब को दूसरे किनारे सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने में उनके तीन फेरे लग गये। जब कार्य समाप्त हो गया तो उन्होंने आराम

करने का निश्चय किया और वह पार्क में चले गए।

किनारे से पार्क की ओर जाते समय श्री टानीमोटो से किसी का पांव कुचल गया, इसके साथ ही किसी की गुस्से भरी आवाज आई, "क्या मेरा हाथ दिखता नहीं।" श्री टानीमोटो को इस पर दुःख हुआ और इसके साथ ही उन्हें अस्पताली जहाज की याद आई। वह अभी तक क्यों नहीं आया। और वह वास्तव में कभी नहीं आया। उनका मन जहाज के नाविकों और डाक्टरों के प्रति क्रोध से भर उठा कि आखिरकार ये लोग अभी तक क्यों नहीं आए।

× × ×

शहर के किनारे अपने खानदानी घर में, जिसकी कि छत उड़ गई थी, डाक्टर फूजी रात भर भीषण दर्द में पड़े रहे। लालटेन की रोशनी में जब उन्होंने स्वयं अपना परी-क्षण किया तो पाया कि उनकी हँसली की हड्डी टूट चुकी थी, भीतरी चोटें काफी आई थीं और शायद कुछ पसलियां भी चटख गई थीं। अगर वह इतनी बुरी तरह घायल न होते तो असानो पार्क में घायलों की मदद कर रहे होते।

रात तक दस हजार घायल रैड क्रास अस्पताल पहुँच चुके थे। डाक्टर ससकी पट्टियां और मरहम की शीशी लिये चारों ओर घायलों में घूम रहे थे। उन्होंने अभी भी वही चश्मा पहन रखा था जो नर्स से लिया था। वह गम्भीर घावों की सबसे पहले पट्टी कर रहे थे। दूसरे डाक्टर जले घावों पर सैलिन सोल्यूशन के फाहे रख रहे थे। इससे अधिक

वे कुछ कर भी नहीं सकते थे। दिन भर डाक्टर ससको ने अस्पताल के बाहर नहीं देखा। अस्पताल के भीतर का दृश्य ही इतना भयानक था कि उनको यह ख्याल ही नहीं आया कि बाहर क्या दशा हुई होगी। छतें और पार्टीशन गिर गये थे और चारों तरफ मलवा, धूल, खून और कै बिखरी पड़ी थी। सैकड़ों की संख्या में लोग मर गए थे पर उनकी लाशों को हटाने वाला कोई नहीं था। अस्पताल की ओर से लोगों को कुछ चावल और बिस्कुट बांटे गए पर दुर्गन्ध इतनी थी कि बहुत कम ही भूखे थे। रात के तीन बजे, लगातार १९ घण्टे काम करने के पश्चात डाक्टर ससको की हालत यह हो गई कि वह और घावों की पट्टी नहीं कर सकते थे। इसलिये वह और उनके कुछ साथी चटाइयां लेकर बाहर निकले। गलियारे में, दालान में और बाहर हजारों घायल पड़े थे और सैकड़ों मर चुके थे। वह जल्दी-जल्दी अस्पताल के पीछे गये और एक जगह छुप कर कुछ नींद लेने के लिए लेट गए।

पर अभी उनको सोये मुश्किल से घंटा भर ही हुआ था कि उनके कानों में आवाजें आने लगीं, "डाक्टर हमारी मदद करो। भला इस समय तुम कैसे सो सकते हो।" इसलिये डाक्टर ससकी पुनः उठे और काम में जुट गये। काफी सवेरे उन्हें मुकेइहारा में अपनी माँ की याद आई जो हिरोशिमा से तीस मील दूर था। वह अक्सर रात को घर चले जाया करते थे। वह यह सोचकर बड़े मायूस हो गए कि उनकी माँ

सोचेगी कि वह मर गये हैं।

× × ×

नदी पर जिस स्थान पर श्री टानीमोटो ने भक्तों को छोड़ा था, वहाँ चावलों व केकों का एक बड़ा ढेर लगा था जिसे एक बचाव पार्टी घायलों के लिये लाई थी। पर अभी तक उसे बांटा नहीं गया था। नोविशियेट जाने के पहले भक्तों ने उनको कई स्थानों पर बांटा और खुद भी खाया। कुछ देर बाद सैनिकों का एक दल आया। उसके अफसर ने जब साधुओं को किसी विदेशी भाषा में बातचीत करते देखा तो उसने तलवार निकाल ली और तेजी से पूछा कि वे कौन हैं? एक साधु ने उसको शांत किया और बताया कि वे शत्रु नहीं मित्र हैं, अर्थात् वे जर्मन हैं। जब अफसर ने यह सुना तो उसने उनसे क्षमा मांगी और बताया कि ऐसी खबरें आई हैं कि अमेरिकन पैराशूट से उतर गये हैं।

उन लोगों ने निश्चय किया कि उन्हें पहले फादर शिफर को ले जाना चाहिए। जब वे रवाना हो रहे थे तो फादर सुपीरियर ला-सैले ने कहा कि उनको बहुत जोर से जाड़ा लग रहा है। इस पर एक ने अपनी कमीज उतारी और एक ने कोट और एक-दो कपड़े और भी फादर ला-सैले को उढ़ा दिए। फिर वे स्ट्रेचर लेकर रवाना हुए। पुरातन-ज्ञान का छात्र आगे-आगे रास्ते के बारे में बताता जा रहा था, पर इतने पर भी एक स्थान पर एक आदमी का पैर टेलीफोन के तार में अटक गया और गिर गया। इससे स्ट्रेचर का वह

कोना झुक गया और फादर शिफर उसमें से लुढ़क गये और बेहोश हो गये। थोड़ी देर में वह होश में आए और उन्होंने क़ै की। उन लोगों ने फिर उन्हें उठाया और शहर के किनारे-किनारे चले। कुछ दूर पर कुछ भक्त लोग पहले ही इन लोगों का इन्तजार कर रहे थे अतः उन लोगों ने फादर शिफर को ले लिया और बाकी फादर सुपीरियर को लेने वापस लौटे।

फादर ला-सैले को बांसों का स्ट्रेचर होने के कारण बहुत कष्ट हुआ होगा क्योंकि उनकी पीठ में शीशे के बहुत सारे छोटे-छोटे टुकड़े छिद गये थे। शहर के किनारे उन्हें एक स्थान पर एक जलती मोटर का घेरा लेके जाना पड़ा क्योंकि सड़क संकरी थी और जलते टुकड़े फैले हुए थे। इसलिये स्ट्रेचर ले जाने वाले जब एक तरफ को मुड़े तो वे अंधेरा होने के कारण देख न सके और एक गढ़े में गिर गये। फादर ला-सैले जमीन पर गिरे और स्ट्रेचर के दो टुकड़े हो गए, इसलिए एक साधु नोविशिएट गया जिससे रेढ़ा ले आये। पर उसे रास्ते में ही एक ध्वस्त मकान के पास एक रेढ़ा मिल गया और वह उसे ही ले आया। उन लोगों ने फादर ला-सैले को उसी पर लिटा दिया और रेढ़े को घसीटते ले गये। नोविशिएट के रैक्टर ने, जो पहले स्वयं एक डाक्टर थे, दोनों फादरों के घावों को धोया, मरहम-पट्टी की और फिर उन्हें स्वच्छ बिस्तरों पर लिटा दिया गया। उन लोगों ने भगवान को इस कृपा के लिये धन्यवाद दिया।

× × ×

पर हजारों आदमी ऐसे थे जिनकी मदद करने के लिए कोई नहीं था। कुमारी ससकी भी उनमें एक थीं। सारी रात वह फैक्टरी में उस टीन के नीचे दो भयंकर रूप से घायलों के साथ बैठी रहीं जिनमें एक आदमी था और एक औरत। इनमें औरत की हालत यह थी कि औरत के एक स्तन का पता नहीं था और आदमी के चेहरे को चेहरा नहीं कहा जा सकता था। वह बुरी तरह से जल गया था। रात भर उनके टूटे पैर में भीषण पीड़ा होती रही। सारी रात न तो वह सो पाईं और न ही उन्होंने किसी आदमी से बात की।

उधर असानो पार्क में श्रीमती मुराटा रात भर फादर क्लीनसोर्ग से बातें करती रहीं और उन्हें जगाये रखा। नकामुरा परिवार का भी कोई व्यक्ति सो न सका। बच्चे यद्यपि काफी बीमार थे, पर फिर भी आस-पास घटने वाली घटनाओं में उनकी बड़ी उत्सुकता थी। और जिस समय शहर की गैस की टंकी भयंकर आवाज करती हुई जल उठी तो वे बड़े खुश हुए। बालक तोशियो जोर से चिल्ला उठी, "देखो...नदी में रोशनी देखो।"

दिन भर काम करते रहने के बाद श्री टानीमोटो सो गये। जब प्रातः की पहली किरण के साथ वह उठे तो उन्होंने नदी के उस पार देखा जहां कल उन्होंने भीषण रूप से घायल आदमियों को लिटाया था, पर उनको लगा कि उन्होंने उनको काफी ऊपर नहीं रखा था क्योंकि पानी इस समय

तक उस स्थान से काफी ऊँचा उठ चुका था। और चूंकि वे लोग हिलने-डुलने में असमर्थ थे, इसलिए वे सब डूब गये होंगे। उन्होंने बहुत सारी लाशों को भी पानी में उतराते हुए देखा।

× ×

सात अगस्त को जापान रेडियो ने ब्राडकास्ट किया, "बी–२९ विमानों के आक्रमण से हिरोशिमा में भारी क्षति हुई। अनुमान किया जाता है कि इस बार उन्होंने एक नये प्रकार के बम का प्रयोग किया। इस विषय में विस्तृत जांच जारी है।" पता नहीं हिरोशिमा में बचे कितने लोगों ने इस वक्तव्य को सुना। इसके साथ शायद ही किसी न उसी दिन शार्ट वेव पर अमेरिकन राष्ट्रपति द्वारा दिये गए एक असाधारण वक्तव्य को सुना हो जिसमें उन्होंने इस बम को एटम बम की संज्ञा दी थी और कहा था, "इस बम में २० हजार टन डी. एन. टी. से भी अधिक शक्ति थी। इसके अतिरिक्त आज तक प्रयोग किए गए सबसे बड़े ब्रिटिश ग्रेंड स्लैम बम से इसकी शक्ति दो हजार गुना अधिक थी।"

जिन लोगों में विस्फोट के बाद भी सोचने-समझने की शक्ति शेष थी, वे तरह-तरह की बातें कर रहे थे। कोई कोई कह रहा था कि हवाई जहाज से गैसोलीन या दूसरी कोई गैस फैलाई गई और इसके बाद आग लगा दी। या तो यह आग लगाने वाले किसी दल का उपद्रव था या बहुत सारे पैराशूटों ने यह काम किया।

अधिकतर बहुत ही घबराये और जख्मी थे और उन लोगों को क्या पता था कि वे इतिहास में अणु-शक्ति के प्रथम शिकार हैं। शार्ट वेव पर इस परीक्षण के बारे में आवाज आ रही थी। केवल अमेरिका को ही इसके रहस्य का पता था और युद्ध के समय दो करोड़ डालर का जो जुआ उसने खेला था, वह सफल भी हो सकता था।

× × ×

श्री टानीमोटो डाक्टरों के प्रति अभी भी नाराज थे। उन्होंने सोचा कि वह कम से कम एक डाक्टर अवश्य असानो पार्क लाएँगे। भले ही उन्हें उसे गर्दन से पकड़ कर लाना पड़े। वह नदी पार करके शिनटो खण्डहर से होते हुए, जहां वह क्षण भर के लिये अपनी पत्नी से मिले थे, ईस्ट परेड ग्राउंड गये। चूँकि ईस्ट परेड ग्राउंड को आपात निष्क्रमण के लिए निश्चित किया गया था इसलिये उनको उम्मीद थी कि वहां डाक्टरी सहायता का प्रबन्ध अवश्य होगा। वहां उन्होंने सेना के एक मैडिकल यूनिट को देखा, पर वह बुरी तरह व्यस्त था। हजारों आदमी मैदान में पड़ी लाशों में से होते हुए डाक्टरों की ओर जा रहे थे और हर एक सबसे पहले डाक्टर के पास पहुँचना चाहता था। लेकिन इसके बावजूद श्री टानीमोटो एक डाक्टर के पास गये और बोले, "आप असानो पार्क क्यों नहीं चलते ! वहां आपकी नितान्त आवश्यकता है।"

डाक्टर ने उनकी ओर बगैर देखे ही जवाब दिया, "मेरा

स्टेशन यही है।"

"लेकिन वहां नदी के किनारे बहुत लोग मर रहे हैं।"

"सबसे पहला काम कम घायलों की पट्टी करना है।" डाक्टर बोला।

"क्यों ?...जब वहां पर बहुत सारे लोग बुरी तरह घायल जो पड़े हैं।" श्री टानीमोटो ने कहा।

डाक्टर एक दूसरे घायल की ओर मुड़ते हुए बोला, "ऐसी भयंकर परिस्थिति में पहला काम जितनों को सम्भव हो, सहायता देना है, जितनी भी सम्भव हों, जानें बचाना है। जो लोग अधिक घायल हुए हैं उनकी कोई उम्मीद नहीं। वे मर जाएँगे। हम उनके लिये परेशान नहीं हो सकते।"

"डाक्टरी दृष्टिकोण से यह भले ही ठीक हो...।" श्री टानीमोटो ने केवल इतना ही कहा पर आगे वह कुछ न कह सके। सामने मैदान में सैकड़ों लोग मरे पड़े थे और उनके साथ ही जीवित लोग भी पड़े थे। श्री टानीमोटो को अपने ऊपर ग्लानि हुई। वह समझ नहीं पा रहे थे कि क्या करें, क्योंकि असानो पार्क में कई मरते हुए लोगों से उन्होंने वायदा किया था कि वह उनके लिये डाक्टरी सहायता अवश्य लाएँगे। उन्होंने सोचा कि वे लोग यह ही अनुभव करते हुए मर जाएँगे कि उनके साथ धोखा किया गया। आखिर उन्होंने मैदान के एक कोने से एक राशन स्टैंड से कुछ चावल और बिस्कुट लिये और वह पार्क की ओर चले गये।

× × ×

दूसरे दिन प्रात: गर्मी थी । फादर क्लीनसोर्ग एक बोतल और चाय की केतली में पानी लेने गए । उन्होंने सुना था कि असानो पार्क के बाहर नल में से ताजा पानी मिल सकता है । रौक गार्डन में से जाते हुये इन्हें कई गिरे पेड़ों के ऊपर से जाना पड़ा और इस समय उन्होंने महसूस किया कि वह काफी कमजोर हो गये हैं । बाग में बहुत सारे लोग मरे पड़े थे । एक धनुषाकार पुल पर उन्होंने एक जीवित नग्न औरत को देखा जो सर से पैर तक बुरी तरह जल गई थी । उसका सारा शरीर लाल पड़ गया था ।

पार्क के दरवाजे पर एक फौजी डाक्टर बैठा था । उसके पास दवाई के नाम पर केवल आयोडीन थी जिसे वह सब प्रकार के जख्मों पर लगा रहा था । पार्क के बाहर उन्होंने एक ध्वस्त मकान का नल पाया जो अभी तक काम कर रहा था । उन्होंने बर्तन भरे और वापस लौटे । इस बार उन्होंने पुल के पास वाली औरत को मरा पाया । लौटते समय जब वह एक गिरे पेड़ के पास से आ रहे थे, तभी एक झाड़ी से आवाज आई, "क्या आपके पास कुछ पीने के लिये है ?" उन्होंने एक सैनिक की वर्दी देखी । यह सोचकर कि वहां केवल एक आदमी होगा, वह झाड़ी के अन्दर गये तो उन्होंने देखा कि वहां कम से कम बीस आदमी थे । उन लोगों की दशा भी वैसी ही भयंकर थी । उनके चेहरे जल गये थे, आंखों की जगह खोखली हो गई थी और आंखों का बहा तरल पदार्थ गालों से होता हुआ नीचे चला गया था । आंखों

के बह जाने का कारण यह था कि शायद विस्फोट के समय उनकी आंखें उसी ओर देख रही थीं। उनका सारा मुँह सूज गया था और भयंकर घाव थे, इससे वे केतली की टोंटी भी अपने मुँह में न ले सकते थे। इस पर फादर क्लीनसोर्ग बाहर से घास तोड़ लाए और एक टुकड़े का स्ट्रा (पानी पीने की खोखली नली) सा बनाकर उससे पानी पीने को कहा।

"मुझे कुछ नहीं दिखाई देता।" एक आदमी बोला।

फादर क्लीनसोर्ग ने जितना भी सम्भव हो सकता था उतनी बनावटी प्रसन्नता से कहा, "पार्क के दरवाजे पर एक आदमी है। इस समय वह व्यस्त है, पर जल्दी ही वह तुम्हारी आंखें ठीक कर देगा।" इसी समय उनको उन दिनों की याद आई कि किस प्रकार वह किसी की जरा-सी उंगली तक कट जाने पर व्याकुल हो जाया करते थे और उनको मूर्च्छा-सी आने लगती थी। लेकिन अब वह इतने शक्तिहीन हो चुके थे कि पार्क में इस भयंकर दृश्य को देखने के बाद उन्होंने एक जोहड़ के पास पड़े एक घायल से इस विषय में बात की कि क्या जोहड़ों की मछलियों को खाना ठीक होगा। अन्ततः वे इस निश्चय पर पहुँचे कि इसे खाना तो मूर्खता होगी।

उन्होंने तीसरी बार बर्तनों को भरा और नदी के किनारे पर गये। वहां उन्होंने बहुत सारी लाशों और मरते लोगों में एक युवती को देखा जो सुई-धागे से अपना अंतर्वस्त्र

ठीक कर रही थी, जो जरा सा फट गया था। फादर क्लीन-सोर्ग ने उसकी ओर मजाक-सा करते हुये कहा, "तुम छबीली हो।" उत्तर में वह हँस पड़ी।

उन्हें थकावट महसूस हो रही थी इसलिये वह वहीं लेट गए और उन दो बच्चों से बातचीत शुरू कर दी जिनसे उन्होंने दोपहर को जान-पहचान कर ली थी। उनको पता चला कि उनका नाम कताओका था। लड़की तेरह साल की थी और लड़का पांच साल का। लड़की जब नाई की दुकान की ओर जा रही थी, तभी बम फटा। जब सब लोग असानो पार्क की ओर चले तो उनकी माँ ने कुछ कपड़े और खाना लाने का निश्चय किया और वह वापस चली गई। इधर सड़क पर भागते लोगों की भीड़ इतनी अधिक हो गई कि वे अपनी माँ से बिछुड़ गए और तब से ही अपनी मां को नहीं देखा। पर तभी अकस्मात् वे रोने लगे और माँ-माँ चिल्लाना शुरू कर दिया।

पार्क में बच्चो के लिए इस करुण दृश्य का अधिक देर तक अनुभव करना मुश्किल था। तोशियो नकामुरा ने अपने दोस्त सीचो साटो को जब नाव में अपने घर वालों के साथ जाते देखा तो वह तेजी से हाथ हिलाता नदी की ओर भागा और चिल्लाया, "साटो! साटो!"

नाव में बैठे लड़के ने सर घुमाया और पूछा, "कौन है?"

"नकामुरा।" तोशियो ने जवाब दिया।

"तोशियो।"

"तुम सब ठीक हो ।" तोशियो ने पूछा ।

"हां, और तुम्हारा क्या हाल है ?" दूसरे ने पूछा ।

"हां, हम सब ठीक हैं, मेरी बहनों को उलटियां हो रही हैं, पर मैं बिल्कुल ठीक हूं ।" तोशियो ने जवाब दिया ।

तेज धूप के कारण फादर क्लीनसोर्ग को बहुत तेज प्यास लगने लगी, पर दुबारा पानी लाने का साहस उनमें नहीं था । दोपहर के करीब उन्होंने एक जापानी औरत को लोगों में कुछ बांटते देखा । जल्दी ही वह उनके पास आई और कोमल स्वर में बोली, "ये चाय की पत्ती हैं । इन्हें चूसने से प्यास नहीं लगेगी ।" फादर क्लीनसोर्ग को ऐसे लगा मानो वह रो उठेंगे । पिछले कई हफ्तों से जापानियों द्वारा विदेशियों के प्रति दिखलाई जाने वाली घृणा से वह क्लान्त हो चुके थे । यहां तक कि यह बात उनके जापानी मित्रों में भी आ गई थी । पर इस अनजान औरत के व्यवहार के कारण भावातिरेक से उनका हृदय भर आया ।

दोपहर के कुछ देर बाद कुछ लोग नोबिशियेट से ठेला लेकर आ गए थे । वे शहर में मिशन हाउस से होते हुए आए थे । वहां उन्होंने हवाई सुरक्षागृह में से सूटकेस और मिशन के मलबे में से पवित्र पात्रों को भी ले लिया था, जो पिघल गये थे । उन्होंने फादर क्लीनसोर्ग के कागज की लुगदी के बने सूटकेस में उनका सामान भरा, श्रीमती नकामुरा का सामान भरा, दोनों लड़कियों को उस पर बिठाया और चलने के लिए तैयार हुए । तभी एक साधू ने जो व्यावहारिक बुद्धि

का आदमी था, याद दिलाया कि कुछ दिन पूर्व यह कहा गया था कि अगर शत्रु के आक्रमण से सम्पत्ति की क्षति हो तो पुलिस के पास उसके मुआवजे के लिये दावा दर्ज कराया जा सकता है। साधु लोगों में इस विषय में जबकि उनके चारों ओर सैकड़ों लाशें पड़ी थीं और हजारों मर रहे थे, विचार-विमर्श हुआ। अंत में इस बात का निश्चय हुआ कि ध्वस्त मिशन के एक रहने वाले के नाते फादर क्लीनसोर्ग इसका दावा करें। इसलिए जहां दूसरे लोग ठेले के साथ चले गए, वहां फादर क्लीनसोर्ग ने कताकोआ बच्चों को आशीर्वाद दिया और एक पुलिस स्टेशन की ओर चले गए।

पुलिस स्टेशन में दूसरी जगह से आदमी आ गये थे। उनकी वर्दियां साफ थीं और वहां घायल व गन्दे लोगों की एक भीड़ जमा थी। अधिकतर लोग अपने बिछुड़े रिश्तेदारों के बारे में पूछ रहे थे। फादर क्लीनसोर्ग ने वहां क्लेमफार्म भर दिया और फिर वह नगत्सुका की ओर रवाना हुए। इस वक्त ही उन्हें क्षति की भीषणता का भान हुआ। मलवों के ढेर के ढेर लगे थे और पार्क में जो कुछ उन्होंने देखा उसके बाद भी उनकी सांस रुकी की रुकी रह गई। नोविशियेट पहुँचते-पहुँचते वह थकावट से चूर हो चुके थे। बिस्तर पर लेटते समय उन्होंने जो बात की वह यह थी कि उन्होंने किसी से पार्क में से मातृविहीन कताकोआ बच्चों को ले आने की प्रार्थना की थी।

× × ×

कुमारी ससकी दो दिन तक अपने कुचले पैर के साथ उस टीन की छाया में पड़ी रहीं। उनके पास और कोई नहीं दो भयंकर रूप से घायल व्यक्ति थे। सारा दिन वह एक कोने से केवल हवाई सुरक्षा गुहों की ओर ही देख सकती थीं, जहाँ लोग आया करते थे और उनमें से रस्सों में बांध-कर लाशें खींचते थे। कुमारी ससकी के पैर का रंग खराब हो गया था। वह सूज गया था और खराब होने लगा था। तीसरे दिन उनके कुछ मित्र, जो यह सोच रहे थे कि वह मर गई होंगी, उनकी लाश ढूँढते हुए वहां आए। उन्होंने उनको बताया कि उनके माता-पिता और छोटा भाई विस्फोट के समय तमूरा पेड्रियाटिक अस्पताल में थे, जहां उनका छोटा भाई था। उनके बचने की कोई उम्मीद न होने के कारण ही उनकी खोज नहीं की गई क्योंकि अस्पताल की इमा-रत पूरी तरह से भूमिसात हो चुकी थी। कुछ देर बाद कुछ आदमी आए और उनको एक ट्रक में बिठा दिया। लगभग दो घण्टे तक ट्रक किसी ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर चलता रहा। कुमारी ससकी को लगा कि दर्द से उनकी सांस तक रुक जाएगी, पर ऐसा हुआ नहीं।

कुछ आदमियों ने उन्हें फिर उठाया और इवोकुची सैक्शन के एक रिलीफ स्टेशन में ले गये जहां दो डाक्टरों ने उन्हें देखा। ज्योंही एक डाक्टर ने पैर को छुआ, वह मूर्च्छित हो गई। फिर उन्होंने उन दोनों डाक्टरों को इस बारे में बात करते सुना कि पैर काटना चाहिए अथवा नहीं। एक

कहता था कि घाव के मुँह पर गैस गैंगरीन है और अगर पैर न काटा गया तो यह मर जाएगी। दूसरे का कहना था कि हमारे पास इस काम के औजार ही नहीं हैं इसलिए कैसे किया जा सकता है। यह सुनकर वह फिर बेहोश हो गई।

जब वह होश में आईं तो उन्हें स्ट्रेचर पर डालकर कहीं ले जाया जा रहा था। उनको एक मोटर-बोट में बिठाकर पास के एक द्वीप निनोशिमा में ले जाया गया, जहां वह मिलिटरी अस्पताल में ले जाई गईं। वहां एक डाक्टर ने उनकी जांच की और बताया कि घाव में गैस गैंगरीन नहीं तथापि पैर ही हड्डी बुरी तरह से टूट गई है। उसने कुमारी ससकी को बताया कि यह अस्पताल केवल चीरा-फाड़ो के लिये ही है इसलिये उन्हें वापस हिरोशिमा जाना होगा। तभी डाक्टर ने उनका टेम्प्रेचर लिया और इसके बाद उनको वहीं ठहरे रहने देने का निश्चय किया।

× ×

आठ अगस्त को फादर सीसलिक शहर में श्री फुकाई को ढूँढ़ने गये। स्मरण रहे कि श्री फुकाई, जो पादरियों के रहन को जगह के सेक्रटरी थे और जिन्हें फादर क्लीनसोर्ग जबरदस्ती पीठ पर लाद कर शहर से बाहर ले जा रहे थे फिर से पागलों की भांति वापस भाग गये थ। फादर सीस-लिक ने सकाई पुल के पास उन्हें खोजा जहां उनको अन्तिम बार देखा गया था।' फिर ईस्ट परेड-ग्राउंड के घायल व मुर्दों में तथा पुलिस कैम्प में खोजने गए। शाम को नोवि-

शिपेट में पुरातन-विज्ञान के एक छात्र ने लोगों को बताया कि एक दिन जब हवाई आक्रमण का भोंपू बजा था, तभी श्री फुकाई ने उससे कहा था कि जापान मर रहा है। अगर हिरोशिमा पर भी हवाई आक्रमण हुआ, तो मैं अपने देश के साथ मरना चाहता हूँ। इससे पादरी लोग इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि श्री फुकाई निश्चय ही लपटों में कूद पड़े होंगे। उन्होंने इसके बाद श्री फुकाई को कभी नहीं देखा।

रैड क्रास अस्पताल में डाक्टर ससकी तीन दिन तक लगातार काम करते रहे। इस बीच उन्हें केवल एक घण्टे की नींद मिल सकी। दूसरे दिन से उन्होंने खतरनाक घावों को सीना शुरू किया और तीसरे दिन तक सीते गये। अधिकतर घाव पक गये थे।

सौभाग्यवश किसी को एक स्थान पर जापानी शांतिकर औषधि नरूकोपोन मिल गयी और उसने कई लोगों में बांट दी जिनको भीषण पीड़ा थी। अस्पताल के स्टाफ में इस बात की चर्चा थी कि बम में कोई असाधारण विशेषता थी क्योंकि दूसरे दिन अस्पताल का वाइस चीफ-सर्जन जब एक्सरे के कमरे में गया तो वहां का सारा सामान बिखरा पड़ा था। उसी दिन यमागुची शहर से एक डाक्टर व दस नर्सें आ गईं। तीसरे दिन एक डाक्टर व बारह नर्सें मत्सुए शहर से आईं, पर फिर भी अभी तक वहां केवल आठ डाक्टर थे और मरीजों की संख्या कम से कम दस हजार थी। तीसरे दिन डाक्टर ससकी अचानक इस बात से बहुत मायूस हो गये

कि उनकी माँ सोचती होगी कि वह मर गये हैं। वह मुकेई-हारा माँ से मिलने गए, यहां बिजली की गाड़ियां अभी भी चल रही थीं। वह शाम को घर पहुँच गये। उनकी माँ ने बताया कि एक घायल नर्स ने जो कहीं जा रही थी वहां रुक कर उसे उनको सकुशलता की सूचना दे दी थी। वह बिस्तर पर सत्तरह घण्टे तक सोते रहे।

नौ अगस्त को भी फादर क्लीनसोर्ग को थकान चढ़ी हुई थी। नोविशियेट के डाक्टर ने उनके घावों की चोटों को साफ रखने को कहा। परन्तु फादर क्लीनसोर्ग का हृदय वस्तु स्थिति न समझ कर अपने को दोषी समझ रहा था। उन्होंने अनुभव किया कि हिंसा का नग्न तांडव उन्होंने जहां देखा है, वहां उन्हें फिर जाना चाहिए। और वह उठकर शहर गये। वहां ध्वस्त मिशन के मलबे में घूमते रहे पर वहां उन्हें कुछ न मिला। अपने कई जानने वालों के सम्बन्ध में पूछा, कई जापानी कैथोलिकों को देखा, परन्तु उन्हें गिरे मकानों के सिवा कुछ न मिला और वह खोये-खोये से वापस लौट आये।

९ अगस्त को सवेरे ग्यारह बजकर दो मिनट पर नागा-साकी पर दूसरा एटम बम गिराया गया। हिरोशिमा में बचने वालों को कुछ ही दिन बाद इसका पता चला कि और भी लोग इस दुर्भाग्य में उनके साथ हैं, क्योंकि अब तक जापानी रेडियो और समाचार पत्र इस विचित्र अस्त्र के बारे में काफी सचेत हो गए थे।

श्री टानीमोटो ९ अगस्त को भी पार्क में ही काम कर रहे थे। वह पत्नी के पास यूशिदा गए। वहां से उन्होंने एक टैंट लिया, और उसे पार्क में लगा दिया। टैंट में उन्होंने भीषण रूप से घायल व्यक्तियों को रखा। वह जितनी देर काम करते रहे उन्हें प्रतीत हुआ कि उनकी पड़ोसिन बीस वर्षीय श्रीमती कमाई की आंखें उन पर लग रही हैं। उसका मृत-शिशु आज चार दिन से उसके हाथ में था। श्रीमती कमाई ने अपने पति को खोजने का अनुरोध किया था। लेकिन श्री टानीमोटो सेना मुख्यालय के, भयंकर रूप से जले सैनिकों को देखकर कमाई के बचने की आशा छोड़ चुके थे। उसको ढूँढना एक असम्भव सी बात समझ उन्होंने श्रीमती कमाई को इस बारे में कुछ नहीं बतलाया। परन्तु श्रीमती कमाई जब भी उनको देखतीं अपने पति के बारे में पूछतीं। एक बार श्री टानीमोटो ने कहा भी कि अब बच्चे को दफना देना चाहिए, लेकिन इस पर उसने शिशु को और भी जोर से छाती से चिपटा लिया। इससे श्री टानीमोटो ने उससे बचना शुरू कर दिया, पर जब भी वह उसकी ओर देखते, उसकी आँखों को अपनी ओर घूरते पाते और उनमें हमेशा वही प्रश्न भरा रहता। इसलिये वह जब भी वहां से आते-जाते तो उसकी ओर पीठ कर लेते, जिससे उसकी आँखों का सामना करना न पड़े।

नोविशियेट के साधुओं ने लगभग पचास घायलों को अपने गिरजे में आश्रय दिया। रैक्टर से जो भी बन पड़ी,

उन्होंने सहायता की। नकामुरा परिवार के सदस्यों को एक-एक कम्बल और मच्छरदानी मिली हुई थी। १० अगस्त को श्रीमती नकामुरा की सहेली श्रीमती ओसाकी मिलने आई। उन्होंने बताया कि उनका बड़ा लड़का हिदेयो जिस फैक्टरी में काम करता था, उसी में जलकर मर गया।

१० अगस्त को फादर क्लीनसोर्ग ने सुना कि डाक्टर फूजी फुकावा ग्राम में अपने एक मित्र ओकुमा के ग्रीष्म-कालीन घर में घायल पड़े हैं। उन्होंने फादर सीसलिक को देखने भेजा। फादर सीसलिक ने श्री ओकुमा के घर पहुँचकर डाक्टर फूजी को एक जांघिया पहने पाया डा० ने अपनी हँसुली की हड्डी को कपड़े से लपेट रखा था। उन्होंने फादर सीसलिक को बताया कि चश्मा खो जाने से उन्हें बड़ी परे-शानी हो रही है। उन्होंने अपनी चोटों और खरोंचों को भी बताया जो नीली पड़ गई थीं। वे दोनों बातें करते रहे। श्री ओकुमा हवाई महकमे में थे इसलिये उन्होंने अमे-रिकनों के बारे में काफी कुछ बतलाया। डाक्टर फूजी ने विनाश के बारे में बहुत कम चर्चा की। डाक्टर ने बताया कि श्री ओकुमा उनके गिरे अस्पताल में गये और वहां से एक सेफ ले आये जो उन्होंने सुरक्षा गृह में रखी थी। इसमें कुछ डाक्टरी औजार भी थे। उन्होंने इनमें से ही फादर सीसलिक को कुछ कैंचियां और छोटी चिमटियां नोविशियेट के रैक्टर को देने के लिये दीं।

फादर सीसलिक बेचैनी से बम के बारे में अपने ज्ञान

की वार्ता करना चाहते थे, परन्तु वार्तालाप के स्वाभाविक रूप से बम के रहस्य पर चलने पर ही उन्होंने बतलाया, यह बम नहीं था अपितु एक शानदार प्रकार का मैग्नेशियम था जिसे जहाज ने आकाश से फैला दिया और जब इस पाउडर का पावर स्टेशन के बिजली के तारों से सम्बन्ध हुआ तो उसमें विस्फोट हो गया। डाक्टर फूजो को फादर सीसलिक पर पूरा विश्वास हो गया और वह बोले, "तो इसका अर्थ यह हुआ कि यह केवल बड़े शहरों में और दिन के समय ही डाला जा सकता है जबकि ट्रामें वगैरह दौड़ रही होती हैं और तारों में करेंट दौड़ रहा होता है।"

× ×

पांच दिन तक लगातार घायलों में काम करने के बाद ११ अगस्त को श्री टानीमोटो अपने घर मलबे में से कुछ खोजने लगे। उनको उसमें कुछ अध जले डायरियां, चर्च के रिकार्ड और कुछ बर्तन प्राप्त हो गये। जब वह काम कर रहे तब कुमारी टनाका नाम की एक लड़की आई और कहा कि उसके पिता उन्हें बुला रहे हैं। श्री टानीमोटो श्री टनाका से घृणा करते थे। उसने इन पर अमेरिका के लिये जासूसी करने का अरोप लगाया था। बम काण्ड में टनाका साहब बुरी तरह जल गये थे, फिर भी किसी तरह पड़ौसी संघ के सुरक्षा गृह में आ गए कई दिन तक वहां डाक्टरी सहायता प्राप्त करने की कोशिश के पश्चात् वह बहुत कमजोर हो गए और उनको इस बात का आभास हो गया था कि वह मर

रहे हैं। वह चाहते थे कि अंत समय में किसी प्रकार के धर्म-उपदेश को सुनते हुए मरें। आखिरकार श्री टानीमोटो घृणा त्याग उनकी मदद करने सुरक्षा गृह में गये। श्री टनाका को देखा। श्री टनाका का चेहरा और हाथ खून व मवाद से तर, और सूजी आंखें बन्द थीं, शरीर से बू आ रही थी और वह लगातार कराह रहे थे। श्री टानीमोटो ने जापानी भाषा में लिखी बाइबिल निकाली और जोर से पढ़ना शुरू किया—

"क्योंकि तेरी नजर में हजार बरस ऐसे हैं जैसे कल का दिन जो गुजर गया और जैसे रात का एक पहर। तू उनको गोया सैलाब से बहा ले जाता है, वो नींद की एक झपकी के मानिन्द हैं, वो सुबह को उगने वाली घास के मानिन्द हैं, जो सुबह को लहलहाती और बढ़ती है और शाम को कटती और सूख जाती है क्योंकि हम तेरे कहर से फना हो गये और तेरे गजब से परेशान हुए। तूने हमारी बदकिरदारी को अपने सामने रखा और हमारे पोशीदा गुनाहों को अपने चेहरे की रोशनी में, क्योंकि हमारे तमाम दिन तेरे कहर में गुजरे। हमारी उमर ख्याल की तरह जाती रहती है......।"
श्री टनाका यह सुनते सुनते ही मर गये।

× ×

११ अगस्त को निनोशिम मिलिटरी अस्पताल में खबर आई कि चुगोकु क्षेत्रीय सेना-मुख्यालय से एक बहुत बड़ी संख्या में घायल लोग आने वाले हैं। इसलिये जितने भी असैनिक रोगी थे, उनका वहां से हटाना आवश्यक हो गया।

कुमारी ससकी को यद्यपि तीव्र ज्वर था फिर भी उन्हें एक जहाज के डैक पर लिटा दिया गया। डैक पर छाया थी परन्तु जहाज के चलने पर वह धूप में थीं। उनके आहत पैर के नीचे एक तकिया रख दिया गया था, परन्तु शीघ्र ही वह पीप से भीग गया। ऊपर एक शीशा था और उसमें से धूप इस तरह आ रही थी कि उनको लगता था मानों उनको सूर्य में आतशी शीशे के नीचे रख दिया गया हो। उनको हिरोशिमा से दक्षिण-पश्चिम में कई मील दूर हत्सूकैची में ले जाया गया। वहां उनको गाडेस आफ मर्सी स्कूल में ले जाया गया जो इस समय अस्पताल बना हुआ था। वहां वह कई दिन पड़ी रहीं और अन्त में कोबे से एक हड्डी टूटने को जांच करने वाला विशेषज्ञ आया। जिस समय वह आया उस समय तक कुमारी ससकी का पैर लाल होकर नितम्ब तक सूज चुका था। ऐसे में जोड़ ठीक नहीं हो सकता था। इसलिए उसने घाव में छेद करके एक रबड़ की नली लगा दी जिससे मवाद आदि निकल सके।

नोविशियेट में फादर सीसलिक के लिए मातृविहीन कटाओका बच्चों को सम्भालना एक बड़ी समस्या थी। वह अपनी माँ के लिए बहुत रोते थे। उनका ध्यान बंटाने की कोशिश करते थे। उनको और भी कहानियां सुनाते लेकिन फिर भी बच्चे अपनी माँ के लिये रोते। उन्होंने बच्चों के परिवार की खोज आरम्भ कर दी। पुलिस ने बताया कि कूरे नगर में उनके एक चाचा तथा हिरोशिमा के उपनगर

उजीना के पोस्ट आफिस में बच्चों का बड़ा भाई पता लगाने की कोशिश कर रहा था। बच्चों की माँ अभी जीवित और नागासाकी के गोटा द्वीप में है। उन्होंने उजीना पोस्ट आफिस द्वारा उनके भाई से सम्बन्ध स्थापित किया और बच्चों को उनकी माता के पास पहुँचा दिया।

बम गिरने के कुछ सप्ताह बाद हिरोशिमा में यह उड़ी-उड़ी अफवाह पहुँची कि किसी प्रकार अणुओं के दो भागों में विखण्डित होने से जो शक्ति प्रस्फुटित पहुँची उसी से नगर का विनाश हुआ। यद्यपि दूसरे नगरों से भी अखबार आ रहे थे पर वे भी अपने को एक सीमा पर रखे बिल्कुल साधारण वक्तव्य दे रहे थे जैसा कि डोमी के १२ अगस्त के अंक में था, "इस अमानवीय बम की भयंकर शक्ति को स्वीकार करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कहा जा सकता।" फिर भी जापानी विशेषज्ञ लारित्सन इलेक्ट्रोस्कोप के साथ जांच के अर्थ शहर में प्रविष्ट हो चुके थे।

१२ अगस्त को नकामुरा परिवार के बीमार लोग काबे चले गये। वहां श्रीमती नकामुरा की ननद रहती थी। श्रीमती नकामुरा लगभग एक हफ्ते तक नोविशियेट में रही थीं, उन्हें अपनी मां, भाई और बड़ी बहन की चिन्ता लगातार लगी रही लेकिन उनको पता चला कि उनका सारा परिवार काल का ग्रास हो चुका था। जब वह काबे वापस लौटीं तो इतनी भ्रमित और निराश थीं कि उस दिन शाम तक उनके मुँह से एक शब्द भी न निकला।

आखिरकार रैडक्रास अस्पताल में पहले से कुछ ठीक स्थिति होनी शुरू हुई। डाक्टर ससकी ने काम पर वापस आ कर मरीजों की श्रेणियां बनानी शुरू कर दी थीं। स्टाफ के लोगों ने धीरे-धीरे मलवा साफ कर दिया और लाशों को हटाया। पहले दिन में मरे अधिकतर शवों को उनके रिश्ते-दारों ने पहचान लिया था। लाशों को बाहर एक स्थान पर ले जाया जाता और वहां गिरे मकानों की लकड़ियों की चिता में उन्हें जला दिया जाता। इसके बाद कुछ फूल एक्सरे प्लेटों के लिए बने लिफाफों में डालकर उस पर नाम लिख-कर स्वच्छता और सावधानी से कार्यालय के एक कोने में रख दिया जाता। कुछ ही दिनों में उस स्थान का एक कोना पूरा इन फूलों से भर गया था।

× ×

१५ अगस्त को कावे में सवेरे दस वर्षीय तोशियो नका-मुरा ने सवेरे हवाई जहाज की आवाज सुनी। वह बाहर भागा और उसने तुरन्त पहचान लिया कि वह बी—२९ हवाई जहाज था। वह जोर से चिल्लाया, "देखो! मि० बी. जा रहे हैं।"

तभी एक रिश्तेदार ने उसको आवाज लगाते हुए कहा, "क्या अभी और भी मिस्टर बी. देखने हैं?"

इस प्रश्न में एक प्रकार से प्रतीकवाद था। ठीक उसी क्षण इतिहास में पहली बार हिरोहितो सम्राट् टैन्नो की टूटी और निराश आवाज रेडियो पर सुनाई पड़ रही थी, "विश्व

की सामान्य प्रवृत्तियों का मनन करने और अपने साम्राज्य की वास्तविक स्थिति के अध्ययन के पश्चात हमने यह निश्चय किया है कि असाधारण पग उठाकर वर्तमान स्थिति से समझौता किया जाय।"

श्रीमती नकामुरा दोबारा शहर गई थीं। वह इस बार कुछ चावल निकालने गई थीं जो कि पड़ौसी संघ के हवाई आक्रमण सुरक्षा गृह में रखे थे। चावलों को निकालकर वह कोबे रवाना हो गईं। इलेक्ट्रिक ट्रेन में अचानक ही उनकी अपनी बहन से भेंट हो गई। उसने बताया कि विस्फोट के समय वह हिरोशिमा में नहीं थी, इसीलिये बच गई। तभी उसने पूछा, "क्या तुमने खबर सुन ली!"

"कैसी खबर?"

"लड़ाई समाप्त हो गई।"

"ऐसी मूर्खतापूर्ण बात न कहो बहन।"

"लेकिन मैंने तो स्वयं रेडियो पर सुना है।" उनकी बहन ने फुसफुसाते हुए कहा, "वह स्वयं सम्राट की आवाज थी।"

"ओह तब इस हालत में……।" श्रीमती नकामुरा इसके आगे नहीं कह सकीं। अब उन्हें अपने इस विचार को त्यागने में और किसी भी चीज की जरूरत नहीं थी कि एटम बम के बाद भी जापान के जीतने की सम्भावना है।

कुछ समय बाद श्री टानीमोटो ने अपने एक अमेरिकन मित्र को पत्र लिखा जिसमें उस दिन सुबह की घटनाओं का

जिक्र था—"युद्ध में हमारे इतिहास की सबसे शानदार चीज हुई। हमारे सम्राट ने स्वयं अपनी आवाज में रेडियो से सीधे हमारे, जापान की साधारण जनता के सामने ब्राडकास्ट किया। हमें बताया गया था कि १५ अगस्त को कोई अत्यंत महत्वपूर्ण घोषणा होगी और उसे हम सबको सुनना चाहिये। इसलिए मैं हिरोशिमा रेलवे स्टेशन पर गया। वहां स्टेशन के मलवे में एक लाउड स्पीकर लगाया गया। बहुत सारे लोग जो घायल थे और पट्टियां बांधे थे, लकड़ियों का सहारा लेकर वहां पहुंचे और उन्होंने भाषण सुना। जब उनको विश्वास हो गया कि स्वयं सम्राट बोल रहे हैं तब उनकी आंखों में आंसू आ गए और बोले, "कितनी विलक्षण माया है प्रभु की कि टैन्नो हमको सीधे भाषण कर रहा है और हम उसकी आवाज सुन सकते हैं। हम इतने महान त्याग से पूर्ण-रूपेण सन्तुष्ट हैं।" पर जब उनको पता चला कि युद्ध बन्द हो गया और जापान हार चुका तो वे निराश हो गए और उन्होंने अपने सम्राट के आदेश को ठण्डे उत्साह के साथ स्वीकार किया। उन्होंने संसार की शान्ति के लिये पूर्ण हृदय से त्याग किया और जापान—वह अपने नवीन पथ पर चल पड़ा।

—○—

४

★★☆

बम काण्ड के १२ दिन पश्चात् १८ अगस्त को फादर क्लीनसोर्ग अपने कागज की लुगदी के बने सूटकेस को लेकर नोविशियेट से हिरोशिमा रवाना हुए। वह सूटकेस में सोसाइटी आफ जीसट की कुछ चीजें ले जा रहे थे। रैक्टर के कथनानुसार उनके घाव तीन-चार दिन में नहीं भरे थे, फिर भी उन्होंने पूरे एक हफ्ते विश्राम किया। और अब उनका ख्याल था कि वह कुछ मेहनत का काम कर सकते हैं। मार्ग में उन भयानक दृश्यों को देखते हुए उन्हें शहर जाना पड़ा। चावलों के खेत भूरे-पीले हो गए थे। आगे चार वर्ग मील की जमीन लाल-भूरी खरोंचों से भरी थी। मकानों की कतारें की कतारें भूमिसात पड़ी थीं। कहीं-कहीं गिरी दीवारों पर लिखा था—"बहन तुम कहां हो ?" या "हम सब सुरक्षित हैं और तोयोसका में हैं।" कोयला बने वृक्ष, मुड़े-मुड़े तार और खम्भे पडे थे। साइंस व इन्डस्ट्री म्यूजियम का गुम्बद एक लोहे का नंगा ढांचा मात्र रह गया था। माडर्न चेम्बर आफ कामर्स की इमारत धमाके के बाद बिल्कुल ढेर हो चुकी थी। उसकी ऊँची मीनार मलवा बनी पड़ी थी। सड़कों और गलियों में यातायात ऐसा था जैसे मुर्दों का यातायात चल रहा हो। रास्तों में सैकड़ों साइकिलें चूरा होकर पड़ी थीं, कार और लारियों के ढांचे बिखरे पड़े थे, यह सब देख

कर इस बात से दुखी होते हुए कि यह सारा विनाश एक बम ने क्षण भर ही में कर दिया, वह योकोहामा बैंक पहुँचे। बैंक अपने ध्वस्त भवन स्थल पर लकड़ी के अस्थायी स्टाल में काम कर रहा था। रुपया जमा करा कर वह मिशन हाउस का एक चक्कर काटते हुए नोविशियेट लौट चले। रास्ते में उन्हें असाधारण सिहरन हुई। उन्हें अपना खाली सूटकेस बहुत भारी लगने लगा। घुटने जवाब देने लगे और उन्होंने बेहद थकान अनुभव की। काफी परिश्रम करके हृदय में साहस बनाये वह किसी प्रकार नोविशियेट पहुँचे। उन्होंने अपनी कमजोरी को लोगों से छिपाया, लेकिन कुछ ही देर बाद उन पर बेहोशी छा गई। दूसरे दिन रैक्टर ने उनके बिना भरे घावों को देखकर आश्चर्य से पूछा, "तुमने अपने घावों का यह क्या कर डाला ?" अकस्मात ही घाव ज्यादा चौड़े, सूजे और लाल हो गये थे।

२० अगस्त को सवेरे श्रीमती नकामुरा अपनी ननद के यहां बाल बनाने बैठीं। अभी उन्होंने कंघी फेरी ही थी कि उसके साथ-साथ बालों का एक पूरा गुच्छा चला आया। जब दूसरी बार फिर वही दशा हुई अतः उन्होंने बाल काढ़ना तुरन्त बन्द कर दिया। लेकिन अगले तीन-चार दिन में वह स्वतः गंजी हो गईं। शर्म के मारे वह घर में छुपी रहतीं। २६ अगस्त को उन्होंने और छोटी लड़की मयेको ने अपने को बहुत कमजोर महसूस किया और वे सारा दिन बिस्तरों में ही पड़ी रहीं।

श्री टानीमोटो को अपने काम की व्यस्तता में दिनों के गुजरने का पता न चला। काम के बोझ से अचानक बीमार पड़ गए। वह यूशिदा में अपने एक दोस्त के अध-टूटे मकान में विश्राम करने चले गये।

यद्यपि इन लोगों को पता नहीं था, पर किसी अजीबो-गरीब रोग से उनकी हालत बिगड़ती जा रही थी, जिसको बाद में रेडिशियन रोग निर्धारित किया गया।

× ×

हिरोशिमा के आस-पास जो अस्पताल थे, वह बम गिरने के बाद पहले कुछ हफ्तों तक बुरी तरह से भरे रहे। अस्पतालों में कर्मचारियों की कमी एवं स्थानाभाव के कारण रोगियों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना पड़ता था। कुमारी ससकी को ही तीन बार भेजा गया, दो बार जहाज पर और अगस्त के अंत में उन्हें हत्सुकैची के एक इंजीनियरिंग स्कूल में। परन्तु उनका पैर उत्तरोत्तर सूजता ही जा रहा था। स्कूल के डाक्टरों ने उनके पैर को खप-च्चियों से बांध दिया और ९ सितम्बर को उन्हें कार से हिरोशिमा के रैड क्रास अस्पताल में भेज दिया।

कुमारी ससकी के लिये ध्वस्त हिरोशिमा को देखने का यह पहला अवसर था। पिछली बार उन्हें जब इन्हीं स्थानों से ले जाया गया था, तब वह बेहोशी में थीं। यद्यपि ध्वस्त स्थानों के बारे में उन्हें बतलाया गया जिसे सुनकर वह भया-तुर हो गईं, परन्तु इस समय चारों ओर प्रत्येक वस्तु पर,

मलवे में, गटरों में, नदी किनारे, खपरैलों, टीन की मुड़ी हुई चादरों और भस्म वृक्षों, सभी पर एक ताजी सजीव मनोहर हरीतिमा छाई हुई थी। यह हरियाली गिरे मकानों की नींव तक से उठ रही थी। चारों ओर ब्लूएट्स और स्पेनिश बायोनट्स थे, सवेरे फूलने वाली लिलियां, मटर की बेलों-सा कुलफे का साग जैसा और तरह-तरह का घास-पात उगा हुआ था। नगर के मध्य में सिकल-सैना बहुत था। यह सब जगह बढ़ रहा था। ऐसे लगता था जैसे वहां बम के साथ सिकल-सैना के बीज भी गिरा दिये गये थे।

रैडक्रास अस्पताल में कुमारी ससकी डाक्टर ससकी की देखभाल में रखी गई। बम गिरने के पूरे एक महीने बाद इस अस्पताल में कुछ नियमितता आ गई थी। गलियारे में पड़े लोगों के पास लेटने के लिए चटाइयां हो गई थीं और दवाइयां भी बदल दी गई थीं। ये चीजें दूसरे शहरों से सहायतार्थ आ रही थीं। अधिक बीमार होने के कारण डाक्टर ससकी ने कुमारी ससकी को एक प्राइवेट कमरे में रखा। बाद में उन्होंने स्वीकार भी किया कुमारी ससकी से रिआयत करने का एक कारण यह भी था कि उसका नाम भी ससकी था। उसकी बीमारी के रिकार्ड में लिखा, 'रोगिणी मध्यम कद की है, सामान्यतया स्वास्थ्य अच्छा है। उसके बाएँ पैर की हड्डी टूट जाने से पैर सूज गया है। उसकी खाल व झिल्ली पर बड़े-बड़े गेहूँ या चावल के तथा कई मटर के बराबर दाने हैं। सिर, गला, आंखें, फेफड़े, और हृदय

सामान्य है तथा बुखार है।" वह पैर की हड्डी जोड़कर उस पर प्लास्टर चढ़ाना चाहते थे, परन्तु प्लास्टर खतम हो चुकने से इसे चटाई पर लिटा दिया और बुखार की दवाई दी। इसके साथ ही ग्लूकोस रुक-रुक कर देने के लिए कह दिया। सभी रोगियों की तरह उनके दाँतों से भी इस समय उसी विलक्षण तत्व के मिश्रण के कारण रक्त-स्राव था।

दुर्भाग्य ने अभी तक डाक्टर फ़ूजी का पीछा नहीं छोड़ा था। फुकावा में श्री ओकुमा के ग्रीष्म-भवन में विश्राम करके उन्हें अपने जख्म कुछ ठीक होते नजर आये थे कि तभी सितम्बर के प्रारम्भ में तेज पानी बरसना प्रारम्भ हुआ। नदियों में बाढ़ आ गई। १७ सितम्बर को तेज वर्षा के साथ भयंकर तूफान आया। नदियों का पानी किनारों को तोड़कर बहने लगा। डाक्टर फ़ूजी सचेत होकर पहाड़ पर एक किसान के घर चले गए। बाढ़ अपने साथ बम काण्ड स्थल का सब कुछ बहा ले गयी। अवशिष्ट पुल और मकानों के हिस्से सभी को नदी बहा ले गई। हिरोशिमा से दस मील पश्चिम में एक ओनो आर्मी अस्पताल था। वहां क्योटो इम्पीरियल यूनिवर्सिटी के विशेषज्ञों का एक दल इस विचित्र रोग की जांच कर रहा था। अचानक ही वह सुन्दर पहाड़ फिसल कर इनलैंड-सी में गिरा। इससे अस्पताल के अधिकतर विशेषज्ञ और उनके रहस्यमय रोगी सब डूब गये। तूफान के बाद डाक्टर फ़ूजी और श्री ओकुमा जब नीचे गए तो उनका घर पूर्ण रूप से बह चुका था।

बम काण्ड-स्थल से काफी दूर भी जब एक महीने बाद लोग अचानक ही बीमार होने लगे तो यह अफवाह फैल गई कि हिरोशिमा पर फेंके गये बम के मृत्युकारक विष का असर सात बरस तक रहेगा और इतने समय तक हिरोशिमा नहीं जाया जा सकता। इस खबर से काबे में स्थित गंजो श्रीमती नकामुरा बहुत निराश हो गईं। क्योंकि उनकी जीविका का एकमात्र साधन सनकोकु मशीन वहीं घर के सामने सीमेंट के बने छोटे से गड्ढे में पड़ी थी कैसे भी उसे नहीं निकाला सकेगा। जीवन निर्वाह की चिन्ता से दुखित शांत और तटस्थ प्रकृति की नकामुरा में अमरीका के प्रति तीव्र रोष और घृणा की भावना भर गई।

जापानी डाक्टर अणु की विखण्डनीय शक्ति के बारे में काफी जानते थे। उनमें से एक के पास साइक्लोट्रोन भी था पर वे हिरोशिमा के ऊपर फैले रेडियेशन के बारे में चिंतित हो गए और अगस्त के मध्य में, जब कि अभी कुछ दिन पूर्व ही राष्ट्रपति ट्रूमैन ने बम के बारे में बताया था, वे शहर में जांच के लिये गए। सबसे पहले उन्होंने गोकुकु खण्डहर से अपना काम शुरू किया जो चुगोकु क्षेत्रीय सेना मुख्यालय के परेड ग्राउंड के बाहर था। वहां से उन्होंने दक्षिण और उत्तर की ओर लारित्सन इलेक्ट्रोस्कोप के सहारे जांच की जो 'बैटा' और 'गामा' किरणों को पकड़ सकते थे।

इससे पता चला कि टोरी के पास रेडियो एक्टिविटी की तीव्रता उस स्थान की जमीन के साधारण अल्ट्रा शार्ट के

प्रवाह से ४.२ गुना अधिक थी। वैज्ञानिकों ने यह चीज पाई कि बम के प्रकाश से कंकरीट का रंग हल्का लाल हो गया था। ग्रेनाइट की सतह छोल दी थी और कई प्रकार की इमारती चीजों पर लाल-भूरी खरोंचें हो गई थीं। इसके अतिरिक्त कई स्थानों पर परछाइयों के निशान तक रह गए थे। उदाहरणार्थ उन्होंने चैम्बर आफ कामर्स की छत पर उसकी चौकोर मीनार को स्थायी छाया पाई जो आनुमानिक केन्द्र से लगभग २२० गज दूर था। कई परछाइयों के चिन्ह हियोथेक बैंक पर थे जो २०५० गज दूर था। दूसरी एक छाया चुगोकु इलेक्ट्रिक कम्पनी की मीनार पर एक गैस पम्प के हैंडिल की थी जो ८०० गज दूर थी। और कई बिम्ब गोकोकु खण्डहर के गुम्बदों के पत्थर पर थे जो ३८५ गज दूर था।

इन बिम्बों के परीक्षण के पश्चात् विशेषज्ञ इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि विस्फोट का केन्द्र टोरी से १५० गज दक्षिण में और मलवे के उस ढेर से, जो कभी शीमा अस्पताल था, कुछ गज दक्षिण-पूर्व में था।

कुछ मानव-पिंजर भी पाए गए। इनमें एक पेन्टर सीढ़ी पर चढ़ा हुआ था, जिस पत्थर पर काम कर रहा था उसी पर स्मारक की भांति अंकित हो गया था। एक दूसरी जगह साइंस और इन्डस्ट्री म्यूजियम के पास एक पुल पर, एक घुड़सवार की इतनी साफ प्रतिच्छया दिखाई देती थी कि वह घोड़े को चाबुक मार रहा है। वास्तविक केन्द्र से उत्तर

और दक्षिण की ओर चलते हुए वैज्ञानिकों ने इस बार सामान्य प्रवाह से रेडियेशन ३.६ गुना पाया । मनुष्य शरीर पर भीषण रूप से प्रभावी होने के लिए साधारण प्रवाह से एक हजार गुना रेडिएशन की आवश्यकता होती है अतः वैज्ञानिकों ने घोषणा की कि लोग अब बगैर किसी चिन्ता के हिरोशिमा में आ सकते हैं ।

श्रीमती नकामुरा ने यह घोषणा सुनकर सन्तोष की सांस ली । उनके बाल भी उगने शुरू हो गए थे और अमरीका के प्रति उनकी घृणा भी कम हो गई थी । उन्होंने अपने देवर को शहर से मशीन लाने को भेजा । परन्तु तब तक पानी में पड़ी रहकर मशीन जंग से बिल्कुल बेकार हो चुकी थी ।

× ×

सितम्बर के प्रथम सप्ताह के अंत में फादर क्लीनसोर्गे नोविशियेट में ही थे और उनको १०२.२ डिग्री बुखार था । चूंकि उनकी दशा उत्तरोत्तर बिगड़ती ही जा रही थी इसलिए उनके साथियों ने उन्हें टोकियो के इन्टरनेशनल कैथोलिक अस्पताल में भेजने का निश्चय किया । फादर सीसलिक और रैक्टर उन्हें कोबे तक ले गए और वहां से बाकी रास्ते एक दूसरा आदमी उन्हें ले गया । कोबे के डाक्टर ने इण्टरनेशनल अस्पताल की मदर को एक पत्र भी दिया जिसमें लिखा था, "रक्त देने के पूर्व कृपया दो बार विचार करलें क्योंकि एटम बम के शिकार रोगियों के बारे में हम यह निश्चित नहीं कर पाए हैं कि एक बार सुई चुभोने के बाद उनका रक्त बहना बन्द हो जायगा ।"

जब फादर क्लीनसोर्ग अस्पताल पहुँचे तब वह असाधारण रूप से कमजोर हो चुके थे। उन्होंने वहां बताया कि बम के कारण उनका हाजमा खराब हो गया था और पेट में भी दर्द हो गया था। उनके श्वेत रक्तकणों का तापमान तीन हजार था जब कि सामान्यतया पांच से सात हजार होना चाहिए। वह खतरनाक रूप से रक्तहीनता के शिकार थे और ताप १०४ डिग्री था। एक डाक्टर, जिसे इस विचित्र व्याधि के बारे में पता नहीं था, उनको देखने आया। फादर क्लीनसोर्ग उन बहुत सारे रोगियों में से थे जो टोकियो आये थे। रोगियों को उस डाक्टर का चेहरा देखकर कुछ उम्मीद बंधती थी। फादर क्लीनसोर्ग को देखकर उसने कहा, "तुम दो ही हफ्तों के अन्दर यहां से छुट्टी पा जाओगे।" पर दरवाजे के बाहर जाते ही उसने मदर सुपीरियर से कहा, "वह मर जाएगा। आप देखियेगा कि बम के ये सारे रोगी मर जाएँगे। कुछ हफ्तों तक तो ये चलेंगे, फिर मर जाएँगे।"

डाक्टर ने फादर क्लीनसोर्ग को सुरेलीमेंटेशन देना शुरू किया। हर तीन घण्टे बाद उन्हें अण्डे और मांस का शोरबा दिया जाता और जितना सम्भव होता, चीनी खिलाते। उन्होंने इनको विटामिन, लौह और हाजमे के लिये आर्सेनिक का घोल दिया। इसका असर यह हुआ कि फादर क्लीनसोर्ग ने डाक्टर की दोनों भविष्य वाणियों को गलत सिद्ध कर दिया—न तो वह मरे और न ही पन्द्रह दिन में उठकर खड़े हो गये। इसके बावजूद कि कोबे के डाक्टर के संदेशानुसार

इनको रक्त न दिया गया, जो सर्वाधिक लाभदायक सिद्ध होता, इनका बुखार और पाचन की शिकायत जल्दी दूर हो गयी। इनका चाप बढ़ गया और अक्तूबर के प्रारम्भ में ३६०० तक गिर कर दस दिन के अन्दर ८८०० तक पहुँच गया पर अन्त में ५८०० पर स्थिर हो गया। पर उनके अजीब घावों से सब चक्कर में थे। कुछ दिनों में वे भर जाते पर जरा-सी भी हरकत होने पर पुनः खुल जाते।

अपने को अच्छा महसूस करके फादर क्लीनसोर्ग को बेहद प्रसन्नता हुई। टोकियो में वह एक विचित्र रोगी थे। दर्जनों अमेरिकन डाक्टरों ने इनकी जांच करी। एक अखबार ने तो इनका इंटरव्यू छापा। एक बार एक डाक्टर तो इनको देखकर बोला, "ये एटम बम के मनुष्य चक्कर में डालने वाले केस हैं।"

इधर श्रीमती नकामुरा मयेको के साथ कमरे में बीमार पड़ी रहती थीं। गरीबी के कारण वह किसी डाक्टर को नहीं दिखा सकी थीं इसलिये ठीक-ठीक पता नहीं चल सका कि आखिरकार यह क्या चीज थी। बगैर किसी इलाज के परन्तु लम्बे आराम से ही अचानक वह धीरे-धीरे स्वस्थ होने लगीं। मयेको के बाल भी झड़ गये थे। इसके हाथ पर एक छोटे-से जलने के घाव को भरने में महीनों लग गये। लड़का तोशियो और बड़ी लड़की याएको स्वस्थ दिखने पर भी गंज रोग और सिर दर्द से पीड़ित रहते थे। तोशियो अब भी सपनों में अक्सर अपने आदर्श वीर १९ वर्षीय हिदेयो ओसाकी को देखा करता था, जो बम से मारा गया था।

श्री टानीमोटो १०४ डिग्री बुखार में भी अपने चर्च के मरने वाले लोगों की क्रिया-कर्म में लगे रहे और बुखार का कारण अधिक काम करने की थकान को माना, पर जब कुछ दिनों तक बुखार ठीक न हुआ तो इन्होंने डाक्टर को यूशिदा में बुलाया। लेकिन व्यस्त डाक्टर ने एक नर्स को भेज दिया। नर्स ने इनमें हल्के रेडियेशन के लक्षणों को पहचान कर उन्हें समय-समय पर विटामिन 'बी' के इंजैक्शन देती रही। टानीमोटो के एक जापानी बौद्ध भिक्षु मित्र ने इनको पुराना जापानी नुस्खा बताया, जिसमें एक विशेष जड़ी को मोड़कर उसे कलाई पर बांधकर जलाते थे। इस प्रयोग से हर बार इनका तापमान अस्थायी रूप से नीचे गिरा। नर्स ने इनसे खूब खाने को कहा था, इसलिय इनकी सास बीस मील दूर त्सुजु से जब-जब इन्हें देखने आया करती थीं तो इनके लिये ताजी मछलियां और सब्जी ले आया करती थीं। वह महीने भर तक बिस्तर में रहे, फिर दस घण्टे की रेलयात्रा करके शिकाकु में अपने पिता के घर चले गये। वहां वह महीने भर और काम करते रहे।

डाक्टरों ने विलक्षण के रोग की एक थ्योरी बना ली। इसकी पहली स्थिति तो रोग के प्रथम दौर में अज्ञानता में समाप्त हो गयी। इसके बाद बैटा व गामा किरणों का प्रभाव पड़ा। जिस स्थान पर बम गिरा था, वहां से आधा-आधा मील तक ९५ प्रतिशत आबादी मर गई थी और हजारों लोग इससे जरा दूर तक मरे। डाक्टरों का निष्कर्ष था कि लोग जलन और घावों से अधिक रेडियेशन रम जाने से मृत्यु

को प्राप्त हुए। किरणों ने रोम छिद्रों को सरलता से ध्वस्त कर दिया। बचे हुए बीमार अधिकांश जी मिचलाने, सिर-दर्द, शरीर दर्द, डायरिया और लम्बे बुखार से पीड़ित रहे। लेकिन इसका कारण स्नायु-आघात अथवा क्या था यह तय न हुआ। दूसरी स्थिति बम गिरने के १०, १५ दिन बाद बाल झड़ने से हुई। डायरिया और बुखार इसके बाद आये। बुखार १०६ डिग्री तक गया। पच्चीसवें से तीसवें दिन के बाद खून में गड़बड़ शुरू हुई। मसूड़ों से खून बहने लगा, खाल पर दाग उग आये और कफ आने लगा। रक्त के श्वेत कोष्ठकों का रक्त चाप घटने से रोगियों की शक्ति क्षीण हो गई और इनके घाव असाधारण मन्द गति से भरे। गले और मुँह सूज गये। निदान में दो मुख्य लक्षण थे, बुखार और रक्त के श्वेत-कणों का रक्तचाप गिरना। निरन्तर तेज बुखार में रोगी कम बचता था। अक्सर रोगियों का रक्त-चाप चार हजार से नीचे एक हजार तक गिरता जिसमें रोगी प्रायः मर जाता था।

कभी-कभी श्वेत कणों का रक्तचाप सामान्य स्तर से ऊपर चला जाता। इस स्थिति में बहुत सारे संक्रामक रोग हो जाते। जैसे छाती के गहरे घावों के कारण लोग मर गये। कइयों के जले घाव गुलाबी और पिघले रबड़ जैसे लस लसे हो गये। बीमारी की अवधि, रोगी की सामर्थ्य और उस पर रेडियेशन का कितना असर हुआ, इस पर निर्भर करती थी। कई रोगी तो कुछ ही सप्ताहों में ठीक हो गये जबकि दूसरे महीनों पड़े रहे और अधिकांश मर गए।

औषधि और औजारों की कमी भी एक मुख्य कारण थी। लेकिन जापान के आत्म समर्पण के बाद मित्र राष्ट्रीय डाक्टर अपने साथ पेनिसिलिन और दूसरी दवायें लाए। उनका निदान था, गामा किरणों ने लोगों की हड्डियों के फासफोरस को रेडियो एक्टिव कर दिया। जिसका प्रभाव रक्त निर्माण-स्थल पर पड़ा और वह बेकाम हो गया। जिनकी खाल जली थी उनको रेडियेशन की बीमारी से बचा लिया गया। बम गिरने के बाद कई घण्टों या कई दिनों तक पड़े रहने वाले लोग प्रायः मर गये। भूरे बाल बहुत कम गिरे।

बाढ़ आने के दस दिन बाद तक डाक्टर फूजी पहाड़ पर किसान के घर में ही रहे। वहीं से इन्होंने हिरोशिमा के एक ऊपनगर कैटेची में एक खाली पड़े प्राइवेट क्लिनिक को खरीद लिया और वहां चले गये। वहां इन्होंने बाहर अपने विजेताओं के सम्मान में एक तख्ती लटका दी जिस पर अंग्रेजी में लिखा था—"एम. फूजी एम. डी. मेडिकल एन्ड वैनेरियल।" उनके जख्म ठीक हो गये थे, जल्दी ही इनका कारोबार चमक उठा। शाम को विजेता सेना के लोगों के साथ शराब पीते और अंग्रेजी बोलने का अभ्यास करते।

१९ दिसम्बर को फादर क्लानसोर्ग टोकियो अस्पताल से मुक्त होकर जा रहे थे तो रेल में डाक्टर फूजी से इनकी भेंट हुई। बम काण्ड के बाद इन लोगों की यह पहली मुलाकात थी। डाक्टर फूजी अपने पिता की बरसी पर जा रहे

थं । दोनों ने अपने अनुभव सुनाये, फादर ने कहा, "डाक्टरों ने मुझे आत्म विश्वासी व सावधान रहने के साथ दोपहर में रोज दो घण्टे की नींद लेने को कहा है।"

"आजकल व्यस्त जीवन के हिरोशिमा में सावधान रहना कठिन बात है।" डाक्टर फूजी बोले।

यद्यपि डाक्टर फूजी ने फादर क्लोनसोर्ग को अपनी नींद लेने को कहा था पर वह इसमें नियमितता नहीं रख सके। इन्हें चर्च के कामों में लगा रहना पड़ता था और वह दिनों दिन थकान महसूस करते जा रहे थे। जून में इन्होंने एक लेख पढ़ा जिसमें हिरोशिमा काण्ड के बचे लोगों को अधिक मेहनत न करने की सलाह दी गई थी। जुलाई में वह बिल्कुल निढाल हो गये और अगस्त में जब बम गिरने की प्रथम बरसी मनाई जा रही थी वह फिर से टोकियो के कैथोलिक इन्टरनेशनल अस्पताल में चले गये जहां वह एक सप्ताह तक आराम करते रहे।

× × ×

११ सप्ताह पश्चात् २३ अक्तूबर को डाक्टर ससकी ने कुमारी ससकी के पैर में से मवाद निकालने के लिए छेद किया। उसमें से इतनी पीप बही कि डाक्टर ससकी को सुबह शाम पट्टी करनी पड़ी। असह्य पीड़ा की शिकायत के कारण एक सप्ताह बाद उन्होंने दूसरा छेद किया। उसे असफल देख ९ सितम्बर को तीसरा छेद किया और २६ को उसे और चौड़ा किया। कुमारी ससकी की कमजोरी बढ़

रही थी और दिल डूब रहा था। उनका पैर इतना सूज गया था कि डाक्टर हड्डी जोड़ने का साहस ही नहीं कर सके थे। नवम्बर में एक एक्सरे से पता चला कि यद्यपि हड्डियां जुड़ रही थीं पर उन्होंने देखा कि बायां पैर दायें पैर से लगभग तीन इंच छोटा हो गया था और भीतर को मुड़ रहा था।

फरवरी १९४६ में कुमारी ससकी के एक मित्र ने फादर क्लीनसोर्ग को उन्हें अस्पताल में देखने को बुलाया। कुमारी ससकी बहुत निराश हो गई थीं और इनको जीने की इच्छा शेष नहीं रह गई थीं। फादर क्लीनसोर्ग इनको कई बार देखने गये। फादर क्लीनसोर्ग ने सान्त्वना देते हुये कहा था, "मनुष्य उस स्थिति में नहीं है जिसके लिये भगवान् ने उसे निश्चित किया था। अपने पापों के कारण वह नीचे गिर चुका है।" इसके बाद वह इस सबका कारण समझाते थे।

भले ही कुमारी ससकी को फादर क्लीनसोर्ग के उपदेश पूर्ण सत्य न लगे हों, पर उनमें फिर ताकत आने लगी। १५ अगस्त को इनका ताप और श्वेत रक्तकण चाप सामान्य था और घाव का मवाद साफ होना शुरू हो गया था। २० तारीख को पस लगभग समाप्त हो चुकी थी और पहली बार वह बैसाखी के सहारे चलीं। पांच दिन बाद घाव भरना शुरू हो गया और महीने के आखिरी दिन उन्हें अस्पताल से मुक्त कर दिया गया। ग्रीष्म के प्रारम्भ में इन्होंने कैथोलिक धर्म स्वीकार किया। इतने समय में बहुत सारे उतार-चढ़ाव आये। वह बहुत दुखी थीं।

श्रीमती नकामुरा ने हिरोशिमा में एक बढ़ई से पचास येन या ३.३३ डालर प्रति माह पर एक झोंपड़ी बौंड सार्टिफिकेट का रुपया मिल जाने पर किराये पर ले ली। झोंपड़ी गन्दी और अंधेरी होने पर भी इनको इस बात का सन्तोष था कि वह हिरोशिमा में हैं और किसी के सहारे पर नहीं हैं। झोंपड़ी के आसपास कुछ सफाई करके सब्जी का छोटा-सा बाग बना लिया। मयेको को किंडरगार्टन और बाकी दोनों बच्चों को स्कूल भेज दिया, जो मैदान में लगा करता था। चूँकि कीमतें ऊँची थीं इसलिये ग्रीष्म के मध्य तक इनका सब खर्च हो गया। इसके बाद कीमती वस्त्र बेचने से प्राप्त सौ येन भी जल्दी समाप्त हो गये। जून में इस विषय में सलाह लेने वह फादर क्लीनसोर्ग के पास गईं। अगस्त में भी वह फादर क्लीनसोर्ग के सुझावों पर सोच रही थीं। उनमें एक यह था कि वह मित्र-राष्ट्रीय सेना के लिये घरेलू काम-काज करें या अपने रिश्तेदारों से ५०० येन या लगभग ३० डालर उधार लेकर अपनी मशीन ठीक करायें और फिर कपड़े सीने का काम शुरू कर दें।

श्री टानीमोटो ने शिकोकु से लौटकर अपने गिरे मकान पर एक टैंट लगा लिया। अब वह किसी भी प्रकार चर्च को खड़ा कर देना चाहते थे। उनके प्रयत्न आखिर में सफल हुए और पहले जैसी एक तिमंजिला इमारत बनाने का ठेका दे दिया गया।

मित्रराष्ट्रीय सरकार के निर्देश से शहर के सिटी हाल

में म्युनिसिपल सरकार ने काम शुरू कर दिया। जो लोग ठीक हो रहे थे, वहां आ रहे थे, उन सबको मिलाकर १ नवम्बर को शहर की कुल जनसंख्या १३७००० थी जो युद्ध के समय से एक तिहाई थी। सरकार ने विभिन्न योजनाएँ ले ली थीं और नगर का पुनर्निर्माण प्रारम्भ हो चुका था। सरकार ने बहुत सारे लोगों को मलवा साफ करने और उनमें से मतलब की चीजें निकालने के काम पर लगा दिया। कई लोग जो लौट आये थे उन्होंने अपनी पुरानी जगहों पर झोंपड़ियां इत्यादि बना ली थीं। इसके अतिरिक्त सरकार ने भी एक परिवार वाली ४०० बारकें बनवाईं। धीरे-धीरे बिजली और टेलीफोन लगने शुरू हो गये। एक योजना सम्मेलन में शहर का नया नक्शा तै किया गया।

सबके बाद भी साईंस व इण्डस्ट्री की इमारत को इस भयंकर विनाश के स्मृति चिन्ह के रूप में वैसा का वैसा सुरक्षित रखा गया। गणकों ने हिसाब लगाकर बतलाया कि विस्फोट के कारण ७८,१५० आदमी मरे, १३,९८३ गायब थे और ३७,४२५ घायल हुए। यद्यपि किसी ने इसके बारे में पुष्टि न की पर अमेरिकनों ने इसे ही अधिकृत संख्या के रूप में स्वीकार कर लिया। ज्यों-ज्यों मलवा साफ होता जाता था, लाशों पर लाशें निकलती जाती थीं और जिस समय कोइ में जैस्पोजी मन्दिर में शव भस्म के पात्र मिले तो गणकों ने भी कहना शुरू किया कि कम से कम एक लाख व्यक्ति मारे गये हैं। अनुमान लगाया गया कि २५ प्रतिशत बम द्वारा जलने से मरे, ५० प्रतिशत दूसरे जख्मों

से मरे और २५ प्रतिशत रेडियेशन के कारण। शहर के ६० हजार मकानों में से ६२ हजार पूर्ण ध्वस्त हो गये थे और ६ हजार को इतनी क्षति पहुँची थी कि उनकी मरम्मत होना असम्भव था। शहर के मध्य में केवल ५ इमारतें ही ऐसी थीं जिन्हें मरम्मत विशेष किये बगैर काम में लाया जा सकता था। इसमें जापानी निर्माण का दोष नहीं था क्योंकि १६२६ के बाद यह नियम बना दिया गया था कि हरेक इमारत में कम से कम सत्तर पौंड वजन एक वर्गफुट में उठाने की सामर्थ्य होनी चाहिये जबकि अमेरिकन लोग साधारणतया एक वर्गफुट के लिये ४० पौंड रखते थे।

माइका जो कि साधारणतया ६०० डिग्री सेंटीग्रेड गर्मी पर पिघलता है ३८५ फीट तक भस्म हो गया था। जो विशेष छतें १३०० सेंटीग्रेड तक जलतीं वे केंद्र से ६०० फीट तक पिघल गई थीं। इसमे यह अनुमान लगाया गया कि बम फटने के स्थल पर कम से कम ६००० सेंटीग्रेड गर्मी थी। उन्होंने विस्फोट स्थल से ३३ हजार गज की दूरी तक छतों और ड्रेन पाइपों का निरीक्षण किया और इससे बहुत सारी बातों का पता चला। जनरल मैकार्थर ने जापानी विज्ञान प्रकाशनों पर इस बम के बारे में कुछ भी प्रकाशित करने पर रोक लगा दी लेकिन शीघ्र ही जापानी डाक्टरों, वैज्ञानिकों, पत्रकारों और प्रोफेसरों व सैन्याधिकारियों को इस बारे में पता चल गया। अमेरिकनों के जानने के पहले ही जापानी यह अनुमान लगा चुके थे कि हिरोशिमा में यूरे-नियम का बम फेंका गया था जबकि उससे भी शक्तिशाली

प्लेटिनम का बम नागासाकी पर फेंका गया। वे यह भी जानते थे कि इस शक्ति को और बढ़ाया भी जा सकता है। न केवल इतना बल्कि यह भी कि बम कितनी ऊँचाई पर फटा और उसमें कितने यूरेनियम का प्रयोग किया गया। हिरोशिमा पर गिरे बम के अनुसार उन्होंने इस बात तक का अनुमान लगा लिया था कि उसके रेडियेशन से मानव को बचने के लिए कम से कम पचास इन्च मोटी कंकरीट की दीवार चाहिये।

× × ×

रैड क्रास अस्पताल में पूर्ण व्यवस्था होने में छः मास लग गये। जब तक बिजली नहीं आई तब तक जापानी सेना के एक जैनेरेटर से काम चलाया गया। अस्पताल का बहुत सारा सामान दूसरे शहरों से दान के रूप में आ गया। कुछ ही दिनों में अस्पताल की इमारत भी शानदार ढंग से बना दी गई। अस्पताल के सारे स्टाफ में डाक्टर ससकी ही केवल एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जो बम गिरने के बाद चार महीने तक मुश्किल से अस्पताल के बाहर गये। फिर धीरे-धीरे उन्होंने अपनी ओर भी ध्यान देना आरम्भ किया और मार्च में शादी कर ली। यद्यपि उन्होंने अपने खोये वजन में से कुछ प्राप्त कर लिया था, पर उनकी भूख वैसी ही थी जसी बम गिरने के पहले थी। इस पर वह कहा करते, "आखिर मुझे भी तो मानना पड़ता है कि सारा समाज थक गया है!"

× ×

बम गिरने के वर्ष भर बाद कुमारी ससकी लंगड़ी हो चुकी थीं, श्रीमती नकामुरा निराश्रिता हो चुकी थीं; फादर क्लीनसोर्ग फिर वापस अस्पताल में थे; डाक्टर ससकी में इतनी शक्ति नहीं थी कि वह उतना काम कर सकें जितना उन्होंने एक समय किया; डाक्टर फूजी का तीस कमरों वाला अस्पताल ढेर हो चुका था और इसके दुबारा बनने की आशा नहीं थी; टानीमोटो का चर्च और उसकी विशिष्ट विशेषताएँ समाप्त हो चुकी थीं। यह छः व्यक्ति हिरोशिमा के सर्वाधिक भाग्यशाली व्यक्तियों में से थे और इनका जीवन पहले जैसा कभी नहीं हो सकता था। यद्यपि एटम बम और इसके अनुभवों के बारे में वे एकमत नहीं थे लेकिन एक चीज जिसे सबने अनुभव किया वह थी एक विलक्षण प्रकार की गर्वित भावना। उन्हें एक प्रकार का गर्व था कि इतने भयंकर विनाश में बचने वाले दृढ़तापूर्वक खड़े रहे। बरसी के कुछ ही दिन पूर्व टानीमोटो ने अपने एक अमेरिकन मित्र को लिखा, "उस दिन रात का दृश्य कितना हृदय-विदारक था। मध्यरात्रि में मैं नदी के किनारे पर उतरा। मैदान में इतने घायल पड़े थे कि मुझे लम्बे-लम्बे कदम रखने पड़ते थे।" फिर मैं एक पात्र में पानी लाया और एक कप में पानी पिलाया। वे धीरे-से अपने शरीर का ऊपरी हिस्सा उठाते, प्याला लेकर जरा सर को झुकाते और पानी पीकर, बाकी पानी फेंक चुपचाप प्याला वापस कर देते। उस समय इनके मुखों पर हार्दिक कृतज्ञता के भाव होते। एक ने पानी पीकर

कहा, "मैं अपनी बहन की सहायता नहीं कर सका जो मकान में दब गई थी, क्योंकि मेरी मां की बाईं आंख के नीचे गहरा घाव लगा था और मैं उनकी मदद कर रहा था। हम अभी मुश्किल से ही मकान से निकले थे कि उसमें आग लग गई। आप देखिये कि मेरा घर बरबाद हो गया, परिवार खत्म हो गया और मैं भी कितनी बुरी तरह से घायल हो गया हूँ। लेकिन मैंने अब अपना सारा दिमाग इस ओर लगा दिया है कि देश की रक्षा के लिये मुझे युद्ध को बन्द करने के लिए क्या करना है।" इस प्रकार वे मुझे कहते थे। न केवल आदमी ही औरतें और बच्चे तक यही कहते थे। बहुत थका होने के कारण मैं इनके बीच में ही लेट गया पर बिल्कुल सो न सका। दूसरे दिन मैंने बहुत सारे आदमियों और औरतों को मरा पाया जिनको मैंने रात को पानी पिलाया था। लेकिन सबसे अधिक आश्चर्य मुझे इस बात पर हुआ कि इतनी घोर पीड़ा होने पर भी मैंने किसी को चीखते-चिल्लाते नहीं सुना। वे सब निस्तब्धता में मर गये, अपने होठों को भींचे बिना किसी असन्तोष या ईर्ष्या के वे मर गये वे सब देश के लिये मर गये।

"हिरोशिमा यूनिवर्सिटी के साहित्य व विज्ञान के प्रोफेसर डाक्टर वाई. हैरेवा बम विस्फोट के समय अपने लड़के के साथ, जो कि टोकियो यूनिवर्सिटी का छात्र था, अपने मकान के नीचे दब गये। उन पर इतना दबाव था कि वे इन्च भर भी इधर-उधर न हो सकते थे। उनके लड़के ने

कहा, "पिता जी हम इसके सिवा कुछ नहीं कर सकते कि हम सोचें कि हम देश के लिये मर रहे हैं इसलिये हमें अपने सम्राट् को बनजाई देना चाहिये। पिता अपने पुत्र के पीछे दोहराते गये, "टैन्नो ही का बनजाई, बनजाई-बनजाई।" डाक्टर हैरेबा ने बाद में इसकी अनुभूति को बताते हुए बतलाया कि जब मैंने टैन्नो के लिय बनजाई को दोहराया तो मुझे यह कहते हुए आश्चर्य होता है कि मैंने हृदय में शांति और प्रकाश का अनुभव किया। इसके बाद लड़का किसी प्रकार निकल आया और इसने पिता को भी निकाल लिया। इस प्रकार दोनों बच गये। उस समय का स्मरण करते हुए डाक्टर हैरेबा कहते हैं, "यह कितना बड़ा भाग्य है कि हम जापानी हैं। यह पहली ही बार था कि जब मैंने अपने सम्राट के लिये प्रार्थना करने का निश्चय किया, उस समय जिस भावना की अनुभूति हुई वैसी कभी नहीं हुई।"

"मेरे एक मित्र की लड़की कयोको नो बोटुकी, जो हाई स्कूल में पढ़ती थी, अपनी सहेलियों के साथ बौद्ध मन्दिर की एक बड़ी दीवार के साथ बैठी थी। बम गिरने के साथ ही वह दीवार गिर पड़ी और सब लड़कियां उसमें दब गईं। थोड़ी ही देर बाद बाहर लगी आग का धुआं दरारों में से भीतर घुसने लगा और इनका दम घुटने लगा। तभी एक लड़की ने राष्ट्रगीत 'किमी या गो' गाना शुरू किया और वे सब राष्ट्रगीत गाते-गाते मर गईं। यह सूचना एक लड़की ने दी जो किसी प्रकार एक सांसर में से निकल आई थी। रेड-

खास अस्पताल में उसने बताया कि किस प्रकार उसकी सहेलियां राष्ट्रगीत गाते-गाते मर गईं। और सबकी उमर १२-१२ साल की थी।"

"हिरोशिमा के लोग एटम बम से वीरतापूर्वक मर गये, वे सोचते हैं कि यह सब सम्राट् के लिये है।"

बम के प्रयोग के बारे में हिरोशिमा के लोगों के विचार एक जैसे नहीं थे। शायद वे इतने भयभीत थे कि इस बारे में कुछ सोचना भी नहीं चाहते थे। श्रीमती नकामुरा से जब कोई इस बारे में पूछता तो वह बतलातीं, "वह एक माचिस की डिबिया के बराबर था। उसकी गर्मी सूर्य से छः हजार गुना अधिक थी। वह हवा में ही फट गया। उसमें रेडियम होता है। मैं नहीं जानती कि रेडियम किस प्रकार काम करता है, पर जब रेडियम साथ रखा जाए तो विस्फोट हो जाता है।" जब यह पूछा जाता कि उसके प्रयोग के बारे में उनके क्या विचार हैं, तब वह कहतीं, "वह युद्ध था और युद्ध में किसी भी चीज की सम्भावना होती है।" फिर वे कहतीं, "शिकोता गा नइ।" जिसका जापानी में अर्थ होता है, 'इस बारे में कुछ नहीं किया जा सकता।' फादर क्लीनसोर्ग भी यही कहा करते थे।

अभी तक हिरोशिमा के बहुत सारे लोगों में अमेरिकनों के प्रति घृणा भरी थी। डाक्टर ससकी तो कहा करते थे, "वे लोग युद्ध-बन्दियों पर टोकियो में मुकदमा चला रहे हैं। मेरा ख्याल है कि उन्हें उन लोगों पर मुकदमा चलाना

चाहिए जिन्होंने हमारे ऊपर बम फेंकने का निश्चय किया और उन सब को फांसी पर लटका देना चाहिये।"

फादर क्लीनसोर्ग के साथी एक जर्मन पादरी फादर सीम्स ने रोम के होली सी को लिखा, "हम में से कुछ का विचार है कि यह बम जहरीली गैस के समान था और सामान्य नागरिकों पर इसका प्रयोग नहीं होना चाहिये था। दूसरों का विचार है कि युद्ध के समय सैनिक-नागरिक में भेद नहीं रह जाता। यह बम और अधिक रक्तपात रोकने में निर्णायक सिद्ध हुआ। इससे जापान को आत्म-समर्पण करने की चेतावनी दी गई जिससे उसका सम्पूर्ण विनाश न हो जाय। यह एक मार्के की बात है कि जो सिद्धान्त रूप में पूर्ण युद्ध का समर्थन करता है, वह नागरिकों के विरुद्ध युद्ध की बात नहीं कर सकता। प्रश्न यह है कि क्या वर्तमान प्रकार का पूर्ण युद्ध न्यायोचित है जबकि उससे एक छोटासा कारण सिद्ध होता है। भले ही इसके परिणामस्वरूप कितनी ही भलाई हो पर इसकी नैतिक और भौतिक विभीषिकाओं की उपेक्षा नहीं की जा सकती है। हम जानना चाहते हैं कि हमारे सिद्धान्तवादी इसका स्पष्ट उत्तर कब देंगे?" इसके साथ ही बच्चों के रोमांचकारी वर्णन सुनाये।

श्रीमती नकामुरा का लड़का तोशियो, जो उस समय दस वर्ष का था, जल्दी ही अपने अनुभवों को जोर-शोर से सुनाया करता था। बम गिरने के दिन की बरसी के कुछ दिन पहले नोबोरी-चो में एक दिन मास्टर ने लड़कों से

अपनी देखी घटनाओं के अनुभव लिखने को कहा। तोशियो ने लिखा, "बम गिरने के एक दिन पहले मैं तैरने गया। सवेरे जब मैं खा रहा था, तभी मैंने एक जोर की चमक देखी। मैं अपनी बहन के सोने की जगह जाकर गिरा। जब हमें निकाल लिया गया तब मैं उतनी ही दूर तक देख सकता था जितनी दूर ट्राम है। मैंने और मेरी मां ने चीजों को बांधना शुरू किया। चारों तरफ पड़ोसी जले हुए और खून से रंगे हुए थे। हताया-सान ने मुझे अपने साथ भाग चलने को कहा। मैंने कहा कि मैं अभी मां का इन्तजार करूँगा। फिर हम पार्क में गये। फिर एक तूफान आया। रात को एक गैस की टंकी फट गई और मैंने उसकी रोशनी नदी में देखी। एक रात हम पार्क में रहे। दूसरे दिन मैं टिको पुल पर गया जहां मुझे मेरी लड़कियां दोस्त किकुकी और मुरा-कमी मिलीं। वे दोनों अपनी माताओं को ढूँढ़ रही थीं। किकुकी की मां तो घायल ही हुई थी पर अफसोस! मुरा-कमी की मां मर चुकी थी।"